

Peer reviewed Journal

Impact Factor: 7.265

ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred Journal

January 2022 Volume-13 Issue-2

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

*'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot
No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.)*



Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Journal of Research and Development

A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal

January-2022 Volume-13 Issue-2

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

EDITORIAL BOARD

<i>Nguyen Kim Anh</i> <i>[Hanoi] Virtnam</i>	<i>Prof. Andrew Cherepanow</i> <i>Detroit, Michigan [USA]</i>	<i>Prof. S. N. Bharambe</i> <i>Jalgaon[M.S]</i>
<i>Dr. R. K. Narkhede</i> <i>Nanded [M.S]</i>	<i>Prof. B. P. Mishra,</i> <i>Aizawal [Mizoram]</i>	<i>Prin. L. N. Varma</i> <i>Raipur [C. G.]</i>
<i>Dr. C. V. Rajeshwari</i> <i>Pottikona [AP]</i>	<i>Prof. R. J. Varma</i> <i>Bhavnagar [Guj]</i>	<i>Dr. D. D. Sharma</i> <i>Shimla [H.P.]</i>
<i>Dr. Abhinandan Nagraj</i> <i>Benglore[Karanataka]</i>	<i>Dr. Venu Trivedi</i> <i>Indore[M.P.]</i>	<i>Dr. Chitra Ramanan</i> <i>Navi ,Mumbai[M.S]</i>
<i>Dr. S. T. Bhukan</i> <i>Khiroda[M.S]</i>	<i>Prin. A. S. Kolhe Bhalod</i> <i>[M.S]</i>	<i>Prof.Kaveri Dabholkar</i> <i>Bilaspur [C.G]</i>

Published by- Chief Editor, Dr. R. V. Bhole, (Maharashtra)

The Editors shall not be responsible for originality and thought expressed in the papers. The author shall be solely held responsible for the originality and thoughts expressed in their papers.

© All rights reserved with the Editors

CONTENTS

Sr. No.	Paper Title	Page No.
1	'आना इस देश' : एक असफल प्रेम कथा डॉ. विश्वनाथ महादू देशमुख	1-5
2	मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित कक्षा ९ वीं की हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का विघार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर विश्लेषण अंजली सेन डॉ. शिवानी श्रीवास्तव	6-10
3	भारतीय समाज में प्रौढ महिलाओं की स्थिति नेहा वर्मा डॉ शिवानी श्रीवास्तव	11-14
4	सावित्रीबाई फुले : व्यक्ति आणि वाङ्मय प्रा. डॉ. वाल्मिक शंकर आढावे	15-19
5	सार्क देशांतर्गत सहकार्यासाठी सार्क उपग्रह प्रा. डॉ. प्रतिभा सदाशिव देसाई	20-24
6	महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण डॉ. गौरी सिंह परते	25-28
7	लोकसाहित्याचे अध्यापनातील महत्व प्रा.डॉ. संतोष सदाशिव देठे	29-32
8	साहित्यातून दिसणारे कृषी जीवन प्रा.डॉ. लक्ष्मण गित्ते	33-35
9	साहित्य समाज आणि दलित साहित्य प्रा.डॉ.अनिल बळीराम बांगर	36-38
10	ग्रामीण विकासात सिंचनाचे महत्व : एक अभ्यास प्रा.डॉ.डी.पी. जावळे	39-40
11	छत्रपती शिवाजी महाराजांचे जलव्यवस्थापन:एक अभ्यास प्रा. शिंदे आत्माराम हानवतराव	41-43
12	संपोषणीय कृषि: उद्देश्य, लाभ एवं सुझाव (गोरखपुर जिले के विशेष संन्दर्भ में) अमर नाथ सिंह डॉ कमलिनी श्रीवास्तव	44-45
13	गोंदिया जिल्ह्यातील व्यायसायिक संरचना २००१ ते २०११ डॉ.मनिषा कृ. देशपांडे	46-54
14	छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप डॉ. आर. एन. यादव डॉ. साधना सोम	55-60
15	दापोली तालुक्यातील आंबा प्रक्रिया उद्योगात काम करणा-या स्त्री मजुरांचा टिकात्मक अभ्यास डॉ दिलीप शंकरराव पाटील, अजय रामचंद्र लोखंडे	61-66

16	उमरगा तालुक्यातील लोकसंख्या वाढ एक भौगोलिक अभ्यास डॉ राठोड सुर्यकांत लालचंद	67-69
17	क्रिडा व्यवस्थापन व आयोजन डॉ.शुभांगी सुधाकरराव रोकडे	70-72
18	शेतकरी आंदोलनाची व्याप्ती व विपर्यास प्रा. डॉ. अस्मिता मिलीद प्रधान	73-76
19	कोव्हीड १९ महामारीचा उच्च शिक्षणांवर पडलेला प्रभाव डॉ प्रशांत म. पुराणिक	77-81
20	रेणु साहित्य और संस्कृति डॉ ० इन्दु कुमारी	82-85

‘आना इस देश’ : एक असफल प्रेम कथा

डॉ. विश्वनाथ महादू देशमुख

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, राजाराम महाविद्यालय, कोल्हापुर-416004

vishnudeshmukh456@gmail.co

प्रस्तावना : हिंदी साहित्य में पुरुष लेखक को ने जिस प्रकार अपना अस्तित्व निर्माण किया है | उसी प्रकार स्त्री लेखिकाओं ने भी अपना अस्तित्व निर्माण किया है। वर्तमान युग के महिला साहित्यकारों में कृष्णा अग्निहोत्री जी का नाम अग्रगण्य साहित्यकारों में आता है। उनका साहित्य नारी की अंतरात्मा के पटल- दर- पटल को खोलता है। प्रस्तुत उपन्यास ‘आना इस देश’ लघु उपन्यास है। उपन्यास में सांप्रदायिकता, आतंकवाद, भारत विभाजन की त्रासदी, मानवीय मूल्यों का विघटन आदि का वर्णन है। साथ ही सुरैय्या और अबीर की असफल प्रेम कथा भी दिखाई देती है। ‘आना इस देश’ उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन 2014 ई. में अमन प्रकाशन कानपुर से हुआ है। कृष्णा अग्निहोत्री जी के साहित्य में विद्रोही भाव दिखाई देता है। उसका प्रमुख कारण उनकी माताजी है। जो भारतीय रणसंग्राम की हिस्सा थी। कृष्णा जी ब्राह्मण परिवार से थी। उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. और ‘स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी’ विषय लेकर हिंदी में पीएच. डी की उपाधि प्राप्त की। कृष्णा जी के दो विवाह हुए, पर उनका वैवाहिक जीवन असफल रहा। कृष्णा जी को विविध पुरस्कारों से नवाजा गया है। कृष्णा जी अपने विचारों को स्पष्टता से प्रस्तुत करने वाली साहित्यकार है। अपने इस रवैए से कोई नाराज हो जाएगा इसकी परवाह नहीं करती। इसका सुंदर उदाहरण उनकी आत्मकथा है।

मूल शब्द : सुरैय्या, अबीर, प्रेम, तरुन्म, डॉ.गीत, अर्जुन, स्त्री आदि।

प्रविधियाँ : व्याख्यात्मक, सैद्धांतिक आदि।

भूमिका :

कृष्णा अग्निहोत्री जी हिंदी महिला साहित्यकारों में अपना एक अलग स्थान रखती है। उनके साहित्य की बात करेंगे तो उनमें ‘स्त्री मन की दास्तान’ के साथ मानवतावादी विचारों को केंद्र में रखकर लिखा है। उपन्यास के साथ कहानी, आत्मकथा, रिपोर्टाज, समीक्षा, बाल साहित्य आदि विधाओं में उनका विशेष योगदान रहा है। स्त्री अपने मन की इच्छाओं को समाज के कारण, पुरुष प्रधान संस्कृति तथा धर्म के कारण अपने दिल में ही दबा के

‘आना इस देश’ : एक असफल प्रेम कथा

प्रस्तुत उपन्यास फ्लैशबैक शैली में लिखा गया है। उपन्यास की नायिका सुरैय्या इंदौर के किसी क्लब में बैठी रेड - वाइन और कबाब का लुफ्त उठाते हुए “बात निकली तो बहुत दूर तलक

रखती है। इसका सशक्त उदाहरण ‘आना इस देश’ उपन्यास है। प्रस्तुत उपन्यास नायिका प्रधान है। उपन्यास की नायिका सुरैय्या है, जो पाकिस्तान की जानी-मानी गजल गायिका है। उसके पिता मेजर नदीम जो भारतीय फौज के महत्वपूर्ण दस्तावेज और खुफिया राज चुराकर पाकिस्तान भाग गए थे। सुरैय्या की दादा- दादी, नाना-नानी भारत से तालुकात रखते हैं, पर विभाजन के बाद उन्हें भी अपने दिल पर पत्थर रखकर नदीम के साथ पाकिस्तान जाकर बसना पड़ा।

जाएगी” यह जगजीत सिंह की दर्द और मिठास भरी आवाज में गजल सुनते-सुनते अपने बीते जीवन को याद कर रही है। धीरे-धीरे जीवन की यादें उसे उस जमाने में ले जाती है। यादें रो कने से कहां रुकती है। सुरैय्या की अम्मी तरुन्नाम अपने मायके रामपुर की

चर्चा बड़ी आत्मीयता के साथ करती थी। वह सुरैया से हमेशा कहती थी जब भी तुम भारत जाओगे तब अपने नाना-नानी से मिलने रामपुर जरूर जाना। अम्मी और दादी की बातों ने सुरैया के मन में भारत के प्रति एक अलग सा लगाव हुआ था। कराची में भारत से आए मेहमान महमूद से जब सुरैया की बातचीत होती है, तो उसे पता चलता है, कि भारतीय मुस्लिम मुसलमान खुशहाल जिंदगी जीते हैं। सुरैया का विवाह उससे दुगनी उम्र वाले व्यक्ति परवेज के साथ होता है। जिसकी पहली पत्नी की मृत्यु हो चुकी है। उसकी राक्षशी प्रवृत्ति के कारण यह विवाह असफल बनता है। सुरैया के अब्बाजान उसे दुबई भेजते हैं। वहीं पर भी उसके जीजा जी उस पर जान छिड़कते हैं। सुरैया से शादी की बात करते हैं। लेकिन सुरैया अपने बहन का घर उजाड़ना नहीं चाहती। वह डॉक्टर गीत के गेस्ट हाउस में रहती है। डॉक्टर गीत और उसके पति अर्जुन उसका घर के सदस्य की तरह खयाल रखते हैं। डॉक्टर गीत इंदौर शहर भारत की रहने वाली होने के कारण सुरैया का उनके प्रति अलग लगाव दिखाई देता है। सुरैया डॉक्टर गीत के साथ भारत आती है। डॉक्टर गीत को लेने एयरपोर्ट पर उसके भाई अवधेश और उनका अजीज दोस्त अबीर आते हैं। यहीं पर अबीर और सुरैया की पहली मुलाकात होती है। डॉ गीत ने अबीर पर सुरैया को जयपुर, रामपुर घुमाने की जिम्मेदारी सौंपी है। सुरैया की सुंदरता देखकर उसके प्रति अबीर आकर्षित होता है। अबीर सुरैया को लेकर उसके नाना-नानी के घर रामपुर चला जाता है। वहां उनका स्वागत गर्मजोशी के साथ किया जाता है। रामपुर में अबीर की मेहमान नवाजी बड़े जोर-शोर से होता है। सुरैया और अबीर अजनबी होकर भी अपने में एक बेहद अपनापन महसूस करते हैं। सुरैया एक नेक दिल और सहृदय व्यक्ति है। जिससे

अबीर उसकी ओर खींचता है। अभी अपनी मन में उठने वाली प्रेम भावना की लहरें सुरैया के सामने प्रस्तुत करना चाहता है। सुरैया की इच्छा अनुसार अजमेर के ख्वाजा की दरगाह पर चादर चढ़ाकर वह आगरा चले जाते हैं। आगरा का ताजमहल जो प्रेम की निशानी है उसकी सुंदरता को देखकर सुरैया कहती है- “हाय अल्ला यह हम जन्नत में कैसे आ पहुंचे”¹। बादशाह शाहजहाँ और मुमताज के प्रेम की निशानी देखकर सुरैया मन ही मन अपने नसीब को सती रही की उसे जीवन में सच्चा प्यार कभी नहीं मिला। अबीर सुरैया का हाथ अपने हाथ में ले अपने प्यार की दस्तक देने का प्रयास करता है। सुरैया अबीर के हाथ से अपना हाथ छुड़ाने का प्रयास नहीं करती उसे उसके हाथ में ही रहने देती है। ताजमहल देखते देखते अबीर और सुरैया के बीच की दूरियाँ कम हो जाती है। एक दूसरे के प्यार जज्बातों भावनाओं को वह दोनों समझ रहे थे। दोनों के बीच प्यार के बीज बोए गए। लेकिन दोनों जानते थे कि वह कभी एक नहीं हो सकते क्योंकि अबीर की शादी मनु के साथ तय हुई है और धर्म, फतवे, पंडित, मौलवी उन्हें एक होने नहीं देंगे। पर पंछी, नदियाँ, पवन के झोंके को कोई सरहद नहीं रोक सकती। उसी प्रकार प्रेम के लिए कोई सरहदें, सीमा, धर्म नहीं होता। प्रेम तो ईश्वर की देन है, जो रोकने से नहीं रुकता और चाहने से भी नहीं मिल सकता। सुरैया अबीर के साथ नर्मदा नदी, सतपुड़ा, विंध्याचल की पहाड़ियों का प्राकृतिक सौंदर्य देखते साथ ही अबीर की प्यार भरी बातें सुनते-सुनते घने जंगल से गुजरती है। पूरा माहौल उसके शरीर में एक

¹ ‘आना इस देश’, अग्निहोत्री कृष्णा,
(कानपुर, अमन प्रकाशन: प्रथम संस्करण सन 2014)
पृ- 35

ज्वाला सी निर्माण करता है। उसकी आँखें अबीर को मुख स्वीकृति भरा निमंत्रण देती है। प्रेम दबाने से नहीं दबाता। नर्मदा के किनारे रेस्ट हाउस में रेडवाइन पीने के बाद पूरा माहौल बदल जाता है। वे एक दूसरे में समा जाते हैं। दोनों को इस बात का कोई पछतावा या गम नहीं। सुरैया को यह एहसास बहुत ही खूबसूरत लगा। सुरैया कहती है-

“जो हुआ ओ कम नहीं
ना होता तो गम न था
किसी की जुस्तजू भी नहीं
जो मिला कम मिला,
पर एक आरजू पूरी हुई
भविष्य में क्या होगा पता नहीं
वर्तमान में जो है वही जिंदगी है”²

दोनों समझदार थे। उन्हें पता था, धर्म के ठेकेदार उन्हें एक होने नहीं देंगे। पागल प्रेमी की अपेक्षा दोनों एक दूसरे को समझ कर अपने प्यार की हिफाजत करना बेहतर समझते हैं। अबीर और सुरैया के बीच पनप रहे मीठी रिश्ते का अनुमान डॉक्टर गीत को हो जाता है। धार्मिकता, सांप्रदायिकता और भारत-पाकिस्तान के रिश्ते के कारण दोनों को एक होने नहीं देंगे। यह गीत जानती है। डॉक्टर गीत कहती है- “पाकिस्तानी और हिंदुस्तानी लड़के लड़कियां एक दूसरे से मोहब्बत करने लगे तो मजहब गायब हो जाएगा। क्योंकि मोहब्बत की नजर से देखो तो सब अच्छा लगता है”³ सुरैया को पता है उसे भारत में कोई सेटल नहीं होने देगा क्योंकि उसके अब्बा मेजर नदीम का

रिकॉर्ड उसके आडे आएगा। डॉक्टर गीता और अर्जुन सुरैया के साथ दुबई वापस जा रहे हैं। गीत सुरैया से कहती है कल हम वापस जा रहे हैं कुछ खरीदना चाहते हो तो अबीर के साथ बाजार जाओ। अबीर इसी मौके का इंतजार कर रहा था। वह सुरैया को सिमरेल के डाक बंगले में पर ले जाता है। वहाँ अबीर सुरैया को बड़े व्याकुलता से अपनी बाहों में जकड़ता है। दोनों एक दूसरे से बिछड़ने की कल्पना की विरह वेदना से व्याकुल हो जाते हैं। सुरैया के जाने से अबीर के जीवन में एक खालीपन सा आ जाता है। उसका पागल मन भटकने लगता है। वह अपनी विरह वेदना किसी को बता नहीं सकता था। दुबई के हालात अच्छे न होने के कारण सुरैया पाकिस्तान चली जाती है। अबीर अंसारी की मदद से कराची पहुंचता है। अबीर को पाकिस्तान में देखकर सुरैया हक्की-बक्की हो जाती है। सुरैया अबीर को मनु से शादी करने के लिए अपने प्यार से मुक्त करती है। अबीर को समझाते हुए सुरैया कहती है- “मैं भी अबीर हाड-मास से बनी एक आम औरत हूँ। जो अपना प्यार खोना नहीं चाहती। यदि मुझे नहीं मिले तो मैं लाश सी जाऊंगी। हमारे बीच की मोहब्बत व जज्बात कभी बदल नहीं सकते, मैंने तुम्हें पूरा पाया है और तुम मुझमें जिंदा रहोगे”⁴ पाकिस्तान में अम्मी बहुत बीमार है उसकी अंतिम इच्छा यही थी कि उसे भारत में दफना जाए। अबीर तरन्नुम को भारत आने में मदद करता है। अम्मी तरन्नुम के साथ सुरैया भी भारत आ जाती है। तरन्नुम का अंत काल हो जाता है और उसे रामपुर में दफन किया जाता है जो उसकी अंतिम इच्छा थी।

² वहीं; पृ. 41

³ ‘आना इस देश’, अग्निहोत्री कृष्णा,
(कानपुर, अमन प्रकाशन: प्रथम संस्करण सन 2014)
पृ 46

⁴ वहीं; पृ. 70-71

सुरैय्या भारत से कल फ्लाइट से पाकिस्तान जाने वाली है। पर दंगा-फसाद के कारण फ्लाइट रद्द हो जाती है। अगले चार दिनों तक कोई फ्लाइट नहीं है। अर्जुन इन चारदिनों में गोवा जाने का आयोजन करता है। अर्जुन, गीत, अबीर और सुरैया ट्रेन से गोवा चले जाते हैं। पर गीत दूसरे ही दिन इंदौर चलने को कहती है। सुरैया का वीजा खत्म हो चुका है। जिसके कारण सुरैया को जल्द से जल्द भारत छोड़ना पड़ेगा। फ्लाइट न होने के कारण सुरैया ट्रेन से पाकिस्तान जाने का सोचती है। अबीर का दोस्त अंकित सुरैया के साथ जोधपुर ट्रेन पकड़ने के लिए चलता है। सुरैया जोधपुर से ढाका और वहाँ से कराची का सफर करने वाली थी। पाकिस्तान गेस्ट हाउस में वह ट्रेन का इंतजार कर रही थी। बैठे-बैठे आँखें बंद करती तो उसके सामने अबीर की तस्वीर आ जाती थी। बंद आँखों से अपने प्यार की कहानी पढ़ रही थी। तभी सुरैया पर छः सात हाथ अचानक से हमला कर देते हैं। उसके सारे कपड़े तार-तार करते हैं। उसे गेस्ट हाउस से एक विरानी जगह ले जाते हैं। उस पर सामूहिक बलात्कार होता है। उसके शरीर के साथ-साथ उसकी आत्मा को भी घायल कर देते हैं। इस आघात से वह बेसुध हो जाती है। वह पागल हो जाती है। सुरैया कुशवाह पाकिस्तान नहीं पहुंचती तो अबीर बेचैन होता है। इसी बीच में अबीर और मनु की शादी हो जाती है। अबीर मनु को हनीमून के लिए जोधपुर ले जाता है और उसे होटल में छोड़कर अपने मित्र अंकित के साथ जोधपुर आकर पाकिस्तानी चेक पोस्ट पर सुरैया की फोटो दिखा कर उसकी पूछताछ करता है। पर सुरैया का कोई आता-पता नहीं चलता। वहाँ का एक सिपाही अबीर को कहता है एक पागल औरत हर रोज भारत आने की कोशिश करती है और कहती है क्या तुम मेरे अबीर को जानते हो? अबीर के मन में एक घबराहट

से महसूस होती है। तभी आठ-साढ़ेआठ बजे एक धुंधली सी औरत की आकृति आती है और कहने लगी मैं सुरैया क्या तुम मेरे अबीर को जानते हो? अबीर धुँदले-धुँदले प्रकाश में भी उस औरत यानी सुरैया को पहचान लेता है। सुरैया बेहोश हो जाती है। उसका एक हाथ भारत के सीमा पर तो दूसरा हाथ पाकिस्तान की सीमा पर था। अंकित और अबीर उसे अस्पताल ले जाते हैं। डॉक्टर उसे मृत घोषित करते हैं। अबीर और अंकित सुरैया को रीति-रिवाजों के अनुसार दफन करते हैं। हमेशा के लिए अलविदा करने वाले सुरैया को जब अबीर देखता है तो उसे महसूस होता है कि सुरैया कह रही है- “देखो मैं तुम्हारे दिल में तो हूँ ही पर सदा के लिए तुम्हारे साथ नहीं रह रही हूँ। पर अब तो हमें मिलने से कोई रोक नहीं सकता”⁵।

निष्कर्ष : ‘आना इस देश’ उपन्यास एक असफल प्रेम कहानी है। यह उपन्यास आकार की दृष्टि से लघु है, पर आशय की दृष्टि से विशाल है। अबीर और सुरैया की प्रेम कहानी का विस्तार करते समय लेखिका ने भारत-पाकिस्तान के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, संस्कृतिक परिस्थितियों पर नजर डाली है। साथ ही पाकिस्तान का आतंकवाद, धर्मांधता, पंडित, मौलवी के फतवे आदि बातों पर अपने विचार स्पष्टता से चित्रित किए हैं। ‘आना इस देश’ में सुरैया और अबीर के समर्पित प्रेम कहानी को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। इसका अंत बहुत ही करुण दिखाई देता है। दो धर्मों के लड़का - लड़की में कभी प्रेम नहीं हो सकता और वह लड़का - लड़की भारत-पाकिस्तान के हो तो यह असंभव है। क्या इस

⁵ वहीं; पृ. 91

संसार में या इस समाज में फैली नफरत का कोई इलाज नहीं है? यह धर्माधता हमारे समाज को दीमक की तरह खोकला कर रही है। आज

विश्व में शांति चाहते हो तो नफरत की बजाएं प्रेम के बीज बोना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. 'आना इस देश', अग्निहोत्री कृष्णा, (कानपुर, अमन प्रकाशन: प्रथम संस्करण सन 2014) पृ- 35, 41, 46, 70-71, 91

**मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित कक्षा ९ वीं की हिन्दी विषय की
पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर विश्लेषण
अंजली सेन^१ डॉ. शिवानी श्रीवास्तव^२**

^१शोधार्थी डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय

^२विभागाध्यक्ष शिक्षा अध्ययनशाला डॉ. ए. पी. जे अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय इन्दौर म.प्र.

सारांश –

प्रस्तुत अध्ययन सर्वेक्षण प्रकृति का है अध्ययन का उद्देश्य, हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ज्ञात करना है अध्ययन हेतु विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्य तकनीक द्वारा किया गया। पाठ्य पुस्तक के विश्लेषण हेतु स्वनिर्मित पाठ्य पुस्तक विश्लेषण प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया विद्यार्थी मापनी में २५ कथन दिये गए जो पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पक्षों जैसे सहायक पुस्तकों की सूची, उचित मूल्य, विषय वस्तु संगठन, प्रयोग कार्य की सूची, भाषा, गृह कार्य के लिए सुझाव, परियोजना कार्य, कागज की गुणवत्ता आदि से संबंधित सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के कथन थे प्रदत्त विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए। पाठ्य पुस्तक के प्रकाशकों की साख एवं लेखकगण योग्य पाए गए, विषयवस्तु रूचिकर पाई गई, अक्षरो का आकार उपयुक्त तथा चित्र अस्पष्ट पाए गए, पाठ्य पुस्तक में रंगिन चित्रों का संयोजन नहीं पाया गया, कागज की गुणवत्ता निम्न कोटी की पायी गई सहायक पुस्तकों की सूची तथा परीक्षा से संबंधित सुझाव नहीं पाये गए, पाठ्य पुस्तक की विषयवस्तु समझने में आसान पाई गई तथा वाक्य छोटे छोटे व भाषा सरल, स्पष्ट पाई गई, पाठ्य पुस्तक में परियोजना कार्य तथा अभ्यास कार्य उचित मात्रा में पाया गया, पाठ्य पुस्तक का बाह्य स्वरूप आकर्षक नहीं पाया गया पाठ्य पुस्तक में वर्तनी संबंधी त्रुटियां नहीं पाई गयी तथा पाठ्य पुस्तक से अधिगम करने में विद्यार्थियों को असानी होती है पाठ्य पुस्तक में गतिविधि प्रश्न तथा विषय सूची पाई गई व पाठों का आकार विद्यार्थियों के स्तर अनुरूप पाया गया।

प्रस्तावना –

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम का परिचय :-

राज्य सरकार द्वारा मध्यप्रदेश सोसायटी पंजीकरण अधिनियम १९६८ के द्वारा पंजीकृत मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम की स्थापना १९७३ में हुई। जिसका मुख्य कार्य कक्षा १ से १२ तक स्कूलों के लिए पाठ्यपुस्तकों का निर्धारण, प्रकाशन व बिक्री वितरण करना है। मध्यप्रदेश सोसायटी और फ्रेम रजिस्ट्रार (भोपाल) द्वारा संचालित कारोबार के लिये राज्य सरकार द्वारा जारी किये गये अनुदेशों का पालन समय-समय पर मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा किया जाता है। मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल के निर्देशन में मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा पाठ्यपुस्तकों का अनुमोदन किया जाता है। इसका मुख्य केन्द्र भोपाल में स्थित है यह प्रतिवर्ष लगभग ६ करोड़ पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, व मराठी माध्यम में करता है।

पाठ्यपुस्तकों का परिचय :-

मानवीय ज्ञान तथा अनुभवों का संचित किया जाना, मानवीय ज्ञान तथा अनुभवों का संचार किया जाना व मानवीय ज्ञान में वृद्धि ये तीनों ही मानवीय ज्ञान की अवस्थाएँ हैं मनुष्य अपने ज्ञान तथा अनुभवों को संचित करता है इसके लिए कई साधन हैं, परन्तु

प्रमुख साधन पुस्तकें हैं जिन्हे पुस्तकालयों में रखा जाता है। विद्यार्थियों अनुदेशन का प्रमुख साधन पुस्तकें ही होती हैं पाठ्यपुस्तकें परोक्ष अनुभवों की एक बड़ी मात्रा सुसंगठीत रूप से प्रस्तुत करती हैं कि ये अनुभव भावी चिन्तन व पड़ताल का पोषण कर सकें। अतः पाठ्यपुस्तकें विषय वस्तु का एक ऐसा रूप हैं जो शोध, विद्यार्थियों और सृजनात्मक चिंतन की त्रिआयामी कर्मभूमि हैं यही कारण है की पाठ्यपुस्तकें शिक्षा क्षेत्र के लिए अपरिहार्य हैं। विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें प्रेरणा का कार्य करती हैं। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को एक निश्चित तथा स्पष्ट उद्देश्य बताती हैं, उन्हें कक्षा के निर्धारित पाठ्यक्रम का ज्ञान देती हैं, तथा उन्हें यह भी बताती हैं कि उन्होंने कितना कार्य समाप्त कर लिया है और कितना करना शेष रह गया है। उपयुक्त सभी बातों से विद्यार्थियों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए इतनी प्रेरणा मिलती है कि जैसे-जैसे वह उच्च कक्षाओं में प्रवेश करते रहते हैं, वैसे-वैसे उन्हें व्याख्यान द्वारा पढ़ाई हुई पाठ्य सामग्री का ज्ञान पाठ्यपुस्तकों के स्वतंत्र अध्ययन द्वारा प्राप्त करने में आनंद आने लगता है। विद्यार्थियों के लिए पाठ्यपुस्तकें पथ प्रदर्शक का कार्य करती हैं। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को पाठ योजनाएँ बनाने में तथा पाठ्य सामग्री को व्यवस्थित रूप से उपस्थित करने का संकेत देते हुए इस बात का ज्ञान देती

है कि उन्हे विद्यार्थियों को क्या तथा कितना ज्ञान देना है, इससे समय की बचत होती है तथा विद्यार्थियों कि शक्ति का अपव्यय भी नहीं होता है।

आज की शिक्षा पाठ्य-पुस्तकों पर ही आधारित है, आज पाठ्यपुस्तकके शिक्षा में मुख्य रूप से उपयोग की जाती है। ये शिक्षा की वाहक और उत्प्रेरक रही इसलिए उन्हे शिक्षा की रीढ़ भी कहा जाता है।

पाठ्य-पुस्तकके शिक्षा -प्रणाली की रीढ़ है । इनकी विषेषता संबद्ध मंडल द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर लिखा जाना है । अध्यापक एवं विद्यार्थियों के बीच सम्पूर्ण कक्षा कक्षीय व्यवहार पाठ्यपुस्तक के इर्द-गिर्द घूमता है ।

पाठ्यपुस्तक की परिभाषा :-

रिस्क के अनुसार :- पाठ्यपुस्तक शैक्षिक सम्पत्ति है, जिसका आज के कक्षा कक्ष में महत्वपूर्ण स्थान है, पाठ्यपुस्तक का विभिन्न प्रकार से प्रभावशाली उपयोग किया जा सकता है। यद्यपि पाठ्य पुस्तकें सर्वत्र है तथापि उनकी दशा पर विचार करने से विदित होता है कि उनसे अक्सर न तो पढ़ाने वाले अध्यापक संतुष्ट है न पढ़ने वाले छात्र शिक्षा - विभाग के अधिकारीगण भी इन पाठ्यपुस्तकों के अल्पगुणों की प्रायः पिकायत करते, देखे गए है। पाठ्यपुस्तक गुणवत्तापूर्ण है अथवा नहीं इसका ज्ञान हमें मूल्यांकन द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। मूल्यांकन द्वारा हमें यह ज्ञात हो सकता है कि पाठ्यपुस्तक किन-किन उद्देश्यों की पूर्ति कर रही है तथा कौन से उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो रही है। अच्छी पाठ्यपुस्तक के कौन से गुण पाठ्यपुस्तक में है तथा कौन से लाये जाने है लेखको को प्रतिपोष भी इसमें विश्लेषण से ही प्राप्त होती है चूंकी पाठ्यचर्या, निरंतर, परिवर्तित होती रहती है। अतः पाठ्यपुस्तकों में भी निरंतर परिवर्तित होना ही चाहिए। इसे आद्यतन बनाये रखने के लिए भी आवश्यक है मूलतः इनका विश्लेषण इसके उपभोक्ताओं यथा अध्यापकों एवं विद्यार्थियों द्वारा किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण के क्षेत्र में अनेक शोध कार्य हुए है जो प्रस्तुत किए जा रहे है।

चौधरी (१९७६) ने हिन्दी की राष्ट्रीय पाठ्य पुस्तक, जो म.प्र. की १ से ८ वीं तक के मूल्यांकन विषय पर शोध कार्य किया । इनके अध्ययन के निम्न निष्कर्ष थे : १. विद्यार्थियों की सभी ८ वीं की पाठ्यपुस्तक के लिये उनके पक्ष में राय उनके विद्यार्थियों की अपेक्षा प्रदर्शित की, २. कक्षा १ से ४ तक की पाठ्यपुस्तकों में सामाजिक सांस्कृतिक मूल्य उनके पदों में दिखाई दिए जो मूल्य विशेषज्ञों ने सिफारिश किये थे । जबकी ५ वीं से ८ वीं तक की पुस्तकों में इस प्रकार का कोई संबंध स्थापित नहीं हुआ, ३. कक्षा १ से ८ वी तक के

बालकों की आवश्यकताओं में कोई संबंध स्थापित नहीं हुआ जैसा कि विशेषज्ञों ने बताया या, ४. कक्षा १ से ८ तक की पुस्तकों की थीम में कोई संबंध नहीं बना जैसा कि इन कक्षाओं के विद्यार्थी पसंद करते थे।

थरवानी (१९८२) महाराष्ट्र राज्य में निर्धारित कक्षा ५वी व १०वी की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण अध्ययन पर शोध कार्य किया इनके अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे १. पाठ्यपुस्तक की मूल्य विशेषता का अध्ययन करना २. पाठ्यक्रम के लिए पुस्तकों की एक निश्चित प्रासंगिकता को ज्ञात करना ३. ग्रामीण छात्रों के लिए पाठ्यपुस्तक की प्रासंगिक का अध्ययन करना। उपकरण के रूप में प्रश्नवाली तथा का प्रयोग किया गया प्रदत्त संकलन ८५ प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय से किया गया । न्यादर्श के लिए १९६ माध्यमिक और प्राथमिक स्कूल के विद्यार्थियों तथा ६८३ छात्रों तथा ९० विशेषज्ञों को शामिल किया गया। इनके अध्ययन के निष्कर्ष थे १. उच्च वर्गों की पाठ्यपुस्तक में छोटे तथा लंबे स्वरों में कुछ मुद्रण संबंधी गलतियाँ थी, २. ५वी की पाठ्यपुस्तक बच्चों की उम्र व क्षमता के हिसाब से ठीक नहीं पायी गयी तथा पाठ्यपुस्तक में दिया गया अभ्यास कार्य सही नहीं तथा बच्चे स्वयं अध्ययन के लिये प्रेरित नहीं पाए गए तथा कुछ विद्यार्थियों की राय के अनुसार उच्चवर्ग की पाठ्यपुस्तक के कुल पाठों को हटा दिया गया था।

शर्मा (१९८५) ने "प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा पाठ्यपुस्तकों में उपयोग की गई भाषा की व्यापकता का अध्ययन" पर शोध कार्य किया। इनके अध्ययन का उद्देश्य था।

राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा तैयार की गई हिन्दी की पाठ्य पुस्तक (१ से ८) और मध्यप्रदेश निगम द्वारा तैयार की गयी हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों के प्रतिबिम्ब मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। इनके अध्ययन का निष्कर्ष थे १. हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में जो भाषा का उपयोग की गई वह शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की भाषा से मेल नहीं खा पाती गयी, २. हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में अधिक संख्या में विशेषण का उपयोग किया गया तथा पुस्तक में क्रिया विशेषण के प्रयोग में संगतता पायी गयी।

खांडेकर (१९९१) हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में निहीत शैक्षिक मूल्य का एक अध्ययन पर शोध कार्य किया इनके अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे, १. स्नातक स्तर पर हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्य का पता लगाना, २. हिन्दी की पाठ्यपुस्तक की क्षमता व कमियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना तथा न्यादर्श के रूप में नागपूर के ०९ कॉलेजों से २० व्याख्याता तथा स्नातकोत्तर विभाग से हिन्दी पढ़ाने वाले व्याख्याता को

शामिल किया गया। उपकरण के रूप में प्रज्ञावली का उपयोग कर प्रदत्त संकलन कर प्रतिक्रिया प्राप्त की गई इनके अध्ययन के निष्कर्ष थे, १. पाठ्यपुस्तक शैक्षिक मूल्यांकन के अनुसार नहीं है, २. पाठ्यपुस्तक में शैक्षिक मूल्यांकन में कमी का प्रतिषट इस प्रकार पाया गया। चरित्र निर्माण ३०: रुचि का विकास २०:, भाषा की सुन्दरता १५: तथा व्याकरण ४०: तथा ८५: व्याख्यता विद्यार्थियों मूल्य महत्व के प्रति सहमत तथा ९०: व्याख्याता पाठ्यपुस्तक में विषयवस्तु की विविधता के सहमत पाए गए।

एस्के (२००७) ने मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्य पुस्तकों में मूल्यान्माता का अध्ययन (६ कक्षा से १२ कक्षा) पर शोध कार्य किया। इनके उद्देश्य थे, १. कक्षा ६ टी से १२ वी तक की मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में मूल्यान्मुखता का अध्ययन करना, २. भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के संदर्भ में विषय वस्तु का वर्गीकरण गद्य व पद्य के आधार पर करना। इनके अध्ययन के निष्कर्ष थे, १. कक्षा ६ ठी से १२ वी तक की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में ज्ञानवर्धक विषयवस्तु तथा मूल्यान्मुख विषय वस्तु की पर्याप्तता थी, २. नैतिक मूल्यांकन, सामाजिक मूल्य, राष्ट्रीय मूल्य मूल्यान्मुख विषय वस्तु की पर्याप्तता थी, ३. पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु, बोध नगण्य थी तथा छात्रों के स्तर व बौद्धिक क्षमता के अनुरूप थी।

ओझा , पदमा (२०१०) कक्षा आठवीं हिन्दी विषय की पाठ्य पुस्तक का समीक्षात्मक अध्ययन पर शोध कार्य में पाया कि हिन्दी पाठ्य पुस्तक अध्ययन व अध्यापन के लिए उपयोगी है ६० प्रतिशत शिक्षको के अनुसार प्रस्तुत पुस्तक में जो कविताँ , निबंध, कहानी, आत्मकथा , चरित्र चित्रण , पत्र , विवरण लघु कथाएँ , जीवन चरित्र स्तरीय है तथा कक्षा आठ की दृष्टि से उपयुक्त एवं उपयोगी है पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त चित्र अस्पष्ट है अतः चित्रों का मुद्रण स्पष्ट करने की आवश्यकता है।

दुबे , अनामिका (२०१२) हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तकों में समवेशित छतीसगढी पाठो के संबंध में शिक्षको के दृष्टिकोण का अध्ययन में पाया गया कि छतीसगढी पाठो के प्रति शिक्षको का दृष्टिकोण सकारात्मक था ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शिक्षको के समान दृष्टिकोण थे तथा पुरूष एवं महिला शिक्षको के दृष्टिकोण भी समान पाए गए।

रणदिवे संगीता , तिवारी सुरेन्द्र , पाल हंसराज (२०१८) मध्यप्रदेश की कक्षा आठवी की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक सुगमभारती की संवेगात्मक साक्षरता के परिप्रक्ष्य में अध्ययन पर शोध कार्य किया तथा पाया कि इस

पाठ्यपुस्तक में नकारात्मक संवेगों को भी महत्व दिया गया है, जिससे विद्यार्थी सही गलत में अंतर भी कर पाएंगे ब्लूम की टेक्सॉनामी की दृष्टि से देखा जाए तो इसमें ज्ञान की ही अधिकता दिखती है अन्य पक्ष समझना व्यवहार में लाना आदि कहानियों में मिलते हैं और यदि कमी भी रही है तो मूल्यांकन हेतु पाठो के अंत में दिए गए प्रश्न इस कमी को दूर करते हुए दिखते हैं। चौधरी, यू.एस (१९७६) ने हिन्दी की राष्ट्रीय पाठ्यपुस्तक, जो म.प्र. की १ से ८ वी तक के मूल्यांकन पर। शर्मा (१९८५) ने प्राथमिक स्तर पर विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं भाषा पाठ्यपुस्तकों में उपयोग की गई भाषा की व्यापकता का अध्ययन पर। एस्के (२००७) ने मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित हिन्दी पाठ्य पुस्तकों में मूल्यान्मुखता का अध्ययन (६ कक्षा से १२ कक्षा) सेठिया (१९७०) ने मध्यप्रदेश स्कूल की राष्ट्रीय सामान्य विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक मूल्यांकन पर। वर्मा (२०१२) ने मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा अनुशंसित कक्षा ९वीं की विज्ञान विषय की पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर मूल्यांकन। खेर (१९७२) ने कक्षा चौथी की इतिहास की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन पर। पोक्शे (१९७२) ने कक्षा ६ ठी की भूगोल की पाठ्यपुस्तक का आलोचनात्मक मूल्यांकन पर। पिपरइया (१९७८) ने भाषा व सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों व महिलाओं की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन पर। भरत (१९९४) सामाजिक अध्ययन कक्षा आठवी की दो विभिन्न पाठ्यपुस्तकों में वर्णित सामाजिक पूर्वाग्रहों का पाठ्यकृम विकास हेतु विश्लेषण व मूल्यांकन पर। मोहन्ती (१९९७) ने कक्षा १० वी की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों पर मूल्यांकन पर। कोरी (२००८) ने मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन। वलवलकर (१९७९) ने कक्षा दूसरी, तीसरी तथा चौथी की गणित की पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक मूल्यांकन पर।

केकरे (१९७९) ने बाल साहित्य की पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत विषय वस्तुओं का तुलनात्मक अध्ययन पर। अंबारासु (१९९२) ने मूल्यान्मुखता का अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर की अंग्रेजी भाषा की पाठ्यपुस्तकों पर। डोके (१९९४) ने एम.एड. स्तर पर शैक्षिक प्रशासन के पाठ्यविवरणों का मूल्यांकन एवं वैकल्पिक पाठ्यविवरण प्रतिमानों का निर्माण पर। सत्यार्थी (२००३) ने प्राथमिक शिक्षक-प्रशिक्षण के शैक्षिक कार्यक्रमों का शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों द्वारा मूल्यांकन पर तावडे (२००६) ने राज्य संसाधन केन्द्र मध्यप्रदेश द्वारा प्रकाशित साक्षरता की पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन पर शोध कार्य किया।

परन्तु अभी तक मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम की कक्षा ९ वीं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण पर बहुत कम शोधकार्य हुआ है इससे प्रस्तुत अध्ययन “मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित कक्षा ९ वीं की हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया के आधार पर विश्लेषण” की आवश्यकता प्रतिपादित होगी

शोध का शीर्षक

प्रस्तुत शोध अध्ययन की समस्या थी :

“ मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा निर्धारित कक्षा ९ वीं की हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक का विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर विश्लेषण “

अध्ययन का उद्देश्य :- प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य था

हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ज्ञात करना।

शोध प्रविधि प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण प्रकृति का था ।

विद्यार्थी न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु १०० विद्यार्थियों का चयन सोद्धेष्य तकनीक द्वारा इन्दौर जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से किया गया । इन विद्यार्थियों की उम्र १३-१५ के मध्य थी।

उपकरण :-

प्रस्तुत अध्ययन में पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित पाठ्यपुस्तक विश्लेषण प्रतिक्रिया मापनी का उपयोग किया गया । प्रतिक्रिया मापनी में पाँच बिन्दु पू. स. (पूर्णतः सहमत), स. (सहमत), अनि. (अनिश्चित), अ.स. (असहमत), पू.अ. स. (पूर्णतः असहमत) थे। प्रत्येक विद्यार्थियों को प्रतिक्रिया देने के लिए कोई समय सीमा नहीं दी गयी सकारात्मक कथनों में भारांक ५,४,३,२,१ तथा नकारात्मक कथनों में भारांक १,२,३,४,५ दिये गये । कुल फलांक सीमा (२५-१२५) थी

विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया मापनी :-

पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण हेतु पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया जानने के लिये विद्यार्थी प्रतिक्रिया मापनी का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गया । विद्यार्थी प्रतिक्रिया मापनी में २५ कथन दिये गये, जो पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों जैसे-सहायक पुस्तकों की सूची, उचित मूल्य, विषयवस्तु संगठन, प्रयोग कार्यो की सूची, भाषा, गृहकार्य के लिये सुझाव, परियोजना कार्य, कागज की गुणवत्ता आदि से संबंधित थे ये कथन सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के थे । जिसमें से किसी एक विकल्प का चयन कर उत्तरदाता को सही

(√) का निशान लगाना था

प्रदत्त संकलन विधि -

प्रस्तुत अध्ययन इन्दौर शहर के विद्यार्थियों पर किया गया । प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वप्रथम चयनित विद्यालय में जाकर प्राचार्य से अनुमति प्राप्त की गयी । तत्पश्चात् विद्यार्थियों से संपर्क कर उन्हें शोध के उद्देश्य से परिचित करवाया गया । पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण हेतु विद्यार्थियों को पृथक-पृथक प्रतिक्रिया मापनी दी गयी। सभी न्यादर्श को प्रतिक्रिया मापनी को हल करने से संबंधित आवश्यक निर्देश दिए गये । न्यादर्शों द्वारा प्रतिक्रिया मापनी पर अपनी प्रतिक्रिया देने के पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया ।

प्रदत्त विश्लेषण -

उद्देश्यवार प्रदत्त विश्लेषण निम्नानुसार किया गया- हिन्दी विषय की पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पक्षों पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं को ज्ञात करने हेतु आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न मुख्य निष्कर्ष है :-

1. पाठ्य पुस्तक के प्रकाशकों की साख एवं लेखकगण योग्य पाये गये।
2. पाठ्य पुस्तक की विषयवस्तु रुचिकर पायी गई।
3. पाठ्य पुस्तक में अक्षरों का आकार उपयुक्त पाया गया।
4. पाठ्य पुस्तक में चित्र पर्याप्त मात्रा में पाये गये।
5. पाठ्य पुस्तक में रंगीन चित्रों का संयोजन नहीं पाया गया।
6. पाठ्य पुस्तक में कागज की गुणवत्ता निम्न कोटि की पायी गई।
7. पाठ्य पुस्तक में सहायक पुस्तकों की सूची नहीं पायी गई।
8. पाठ्य पुस्तक में परीक्षा से संबंधित सुझाव नहीं पाये गये।
9. पाठ्य पुस्तक की विषयवस्तु में प्रामाणिकता पायी गई।
10. पाठ्य पुस्तक विषयवस्तु समझने में आसान पायी गई।
11. पाठ्य पुस्तक में वाक्य छोटे-छोटे तथा भाषा सरल व स्पष्ट पायी गई।
12. पाठ्य पुस्तक में परियोजना कार्य तथा अभ्यास कार्य उचित मात्रा में पाया गया।
13. पाठ्य पुस्तक का बाह्य स्वरूप आकर्षक नहीं पाया गया।
14. पाठ्य पुस्तक में वर्तनी संबंधी त्रुटियाँ नहीं पायी गई।
15. पाठ्य पुस्तक से अध्यापन करने में शिक्षकों को आसानी होती है, यह पाया गया।

16. पाठ्य पुस्तक में विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण क्रमबद्ध रूप से पाया गया।
17. पाठ्य पुस्तक में गतिविधि प्रश्न पाये गये।
18. पाठ्य पुस्तक में विषयसूची पायी गई।
19. पाठ्य पुस्तक का मूल्य उचित पाया गया।
20. पाठ्य पुस्तक में पाठों का आकार विद्यार्थियों के अनुरूप नहीं पाया गया।

सुझाव :-

१. पाठ्य पुस्तक का मूल्यांकन कार्य लघु न्यादर्श पर किया गया है। सामान्यीकरण हेतु बड़े न्यादर्श पर कार्य किया जा सकता है।
२. प्रत्येक विषय की पाठ्य पुस्तक का स्वतंत्र विश्लेषण किया जा सकता है।
३. पाठ्य पुस्तक विश्लेषण हेतु दो प्रदेशों की समान विषयों की पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
४. पाठ्य पुस्तक का विश्लेषण कार्य सी.बी.एस.ई. की पुस्तकों पर भी किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. अग्रवाल, एस.के. : शिक्षण कला (शिक्षण एवं परीक्षण की प्रविधिया) राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, १९८१.
2. कोरी, धमेन्द्र कुमार :- मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा निर्धारित इतिहास की पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन (पूर्व माध्यमिक स्तर के संदर्भ में) अप्रकाशित एम. एड. शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर २००८.
3. टिल्लू,मीनाक्षी : मध्य प्रदेश शासन द्वारा निर्धारित मातृभाषा हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों का समीक्षात्मक अध्ययन कक्षा १ ली से ५ वी के विशेष संदर्भ में, अप्रकाशित एम. एड.शोध प्रबंध इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर १९७०.
4. तावड़े मनीषा : राज्य संसाधन केन्द्र मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित साक्षरता की पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन, अप्रकाशित एम.एड.शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय , इन्दौर २००६.
5. तोमर,अर्चना सिंह :- मध्यप्रदेश , बिहार की राज्य संसाधन केन्द्र द्वारा प्रकाशित पाठ्य-पुस्तकों का तुलनात्मक अध्ययन, अप्रकाशित एम.एड.शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर १९९३.
6. पाटीदार, भरतलाल:- सामाजिक पूर्वाग्रहों का पाठ्यक्रम विकास हेतु विश्लेषण एवं मूल्यांकन, अप्रकाशित एम.एड.शोध प्रबंध, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर १९९३.

7. Bush, M.B.(Ed.): A Survey of Research in Education, Baroda, Centre of Advanced Study in Education, 1974.
8. Buch, M.B.(Ed.): Second Survey of Research in Education (1972-1978) Baroda, Society for Educational Research and Development, 1979.
9. Buch, M.B.(Ed.): Third Survey of Research in Education (1978-1983) National Council for Educational Research and Training New Delhi, 1986.
10. Buch, M.B.(Ed.): Fourth Survey of Research in Education (1983-1988). Vol. I and II, National Council for Educational Research And Training, New Delhi, 1991.
11. NCERT: Sixth Survey of Educational Research (1993-2000) Volume II, NCERT, New Delhi, 2007.
12. Pattabhiram G. : An Evaluation of Nationalized Textbook for Higher Classes in Social Studies in Secondary School of Andhra Pradesh, Unpublished Ph.D. M.S. University. Baroda, 1973.
13. <https://ncert.nic.in>
14. www.ugc.ac.in
15. mptbc.mp.gov.in

भारतीय समाज में प्रौढ महिलाओं की स्थिति

नेहा वर्मा¹ डॉ शिवानी श्रीवास्तव²

¹शोधार्थी

²विभागाध्यक्ष (डॉ. ए.पि.जे अब्दुल कलाम यूनिवर्सिटी इंदौर)

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति में अनेक उतार चढ़ाव हुये वैदिक काल में प्रौढ महिलाओं में पुरुषों के बराबर में समानता थी इस काल में स्त्रियों को पुरुषों के बराबर दर्जा प्राप्त था परन्तु धीरे धीरे इस समानता की स्थिति में हास होने लगा। और मध्यकाल तक महिलाओं की स्थिति निम्नवत होने लगी तथा मध्यकाल तक महिलाओं की स्थिति निराशा पूर्ण एवम सारी स्वतन्त्रता छिन गयी। और वे पदों पर जकड़ गयी। ब्रिटिश सत्ता की स्थापना के साथ ही महिलाओं में धीरे धीरे सुधार होना शुरू हो गया। महिलाओं की स्थिति से हमारा तात्पर्य किसी समाज विशेष में महिलाओं के स्थान से है। यह इस बात का संकेत है की उस समाज एवम सांस्कृति में क्या स्तर था। समाजशास्त्रियों तथा मानव शास्त्रियों दोनों ने इसी कारण विभिन्न सामाजों में महिलाओं की स्थिति व अध्ययन करने में बहुत पहले से रुचि दिखायी है। जबकि "महिलाओं की स्थिति" सह अवधारणा आधुनिक समाज शास्त्री साहित्य एवं विशेष रूप से महिलाओं से सम्बन्धित साहित्य में अपना महत्वपूर्ण अवधारणा व्यक्त करने का पूर्ण प्रयास किया गया है।

मानव सभ्यता में पाषाण युग से परमाणु युग तक का लम्बा सफर तय कर लिया है। इस दौरान कई प्राचीन सभ्यताओं ने जन्म लिया और धरती के कोने-कोने में फैल गये हैं। कुछ रह गये - कुछ समय की धारा में बह गये। पर चार्ल्स डार्विन की माने तो इंसान ने बंदर से महामानव बनते तक की दौड़ लगायी है अगर हम भारतीय सभ्यता की बात करें तो इसे विश्व की प्राचीनतम और सुव्यवस्थित सभ्यता माना गया जो अपनी उच्च कोटि की पारिवारिक तथा सामाजिक व्यवस्था के लिये जाना जाता है। परिवार वह सबसे छोटी, इकाई है जहाँ एक समूह राष्ट्र के सभी उपादान और कारक मौजूद रहते हैं। इस परिवार व्यवस्था के संचालन में नारी व पुरुष की समान भागीदारी और सामान महत्व है। पुरुष परिवार को पोषण देता है अपनी रोजगार से स्वजनों का पेट पालता है। परन्तु परिवार संचालन की वास्तविकता जिम्मेदारी नारी के ऊपर ही है जिसे सेवा त्याग और करुणा की देवी कहाँ जाता है। परन्तु इस प्रकार की शास्त्रीय परिभाषाएं जो भी हो वास्तविकता कुछ और ही प्रतीत होती है। पुरुष आज भी वही है जो पहले था प्रगति पथ निरंतर चलता हुआ, संघर्ष, शौर्य, पराक्रम अहंकार आदि गुणों से भरपूर, अपने धुन में मस्त परन्तु आज के इस आधुनिक समाज में नारी की स्थिति क्या है। यह जानने की कोशिश करेंगे तो निराशा ही हाथ लगेगी।

यद्यपि आज के इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में महिलाएँ अपनी मौलिक अधिकारों से वंचित हैं। कृषि से लेकर अंतरिक्ष तक अनेक क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर स्थान हासिल कर लिया है।

परन्तु आज भी ज्यादातर महिलाएँ अपनी मौलिक अधिकारों से वंचित रहने को तिवश हैं। महिला सशक्तिकरण के जितने भी प्रयास किये जा रहे हो पर नारी को अपने अस्तित्व की सबसे बड़ी चुनौति उसे अपने घर में, माँ के कोख में ही मिल रही है। इससे बच भी गयी तो धरती पर आने के बाद उसके लिये जैसे चुनौतियों का अम्भार लगा हुआ हो। भ्रूण हत्या, लैंगिंग भेदभाव, घरेलू हिंसा दहेज प्रताड़ना, यौन उत्पीड़न, छेड़छाड़, शोषण, दमन, बलात्कार तिरस्कार, मानसिक यंत्रणा, आदि अनेको समस्या है। जिससे हर पल महिलाओं का सामना होता रहता है। प्रकृति में नर-मादा का समन्वय करके सृष्टि की निरंतरता को बनाये रखा, पुरुष और नारी में शारीरिक और स्वाभावगत भिन्नताये हैं, एक कठोर है और एक कोमल पुरुष स्वभाव से अहंकारी और नारी त्याग करने वाली। इतिहास के अनुसार वैदिक काल की सामाजिक संपन्नता प्राप्त थी नारी शिक्षा, शास्त्र अध्ययन, राज में पुरुषों के बराबर भागीदारी, स्वेच्छ से विवाह करना आदि अनेको उदाहरण हैं।

पुरुषों के कुकर्मा से महिलाओं को सुरक्षित करने हेतु भारतीय दण्ड संहिता (आई. पी. सी.) की कई धाराएं लागू की गयीं। जैसे लज्जा भंग पर धारा 394 के तहत दो वर्ष तक जेल, बलात्कार में धारा 306 के तहत सोलह वर्ष तक की आयु तक के बालिकाओं बलात्कार पर अपराधी को आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान है। मानसिक यातना देने पर धारा 494 के तहत 9 वर्ष की सजा छेड़छाड़ पर धारा 294 अपहरण या वेष्ट्यावृत्ति पर धारा 363 से 366, कन्या भ्रूण हत्या पर धारा 312 से 316 के तहत

कठोर दण्ड का प्रावधान है। पर इन सबके बावजूद अपराध और बढ़ रहे हैं। अपराधी और अधिक धिनौने तरिके से बलात्कार को अंजाम दे रहे हैं हाल ही में छोटी बच्चियाँ तक को निर्मम बलात्कार का शिकार बनाया गया। अब प्रश्न उठता है। जब रक्षक ही भक्षक बन जाये तो महिलाओं को कैसे सुरक्षित रखा जाये। सरकार की योजना, पुलिस अदालत, कानून की धारणे, तो मात्र सामाजिक संरचना में शामिल औपचारिक व्यवस्था है। वास्तव में जब तक लोगों की मानसिकता नहीं बदलेगी, दृष्टिकोण नहीं बदलेगा।

अध्ययन की सुविधा के लिये भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को निम्न कालों में विभाजित किया जा सकता है

१- वैदिक काल ।

२- उत्तर मध्यकाल ।

३. ब्रिटिश काल ।

४- स्वातन्त्र्योत्तर काल ।

१- वैदिक काल में प्रौढ महिलाएँ -:

वैदिक काल के प्रारम्भ में देखा जाये तो नारी परिवार का केन्द्र बिन्दु रही है उन दिनों परिवार मातृसत्तात्मक था। स्वेती की शुरुआत तथा एक जगह बस्ती बनाकर रहने की शुरुआत नारी ने ही की थी। वैदिक काल की सभ्यता तथा सांस्कृति के प्रारम्भ में नारी है। किन्तु कलान्तर में धीरे-धीरे सभी सामाजों में सामाजिक व्यवस्था मातृ सत्तात्मक से पितृसत्तात्मक होती गयी और नारी सामाज के हशिये पर चली गयी आर्यों की सभ्यता और सांस्कृति के प्रारंभिक काल में महिलाओं की स्थिति बहुत सुदृढ थी। वैदिक काल में स्त्रियाँ उस समय की सर्वोच्च शिक्षा अर्थात् ब्रह्मज्ञान कर सकती थी। प्राप्त वैदिक काल में परिवार के सभी कार्यों और भूमिकाओं में पत्नी को पति के सामान अधिकार प्राप्त थे।

महिलाओं को शिक्षा ग्रहण करने के अलावा पति के साथ यज्ञ, का सम्पादन भी करती थी। वेदों में अनेक स्थलों पर रोमाला, घोषाल, सूर्या, अपाला, विलोमी, सावित्री सभी श्रद्धा, कामायनी, विक्षम्भरा देवयानी आदि विदुषियों के नाम प्राप्त होते हैं। उत्तर वैदिक काल में भी स्त्रियों की प्रतिष्ठा बनी रही। इसके अलावा शासन, सेना राज व्यवस्था स्त्रियों के योगदान के प्रमाण मिलते हैं। प्राचीन भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधित दो विचार के सम्प्रदाय मिलते हैं। एक सम्प्रदाय के समर्थकों का कहना है की महिलाएँ पुरुषों के बराबर थी जबकि दुसरे सम्प्रदाय के समर्थकों की मान्यता है कि महिलाओं

का न केवल अपमान होता था बल्कि उनके प्रति घृणा भी की जाती थी। वैदिक सूत्रों के आधार पर उक्त काल खण्डों में स्त्री को गौरवपूर्ण एवं सम्मान जनक स्थिति स्वीकार्य करते हैं तथा परवती सूत्रों में उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की निम्नतर स्थिति के स्पष्ट संकेत मिलते हैं नारी समाज का वह अंग है जो व्यक्ति और समाज के स्तर पर अनेक भूमिकाओं को एक साथ ही निर्वाहित करती है। एक ही समय में वह एक से अधिक रूपों में जीवित रहती है। और इन विभिन्न रूपों में वह एक साथ ही माता, बहन, पुत्री, प्रेयसी दोस्त तथा वेश्या तक हो जाती है। वह किसी न किसी रूप में कहानी में अवश्य ही चित्रित होती है। " वास्तव में गृहस्थाश्रम की सफलता नारी पर आधारित है। " इसीलिये तो प्राचीनकाल में नारी प्रतिष्ठित पद पर विराजमान थी। मनु ने भी अपने सामाजिक ग्रन्थ "मनुस्मृति" में लिखा है

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

यत्रेतास्तु न पुज्यन्ते सर्वास्तत्रफला क्रियाः ।

अर्थात् जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है उस कुल पर देवता प्रसन्न रहते हैं और जिस कुल में स्त्रियों की पूजा, वस्त्र भूषण तथा मधुर वचनानि द्वारा सत्कार नहीं होता है उस कुल में सब कर्म निष्फल होते हैं। उपनिषदों में भी कहा गया है । " सृष्टि की सम्पूर्ण रिकता की पूर्ति स्त्री से मानी गयी है। "

वैदिक काल में प्रौढ महिलाओं में सबसे बड़ी कमी यह पायी गयी की कम आयु में होने वाले विवाह ने महिलाओं की उच्च शिक्षा पर बुरा प्रभाव डाला, इसके अतिरिक्त युवा होने के बावजूद भी विवाह सम्बन्धी निर्णय पर उनकी आवाज को प्रतिबन्धित किया। महिलाओं के सभी प्रकार की स्वतन्त्रता को समाप्त कर दिया गया

*पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने।

रक्षन्ति स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति।।

प्रभाती मुखर्जी (१९६४) ने पौराणिक काल में स्त्रियों की स्थिति के निम्न होने के कुछ कारण बताये हैं। ये कारण इस प्रकार हैं - सम्पूर्ण समाज के ऊपर ब्राह्मणीय विचारों का प्रभाव जाति - व्यवसाय की कठोरता, स्त्रियों की शिक्षा के कम अवसर तथा भारत पर विदेशी आक्रमण आदि।

२. मध्यकाल में प्रौढ महिलाओं की स्थिति -:

लगभग ७०० वर्ष (११ वीं शताब्दी से १८ वीं शताब्दी के मध्य) का काल भारत में मुस्लिम शासन का काल है और इसे मध्य काल के नाम से जाना जाता है।

मध्यकाल भारत में प्रौढ महिलाओं के लिये स्थिति को सम्भालना और मुश्किल होता जा रहा था क्योंकि वैदिक काल से ही महिलाओं की शिक्षा में गिरावट एवम समाज में मान सम्मान की कमी को देखते हुये मध्य कालीन भारत में एक नयी समस्या उत्पन्न हुयी की कन्या जन्म के अशुभ माने जाने के संकेत मिलते हैं। सदैव लड़कियाँ पैदा करने वाली स्त्री को घृणा से देखा जाता था। महिलाओं को कुछ सम्मान पुत्र की माता होने पे मिलता था। परन्तु इस्लाम के भारत में आने के बाद सुरक्षा विवाह दहेज आदि प्रश्नों ने कन्या जन्म को सामाजिक अप्रतिष्ठा का विषय बना दिया गया।

इस काल में भारतीय समाज पर मुसलमानों का प्रभाव बढ़ने लगा। इस काल में हिन्दु धर्म एवं सांस्कृति की रक्षा के नाम पर स्त्रियों महिलाओं पर अनेक प्रतिबंध लगाये गये। उन्हें अधिकारों से वंचित कर दिया गया। और विभिन्न प्रौढ महिलाओं पर नियोज्यता लाद दी गयी। इस समय महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से भी वंचित कर दिया गया। अब ७ से ६ वर्ष तक की अबोध कन्याओं का विवाह होने लगा रक्त की शुद्धता को बनाये रखने और प्रौढ महिलाओं के सतीत्व की रक्षा के उद्देश्य से बाल विवाह को प्रोत्साहित किया गया। इस काल में पर्दा प्रथा प्रचलित हुई। प्रौढ महिलाओं का कार्य क्षेत्र केवल घर की चारदीवारी तक सिमित हो गया। अब विधवाओं को पुनः विवाह का अधिकार नहीं रह गया सती प्रथा को बढ़ावा दिया गया। एवं सभी पुरुषों को एक पत्नी के होते हुये एक से अधिक पत्नी रखने का अधिकार प्राप्त हो गया।

अल्टेकर ने लिखा है कि इस तरह ईसा के २०० वर्ष पूर्व से १८०० वर्ष पश्चात के करीब २००० वर्षों के काल में महिलाओं की स्थिति लगातार गिरती गयी। यद्यपि माता-पिता उसे दुलारते थे पति उससे प्रेम करता था और बच्चे उसका आदर करते थे। सती प्रथा का पूना प्रचलन पर्दा प्रथा के विस्तार और बहु विवाह की व्यापकता ने उसकी स्थिति को बहुत गिरा दिया।

१७ वीं शताब्दी में स्थितियों में कुछ परिवर्तन परिलक्षित हुए समानुजाचार्य के भक्ति आन्दोलन ने भारत वर्ष में महिलाओं के सामाजिक व धार्मिक जीवन में कुछ नई प्रकृति का संचार किया। संतो ने महिलाओं को धार्मिक पुस्तकों पढ़ाने और अपने शिक्षित करने के लिये प्रोत्साहित किया इस प्रकार भक्ति आन्दोलन महिलाओं के जीवन में नया मोड़, लाया। हालांकि

इस आन्दोलन ने आर्थिक संरचना में कोई परिवर्तन उत्पन्न नहीं किया इस लिये समाज में प्रौढ महिलाओं की स्थिति बरकरार रही।

3- ब्रिटिश काल :- (१८५७ - १९२०)

ब्रिटिश काल में स्त्रियों में शिक्षा देने का विचार विकसित हुआ मिशनरियों ने स्त्रियों की शिक्षा में रुचि ली। १८८२ में लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने लिये अनुमति प्रदान की गयी। १९०१ में ०.६ प्रतिशत से स्त्रियों का साक्षरता प्रतिशत बढ़कर १९४१ में ७.३ प्रतिशत हो गया।

यद्यपि अंग्रेजों ने हिन्दु समाज के परम्परागत नियमों एवं प्रथाओं में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनायी किन्तु १९ वीं शताब्दी के लगभग आधे के बाद और २० वीं शताब्दी के मध्य भाग में जब काफी संख्या में जागृत पुरुषों भारतीय नेताओं तथा समाज सुधारकों ने स्त्रियों के सुधार के बारे में चर्चा करना शुरू कर दिया। और प्रयत्न करके स्त्रियों में आन्दोलन को जन्म दिया। तब ब्रिटिश सरकार ने कुछ सामाजिक प्रथाओं को वैधानिक आधारों पर समाप्त करने या उनमें परिवर्तन करने की सहमति दी गयी तथा महत्वपूर्ण विधान कार्यान्वित किया गया जैसे बाल विवाह” अधिनियम १९२९ हिन्दु उत्तराधिकार अधिनियम १९२९ तथा हिन्दु स्त्रियों का सम्पत्ति अधिकार अधिनियम १९३९ आदि इन संवैधानिक उपायों ने भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति पर साकारात्मक प्रभाव डाला है। ब्रिटिश काल में स्वतन्त्र रूप से महिलाओं को मांगने और व्यवहारिक नियमों में किसी प्रकार का परिवर्तन करने के अधिकार नहीं थे, बाल विवाह पदो प्रथा महिलाओं की शिक्षा में मुख्य बाधाये थी। बाल विवाह एवं पर्दा प्रथा का विरोध करना उसके लिये कलक समझा जाता था इस युग में परम्परात्मक दृष्टि से महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर पर था। वे माताये पहले भी उपार्जिका बाद में, घर से बाहर काम करना पारिवारिक क्षेत्र में उनके विरुद्ध समझा जाता था परम्परागत धार्मिक दायित्वों का निर्वाहन करना ही उनके मनोरंजन का एक मात्र साधन था। पारिवारिक क्षेत्र में उनके समस्त अधिकार समाप्त हो गये थे। वे परिवार की संचालिका थी लेकिन व्यवहारिक रूप से सारे अधिकार पुरुषों के पास थे उनके बिना किसी प्रकार का कोई भी पारिवारिक या सामाजिक निर्णय नहीं ले सकती थी।

स्वतन्त्रता के उपरान्त नारी

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतीय प्रौढ महिलाओं स्थिति में क्रान्तिकारी बदलाव आया वह चारदीवारी से बाहर देश बहुआयामी विकास

अमूल्य योगदान देने लगी) हमारे देश की सामाजिक आर्थिक वैज्ञानिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों आगे रही

स्वतन्त्रता सामाजिक जागृति एक लहर उत्पन्न नारियों जो कभी की चारदिवारी केंद्र रहती अब अनेक एप समितियों अधिकारी के करने लगी शिक्षित नारियों परित्याग दिया। सामाजिक आये इस इन्दीवादीता कर्मकाष्ठों और अनुष्ठानों महत्व स्वतन्त्र महिलाओं स्थिति मजबूत हुयी उसे आर्थिक रूप पुरुषों पर पहले की तरह रहना पड़ता आज सभी क्षेत्रों में कामकाजी महिलाओं की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। कुछ विभागों में तो पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की संख्या अधिक है। स्वतन्त्रता के उपरान्त महिलाओं में शिक्षा के प्रति होने वाली उन्नति भी काफी हुयी है। आज महिला राजनितिक, विज्ञान व्यवसाय साहित्य और समाज के प्रत्येक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -:

1. **प्रभा आटे** : भारतीय समाज में नारी क्लासिकल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर
2. **आशा रानी व्होरा** : औरत कल आज और कल कल्याणी शिक्षा परिषद् नई दिल्ली २००७
3. **वीना गर्ग** : भारतीय महिलाये एक विश्लेषण आर्य पब्लिशिंग नई दिल्ली २०११
4. **डॉ. मैजु** : अनुसूचित जाति में महिला उत्पीडन अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली २०१०
5. **अल्टेकर, ए. एस. टू** पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दु सिविलाइजेशन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, १९७९
6. **डोगरा भारत** - पंचायती राज और महिला कुछ उपलब्धियाँ कुछ अवरोध, वाणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली।

कई महिलाओं मानसिक रूप से पुरुषों से प्रतियोगिता करके अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही है। पेडविंग महिला सम्मेलन में शिक्षा को बुनियादी मानवाधिकार घोषित किया गया था। स्वतन्त्रता प्राप्त के पश्चात नारी की स्थिति में सुधार लाने के लिये कई योजना एवं कार्यक्रम भी चलाये गये। जैसे सन् १९७८ में केन्द्रिय समाज कल्याण बोर्ड में प्रौढ महिलाओं के लिये प्रौढ शिक्षा और व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किया। एतम ग्रामीण महिलाओं में महिलाओं के उत्थान के लिये गाँवों में महिला मण्डल की स्थापना की गयी। नगरो में कार्यरत कामकाजी महिलाओं को आवासीय सुविधा देने के लिये महिला हॉस्टल खोला गया। कामकाजी महिलाओं के बिमार बच्चों के लिये शिशु गृह खोला गया। देश के विकास में महिलाओं को बराबरी का दर्जा प्राप्त हुआ) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

सावित्रीबाई फुले : व्यक्ति आणि वाङ्मय

प्रा. डॉ. वाल्मिक शंकर आढावे

सहयोगी प्राध्यापक, स्व. अण्णासाहेब आर.डी. देवरे कला व विज्ञान महाविद्यालय, म्हसदी ता. साक्री, जि. धुळे

Email-adhavevs@gmail.com

प्रास्ताविक

स्त्री शिक्षणाचे मुहूर्तमेढ रोवणाऱ्या क्रांतीज्योती सावित्रीबाईंचा जन्म सातारा जिल्ह्यातील नायगाव या गावी 03 जानेवारी 1831 मध्ये झाला. महाराष्ट्रातील स्त्री-मुक्ती आंदोलनाच्या त्या पहिल्या अग्रणी होत्या. म्हणूनच त्यांचा जन्मदिन स्त्री-मुक्ती दिन म्हणून साजरा केला जातो. हा त्यांच्या एकूणच कार्याचा यथोचित गौरव आहे. भारतातील पहिली स्त्री शिक्षिका, भारतातील पहिली मुख्याध्यापिका म्हणून सावित्रीबाई नावारुपास आल्या. विद्यादान हेच श्रेष्ठ दान आहे अशी खूणगाठ फुले दाम्पत्यांनी बांधली होती. सावित्रीबाईंनी वाङ्मय क्षेत्रात केलेली कामगिरी अतुलनीय स्वरूपाची आहे. त्यांनी 'काव्यफुले', 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' इत्यादी काव्यसंग्रह लिहिले. तत्कालिन सामाजिक परिस्थितीचे वास्तव चित्रण सावित्रीबाईंनी आपल्या काव्यसंग्रहाच्या माध्यमातून रेखाटले आहे. तत्कालीन काळात कोणतीही महिला काव्यनिर्मिती करू शकली नाही. म्हणूनच प्रा. ना. ग. पवार लिहितात की, "आधुनिक मराठी कवितेची जननी हा बहुमानही सावित्रीबाईंना प्राप्त होतो."⁰¹ खरोखरच आशय आणि अभिव्यक्तीच्या अंगाने आणि त्यांच्या काव्यातून लौकिक जीवनाला दिलेले प्राधान्य पाहता सावित्रीबाई या आधुनिक काळातल्या पहिल्या कवयित्री होत्या. काव्याबरोबर गद्यलेखन व भाषणे या माध्यमातून त्यांनी स्वतंत्र विचार मांडले. सामाजिक प्रबोधनाचा आणि सामाजिक बांधिलकीचा वसा त्यांनी आपल्या आयुष्यभर जोपासला. त्यांना काव्यविषयक आवड म. फुल्यांमुळेच निर्माण झाली.

'शिकून शहाणे व्हा, मानसिक गुलामगिरी झुगारून समानता मिळवा' हा म. फुल्यांचा संदेश त्यांनी जीवनाच्या शेवटच्या श्वासापर्यंत उराशी बाळगला. शिक्षणाचे धडे त्यांनी जोतीरावांकडून घेतले. सन 1848 मध्ये जोतीरावांनी काढलेल्या पहिल्या मुलींच्या शाळेत त्यांनी अध्यापनाचे काम केले. पुणे येथे परिणामी त्यांना कर्मठ, सनातनी, पुरोहितांच्या रोषाला सामोरे जावे लागले. एवढेच नव्हे तर त्यांना माहेरालाही मुकावे लागले व सासरे गोविंदरावांनीही त्यांना घराबाहेरचा रस्ता दाखवला. परंतु जोतीराव व सावित्रीबाई डगमगल्या नाहीत आणि खचून गेले नाहीत. शिक्षणाचं आणि विद्यादानाचं काम त्यांनी अखंडपणे चालू ठेवले. एवढ्या प्रतिकूल परिस्थितीतही त्यांनी चार वर्षांत अठरा शाळा काढल्या. सावित्रीबाईंच्या कार्यात मुस्लीम समाजाच्या फातिमा बेग नावाच्या महिलेने मोठे सहकार्य केले. स्त्री शिक्षणाचे कार्य त्यांनी

अखंडपणे चालू ठेवले. म्हणूनच एतदेशियांऐवजी ब्रिटिश अधिकाऱ्यांनी त्यांची प्रशंसा केली. ही उल्लेखनीय बाब आहे. विधवा परित्यक्ता स्त्रियांच्या त्या मोठा आधार होत्या. विधवा विवाह, मागासवर्गीय मुला-मुलींच्या शिक्षणाकरिता शाळा, दुर्बल, दुर्लक्षित, वंचित घटकांतील मुलामुलींसाठी अहोरात्र विद्यादान, अनाथ बालिकाश्रम आणि वाट चुकलेल्या स्त्रियांकरिता प्रसुतिगृह इ. गोष्टींना त्यांनी मूर्त रूप दिले. तन-मन-धन शिक्षणासाठी अर्पण करणाऱ्या शिस्तप्रिय, क्षमाशील आणि कर्तव्यनिष्ठ सावित्रीबाई उत्तम प्रतिभावंत कवयित्री होत्या. ही साक्ष त्यांच्या काव्यसंग्रहावरून सिद्ध होते. 'थॉमस पेन यांच्या साहित्यामुळे जोतिबांची जीवननिष्ठा अधिकच प्रगल्भ झाली'⁰² याच जीवननिष्ठेचा प्रभाव सावित्रीबाईंवर पडला.

सावित्रीबाईचे वाङ्मयीन कार्य -

क्रांतीज्योती सावित्रीबाईंनी प्रस्थापितांविरुद्ध बंडाचे निशाण रोवले. वेदपठणाचा अधिकार आम्हाला का नाही? केवळ जन्माने श्रेष्ठत्व कसे? प्रभूची सारीच लेकरे तर प्रभूच्या ठायी भेदभाव कसा? परमेश्वरभक्तीत पुरोहितशाहीचा पांगुळवाडा कशाला? विवाह प्रसंगी श्रेष्ठत्व/कनिष्ठत्व कसं? यासारखे प्रश्न त्यांनी उपस्थित केले. ही तर मानवनिर्मित किमया आहे. असे ठामपणे त्यांनी सांगितले. ⁰³ सावित्रीबाईंनी प्रत्यक्षात जीवनामध्ये जे अनुभवले तेच शब्दबद्ध केले आहे. त्यांची शिक्षणविषयक प्रेरणा ही बेगडी नव्हती, त्यांनी जाणुनबुजून शिक्षणाचे व्रत घेतले होते. त्यांचे शिक्षणविषयक विचार समजावून घेण्याची तीन साधने महत्त्वाची आहेत.

- 1) सावित्रीबाईंनी लिहिलेली पत्रे
- 2) सावित्रीबाईंची भाषणे
- 3) सावित्रीबाईंचे काव्यसंग्रह

सावित्रीबाईंनी एकूण तीन पत्रे लिहिलीत. त्यातील 10 ऑक्टोबर 1856 ला त्यांनी ज्योतीरावांना नायगाववरून पत्र लिहिले. त्यामध्ये त्यांचे शिक्षणविषयक विचार व्यक्त झाले आहेत. सिदुजी या वडीलबंधूंशी झालेल्या प्रश्नोत्तरांचा सारांश त्या आपल्या पतीला कळवितात. तो असा - 'महार-मांग हे तुझ्या सम मानव असतात. त्यास अस्पृश्य समजतोस त्याचे कारण सांग? भट लोक सोवळ्यात असतात, तुझा विटाळ मानतात, तुला महारच समजतात. माझे बोलणे ऐकून तो लज्जित झाला व पुसू लागला. महारमांगांना तुम्ही कशासाठी शिकवता? याविषयी लोक तुम्हाला अपशब्द देऊन त्रास देतात. हे मला ऐकवत नाही. मी त्यास इंग्रज लोक महारमांगांसाठी काय काम करतात ते सांगून विद्याहीनता ही पशुत्वाची खूण आहे. भट लोकांच्या श्रेष्ठत्वास आधारभूत विद्या हीच आहे. तिचा महिमा मोठा आहे. जो कोणी तिला प्राप्त करून घेईल त्याची नीचता दूर पळून उच्चता त्याचा अंगीकार करील' हा

शिक्षणाचा महिमा त्यांनी पत्रलेखनाच्या माध्यमातून मांडला. हे वास्तव आज अनुभवता येत आहे.

सावित्रीबाईंची 'उद्योग', 'विद्यादान', 'सदाचरण', 'व्यसने व कर्जे' अशी पाच भाषणे उपलब्ध आहेत. त्यातून सावित्रीबाईंचे शिक्षणविषयक विचार दिसून येतात. 'म. फुले यांनी भारतीय संस्कृतीचा नवा अन्वयार्थ लावण्याचा प्रयत्न केला. त्यांनी प्रस्थापित धर्माला आव्हान दिले.'⁰⁴ तसेच विद्यादान हाच माणसाचा खरा धर्म आहे. माणसाच्या अंगी सद्गुण वाढण्यास व आळस, परावलंबन वगैरे दुर्गुण दूर करण्यास विद्या कारणीभूत ठरते. विद्या देणारा व विद्या घेणारा हीच खरी माणसं असल्याचे ते नमुद करतात. या धर्मांमुळे माणसातलं पशुत्व लोप पावते. विद्या देणारा धैर्यशाली निर्भय बनून देणारा सामर्थ्यशाली शहाणा बनतो. सावित्रीबाईंच्या मते उद्योग म्हणजे सदासर्वकाळ मेहनत करणे होय. त्यांच्या मते उद्योगाचे दोन प्रकार आहेत. एक विचारी उद्योग तर दुसरा विचार नसलेला उद्योग. अभ्यास करणे हा एक उद्योग आहे. या उद्योगात डोळे, कान, बुद्धी या इंद्रियांची आवश्यकता असते. त्याला त्यांनी विचार उद्योग म्हटले आहे. 'दे गं माई भाकरी मला' असे ओरडत भीक मागणे हा ही एक उद्योग पण त्यास विचार नसलेला उद्योग म्हणतात.

सावित्रीबाईंच्या मते, 'सदाचरण हे मनुष्यास अधिक सुख प्राप्त करून घेण्याचे व्रत आहे. या व्रताने सर्व संसार दुःखाचा नाश होतो. त्यांनी पुण्यातील बल्लाळपंत गोवंडे या गृहस्थाच्या सदाशिव या पुत्राचे उदाहरण दिले आहे. विद्याग्रहणाबरोबर सदाचरण ठेवून वागल्यामुळे ते कलेक्टरच्या हाताखाली मोठा अधिकारी कसा झाला याचे वर्णन केले आहे. माणसाने व्यसनाधिन होऊ नये अशा लोकांची संगत करू नये. विद्या नसणे हे नाशाचे व अनर्थाचे मूळ आहे. असे त्यांनी आपल्या भाषणाद्वारे ठामपणे सांगितले आहे.

क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले यांचा 'काव्यफुले' हा काव्यसंग्रह 1854 मध्ये प्रसिद्ध झाला. यातील काही कवितांमधून त्यांचे शिक्षणविषयक

विचार दिसून येतात. 'शुद्रांचे दुखणे' या कवितेत त्या लिहितात की,

शुद्रांना सांगण्याजोगा । आहे शिक्षण मार्ग हा,

शिक्षणाने मनुष्यत्व। पशुत्व हटते पहा।

या कवितेमध्ये त्यांनी म्हटले आहे की, 'ज्यामुळे माणसातील पशुत्व जाऊन मनुष्यत्व विकसित होते ते शिक्षण होय' अशी शिक्षणाची व्याख्या त्यांनी केली आहे.

'श्रेष्ठ धन' या कवितेत सावित्रीबाई लिहितात की,

'अभ्यास करा विद्येचा। विद्येस देव मानून घे नेटाने तिचा लाभ मनी एकाग्र होऊन विद्या हे दान आहे रे। श्रेष्ठ साऱ्या धनाहून तिचा साठा जयापाशी। ज्ञानी तो मानती

जन'

या कवितेमध्ये त्यांनी विद्या हे श्रेष्ठ दान असून अज्ञान आपला शत्रू आहे, असा विचार मांडलेला आहे. 'अज्ञान' या कवितेत ते लिहितात-

'एकच शत्रू असे आपला, काढू पिटून मिळुनि तयाला

त्याच्याशिवाय शत्रूच नाही, शोधूनि काढा मनात पाही।'

अज्ञान हाच आपला शत्रू असून शुद्रांच्या परावलंबनाला कारणीभूत असल्याचे म्हटले आहे. विद्या ही केवळ ज्ञानसंवर्धनाकरिता नसून ती नितीधर्म शिकविण्याचे कार्य करते. सावित्रीबाई 'शिकायासाठी जागे व्हा' या कवितेत लिहितात-

'मुलाबाळांना आपण शिकवू, विद्या घेऊनी ज्ञान वाढवून, आपण सुद्धा शिकू'

नीतिधर्मही शिकू' यावरून सावित्रीबाईंना शिक्षण म्हणजे केवळ माहिती कोंबण्याचे एक साधन ही कल्पना अभिप्रेत नसून शिकतांना उच्च दर्जाची नैतिकताही साध्य झाली पाहिजे असे वाटते. मनुष्याचा खरा दागिना शिक्षण असल्याचे सावित्रीबाई आवर्जून सांगतात. शिक्षणासाठी जाती-

पातीचे बंधन नसावे शुद्र-अतिशुद्र मुला-मुलींना शिकण्याची फारच आवश्यकता असल्याचे त्यांनी म्हटले आहे. हा त्या काळातला एक नवा विचार आपल्या काव्याच्या माध्यमातून सावित्रीबाईंनी मांडलेला आहे.

'शिकणेसाठी जागे व्हा' या कवितेत सावित्रीबाई लिहितात-

'उठा बंधुनो, अतिशुद्रानो जागे होऊनी उठा परंपरेची गुलामगिरी ही तोडणेसाठी उठा बंधुनो शिक्षणासाठी उठा

गेले मेले मनु पेशवे आंगलाई आली बंदी मनुची विद्या घेण्या होती ती उठली ज्ञानदाते इंग्रज आले विद्या शिकूनी घ्या रे ऐसी संधी आली नव्हती हजार वर्ष रे'

या कवितेत सावित्रीबाई शुद्रातिशुद्रांना शिक्षणासाठी जागे करत आहेत. सामाजिक आणि मानसिक गुलामगिरी मनुप्रेरित लोकांनी लादली होती ती तोडून टाकण्याचा मौलिक सल्ला ते देतात. इंग्रज खरे ज्ञानदाते असून शिक्षण घ्या आणि पारंपरिक बेडीतून मुक्त व्हा. असे ते अतिशय साध्या, सोप्या आणि सुटसुटीत शब्दात सांगतात. 'ब्रह्मवती शेती' या कवितेत सावित्रीबाई लिहितात-

'ब्रह्म असे शेती। अन्नधान्य देती।

अन्नास म्हणती। परब्रह्म।।

जे करिती शेती। विद्या संपादिती।

तथा ज्ञानवंती। सूची करी।।

या कवितेत त्या म्हणतात की, शेतकऱ्यांनी शेती तर करावीच; परंतु शेतीबरोबर विद्या संपादन करून सुख प्राप्त करावे. सावित्रीबाईंनी शेतीला 'ब्रह्म' असे म्हटले असून अन्नाला परब्रह्म असे म्हटले आहे. शेतकऱ्यांनी अन्नधान्य पिकवून स्वस्थ न बसता ज्ञान संपादन करावे असे म्हटले आहे. यातूनच सावित्रीबाईंची दूरदृष्टी दिसून येते.

सावित्रीबाई फुले यांचा 'काव्यफुले' हा काव्यसंग्रह 1854 मध्ये तर 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' हा काव्यसंग्रह 1891 साली प्रसिद्ध झाला.

त्यांनी या दोन्ही काव्यसंग्रहांना दिलेली नावे अर्थपूर्ण व काव्यमय आहेत. फुले म्हटले की, त्यात विविधता आली. रंगांची नैसर्गिक उधळण आणि त्याबरोबर सुगंधही आला. या फुलांनीच गोःहे यांना फुले बनविले म्हणून त्यांनी आपल्या कवितासंग्रहाला 'काव्यफूले' असे औचित्यपूर्ण नाव देऊन सावित्रीबाईंनी फुले घराण्याची परंपरा राखली व रसिकांबरोबर आपल्या कवितेतील प्रत्येक फुलांचा सुगंध दरवळत ठेवला. 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' या दुसऱ्या काव्यसंग्रहातील प्रत्येक शब्द अर्थपूर्ण आहे. कसोटीला उतरणारे सोने हे बावनकशी असते. यातील विचार अत्यंत सुबोध भाषेत असल्यामुळे ते सहज कळू शकतील असे आहेत. त्याची रचनाही सुबोध अशा भुजंगप्रयात वृत्तातील आहे.

जोतीराव फुले यांच्या कार्याचा व विचारांचा खोल ठसा सावित्रीबाईंच्या अंतःकरणात उमटलेला होता. आपल्या काव्याला प्रेरणाही आपल्या पतीचीच आहे. याची कबुलीही सावित्रीबाई आपल्या काव्यातून देतात. 'सावित्री व जोतिबा संवाद' या 'काव्यफुले' मधील शेवटच्या कवितेत जोतीबाला अज्ञानाचा अंधकार घालविणारा 'सूर्य'असे सावित्रीबाई संबोधतात.

सावित्रीबाईंच्या काव्यात विषयांची विविधता आढळते. त्यांनी निसर्गपर कविता, सामाजिक कविता आत्मपर कविता लिहिल्या आहेत. कवितेतून त्यांचा जीवनानुभव व्यक्त झाला आहे. पिवळा चाफा, जाईचे फुल, जाईची कळी, गुलाबाचे फूल, फुलपाखरं आणि फुलांची कळी इ. कविता निसर्ग जाणिव्या व्यक्त करणाऱ्या आहेत. त्यांची 'पिवळा चाफा' ही कविता वाचली की भा. रा. तांबे यांच्या 'चाफा बोले ना, चाफा चालेना, चाफा खंत करी, काही केल्या बोलेना' या कवितेतील कवीची चाफा फुलाशी झालेली हितगुज आठवते. सावित्रीबाईंनी 'पिवळा चाफा' ही कविता-

'पिवळा चाफा रंग हळदीचा
फुलला होता हृदयी बसतो॥ 1॥

नाव तयाचे सुवर्ण चंपक
सृष्टी दागिना मनास पटतो ॥2॥

सावित्रीबाईंची 'गुलाबाचे फूल' या कवितेत गुलाबाच्या फुलांच्या रंगरुपाचे वर्णन नसून कण्हेरीच्या फुलाशी तुलना आहे. शेवटी गुलाबासारखा मानव हा प्राणी असा तात्विक विचारही आहे.

'गुलाबाचे फूल आणि कण्हेरीचे
स्वरुप दोघांचे एक दिसे ॥1॥

डोंबकावळा तो नसे राजहंस
कृष्ण आणि कंस दुजे असे॥ 2॥

खरे पाहता आधुनिक मराठीतील भावकाव्याची सुरुवात सावित्रीबाईंच्या काव्यापासून सुरु होते.

सावित्रीबाईंनी अनेक सामाजिक कविता लिहिल्या. शुद्र, अतिशुद्रांचे अज्ञान, त्यांची वर्षानुवर्षे झालेली ससेहोलपट व त्यातून इंग्रजीचा अभ्यासाद्वारे अज्ञानाचा अंधाराचा नाश करण्याची संधी असा आशय व्यक्त करणाऱ्या 'अज्ञान' शुद्राचे परावलंबन, शिकणेसाठी जागे व्हा, शुद्र शब्दाचा अर्थ, श्रेष्ठ धन, मनु म्हणजे, शुद्रांचे दुखणे, पेशवाई, आंगलाई वगैरे अज्ञान हा आपला शत्रू असून ज्ञानाचे डोळे नसल्यामुळे आपल्या शोषित बंधु-भगिनींना परावलंबी जिणे जगावे लागत आहे. याची खंत सावित्रीबाईंच्या अनेक कवितांमधून व्यक्त होते.

शुद्र शब्दाचा 'नेटीव्ह' हा अर्थ आहे असे सावित्रीबाई लिहितात-

'खरे शुद्र धनी। होते इंडियाचे
नाव असे त्यांचे। इंडियन
होते पराक्रमी। आमचे पूर्वज
त्यांचेच वंशज। आपण रे ॥

असे वर्णन करून 'शुद्र शब्दाचा अर्थ' या कवितेत शुद्र हे धनी कसे हा विचार व्यक्त केला आहे.

सावित्रीबाईंच्या आत्मपर कविता बऱ्याच आहेत. त्यांच्या विचारांवर त्यांच्या पतीचा प्रभाव असल्यामुळे जोतीबांविषयी त्यांनी बऱ्याच कविता

लिहिल्या आहेत. 'जोतिबा' या कवितेत त्यांनी त्यांच्या कार्याचा परामर्श घेतला आहे. स्वतःची विहिर अस्पृश्यांना खुली करणे प्रसुतिगृह चालविणे, सोपा सत्यधर्म सांगणे, विविध गद्य-पद्य लेखन करणे, शुद्रातिशुद्रासाठी शाळा चालविणे इ. कार्याचा त्यांनी आपल्या कवितेत आढावा घेतला आहे.

सावित्रीबाईंची डोळस पतीनिष्ठा त्यांच्या 'बावनकशी सुबोध रत्नाकर' या काव्यसंग्रहातील उपसंहारातून खालीलप्रमाणे प्रगट होते.

'निराधार दुःखी स्त्रियांचा पुढारी, दुबळ्या अडाणी जनांचा मदारी

कृती तैसा खरा ज्ञानयोगी, स्त्रीशुद्राकरिता इही दुःख भोगी'

दीन, दुबळे निराधार, अनाथ लोकांना सांभाळणारे, शुद्रातिशुद्रांना शिक्षणासाठी प्रेरित करणाऱ्या आपल्या पतीचे त्यांनी शब्दबद्ध केले आहे. "जोतीरावांचे तत्वज्ञान मानवाची प्रतिष्ठा, धार्मिक सहिष्णुता, मानवी हक्क, मानवी समानता यांचा संदेश देत राहिले."⁰⁵ हेच तत्वज्ञान सावित्रीबाईंनी अंगिकारले.

सारांश :-क्रांतीज्योती सावित्रीबाई यांची कविता वैविध्यपूर्ण आहे. माणूस, निसर्ग, समाज, शिक्षण, गुलामगिरी, समता, इंग्रजी विद्या, शुद्र अतिशुद्र समाज इत्यादी कितीतरी विषयांना त्यांची कविता स्पर्श करते. सामाजिक, मानसिक, धार्मिक गुलामगिरीच्या अंधारात जीवन घालवण्यापेक्षा महात्मा फुले यांच्या शिक्षण विचारांनी प्रकाश किरणे चहुबाजुनी जावीत तरच मानवता प्रस्थापित होईल हा आशावाद सावित्रीबाईंच्या काव्यात आढळून येतो. त्याचे काव्य माणसाला विचार करायला लावते. अंधारातून प्रकाशाकडे नेणारे शिक्षण हाच एकमेव मार्ग असल्याचे ते ठामपणे आपल्या काव्यातून शब्दबद्ध करतात. त्यांनी निगर्सपर सामाजिक व आत्मपर जाणिवेच्या कविता लिहून तत्कालीन परिस्थितीला अनुसरून जीवनाभूत अभिव्यक्त केला आहे.

निष्कर्ष :-

- 1) क्रांतीज्योती सावित्रीबाई फुले या महाराष्ट्रातील स्त्री-मुक्ती आंदोलनाच्या पहिल्या अग्रणी भारतातील पहिली स्त्री-शिक्षिका व मुख्याध्यापिका एवढेच नव्हे तर आधुनिक मराठी कवितेच्या अग्रणी होत.
- 2) सावित्रीबाईंनी सामाजिक प्रबोधन व बांधिलकीचा वसा आयुष्यभर जोपासला.
- 3) सावित्रीबाईंनी काव्याबरोबर गद्यलेखन व भाषणे या माध्यमातून स्वतंत्र विचार मांडले. त्यांनी स्त्री शिक्षणाची प्रथम मुहूर्तमेढ रोवली.
- 4) सावित्रीबाईंनी आपल्या काव्याच्या माध्यमातून प्रस्थापितांविरुद्ध बंडाचे निशाण रोवले. वेदपठणाचा अधिकार आम्हास का नाही? असा सरळ प्रश्न त्यांनी प्रस्थापितांना विचारला.
- 5) सावित्रीबाईंनी कवितेतून शुद्रातिशुद्रांना जागे केले. शिक्षणाशिवाय तरणोपाय नाही. ही त्यांची ठाम भूमिका होती. त्यांच्या कार्यात मुस्लीम समाजाच्या फातिमा बेग यांचे मोठे सहकार्य लाभले.

संदर्भ ग्रंथ -

1. प्रा. ना. ग. पवार, 'सावित्रीबाई फुले : अष्टपैलू व्यक्तिमत्व' पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, फेब्रु. 2004, पृष्ठ क्र. 08
2. प्राचार्य शिवाजीराव भोसले, 'दीपस्तंभ', अक्षरब्रह्म प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, एप्रिल 1994, पृष्ठ क्र. 51
3. प्रा. ना. ग. पवार, 'सावित्रीबाई फुले : अष्टपैलू व्यक्तिमत्व' पद्मगंधा प्रकाशन, पुणे, प्रथमावृत्ती, फेब्रु. 2004, पृष्ठ क्र. 13
4. डॉ. प्रल्हाद लुलेकर, साठोत्तरी साहित्य प्रवाह, भाग-1-जोतीपर्व, सायन पब्लिकेशन्स प्रा.लि. पुणे, प्रथमावृत्ती-2014, पृष्ठ क्र. 120

सार्क देशांतर्गत सहकार्यासाठी सार्क उपग्रह

प्रा. डॉ. प्रतिभा सदाशिव देसाई

सहयोगी प्राध्यापक, आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र, महाविद्यालय, गारगोटी
ता. भुदरगड जि. कोल्हापूर

इमेल – drpratibhadesai@gmail.com

सारांश-

दक्षिण आशियाई प्रादेशिक सहकार संघटना (South Asian Association for Regional co-operation (SAARC) सार्क दक्षिण आशिया खंडातील आठ देशांची एक आर्थिक व राजकीय सहयोग संघटना आहे अमेरिका व चीन खालोखाल सार्क सदस्य राष्ट्रांची एकत्रित अर्थव्यवस्था जगात तिसऱ्या क्रमांकावर असून जगातील लोकसंख्येच्या 21 टक्के लोक सार्क क्षेत्रांमध्ये राहतात भारत हा सार्क मधील सर्वात बलाढ्य देश आहे. सार्क ची स्थापना 8 डिसेंबर 1985 रोजी झाली. याचे मुख्यालय काठमांडू, नेपाळ येथे आहे. दक्षिण आशिया मध्ये आर्थिक व सामाजिक प्रगती करण्याच्या उद्देशाने तसेच सांस्कृतिक विकास व विकसनशील देशांबरोबर सहकार्य करण्यासाठी सार्क संघटना उभारण्यात आली. "सार्क उपग्रह" हा भारतीय अवकाश संशोधन संस्था (Indian Space Research Organisation _ ISRO) द्वारा निर्मित सार्क अंतर्भूत प्रदेशासाठी नियोजित उपग्रह आहे. या उपग्रहाद्वारे नैसर्गिक आपत्ती पासून रक्षण करण्यासाठी वास्तविक शास्त्रीय माहिती मिळवून तिचा अनेक समस्या निवारणासाठी उपयोग करून घेणे काळाची गरज आहे. म्हणूनच प्रस्तुत संशोधन पेपरचा हेतू असा आहे की, सार्क उपग्रहाच्या माध्यमातून सर्व देशांना सामाईक प्रश्नांची उकल व्हावी व सार्क उपग्रहाची उपयुक्तता तसेच तंत्रज्ञानाची उपयुक्तता समजून सर्वांनी याचा अभ्यास करावा

Keywords- सार्क देश, सहकार्य, सार्क उपग्रह

प्रस्तावना

दक्षिण आशियाई देशांनी एकत्रित येऊन एप्रिल 1947 ते डिसेंबर 1985 या काळात प्रदीर्घ चर्चा करून दिनांक 8 डिसेंबर 1985 रोजी सार्क संघटनेची ढाका येथे स्थापना केली याबाबत बांगलादेशाचे तत्कालिन अध्यक्ष जनरल इर्शाद यांनी अंतिम पुढाकार घेतला होता. सार्क संघटनेची कल्पना 1950 च्या दशकात Asian Relations conference मध्ये मूळ धरू लागली. 1970 च्या दशकात बांगलादेश, भूतान, भारत, मालदीव, नेपाळ, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगाणिस्तान या देशांना एकत्रितपणे व्यापार व सहकार करण्याच्या हेतूने एका संस्थेची गरज भासू लागली. दक्षिण आशियामध्ये आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास व विकसनशील देशांबरोबर सहकार्य करण्यासाठी सार्क

संघटनेची उभारणी झाली. आजतागायत संघटनेच्या 18 शिखर परिषदा पार पाडल्या आहेत. सार्कच्या सदस्य राष्ट्रांनी नियमित एकत्र येणे अपेक्षित असताना तीन वर्षात फक्त 18 वेळा ते एकत्र आले. यातून सार्कचे अपयश अधोरेखित होते 2016 मध्ये पाकिस्तान येथे होणारी 19 वी शिखर परिषद भारतासह बांगलादेश, भूतान, अफगाणिस्तान यांनी बहिष्कार टाकल्याने रद्द झाली. याला "उरी " येथे झालेल्या दहशतवादी हल्यांची पार्श्वभूमी होती.

संशोधनाची उद्दिष्टे –

प्रस्तुत संशोधन पेपरची उद्दिष्टे पुढीलप्रमाणे

- 1) सार्कच्या पार्श्वभूमी व रचनेचा अभ्यास करणे.
- 2) सार्क उपग्रहाच्या पार्श्वभूमी अभ्यास करणे.
- 3) सार्क उपग्रहाच्या निर्मिती व आवश्यकतेचा अभ्यास करणे.

सार्क पार्श्वभूमी व रचना –

सुरुवातीला भारत बांगलादेश, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान, भूतान, आणि नेपाळ हे सात देश या संघटनेचे सदस्य होते दक्षिण आशियातील देशांचे समाज कल्याण व तेथील लोकांचा जीवन विकास, आर्थिक स्थितीत सुधारणा इत्यादी उद्दिष्टे समोर ठेवून ही संघटना तयार केली गेली होती. या सर्व देशांनी त्यावेळी कृषी, ग्रामीण विकास, दूरसंचार, हवामान, आरोग्य व लोकसंख्या वाढ या क्षेत्रात एकात्मिक कृतिकार्यक्रम राबविण्याचे ठरविले. सार्कच्या स्थापनेनंतर अनेक देश या संघटनेत सदस्य किंवा निरीक्षक म्हणून सहभागी होण्यासाठी प्रयत्नशील होते बऱ्याच वादावादीनंतर एप्रिल 2007 मध्ये अफगाणिस्तानला आठवा सदस्य देश म्हणून या संघटनेत प्रवेश देण्यात आला सध्या ऑस्ट्रेलिया, चीन, इराण, जपान, मॉरिशस, म्यानमार, दक्षिण कोरिया, अमेरिका हे आठ देश व युरोपियन युनियन ही संघटना यांना निरीक्षक देश म्हणून दर्जा देण्यात आला आहे म्यानमारला लवकरच पूर्ण सदस्यत्व दिले जाईल. तर रशिया, दक्षिण आफ्रिका व टर्की हे देश निरीक्षक देशाचा दर्जा मिळावा म्हणून प्रयत्नशील आहेत

सार्क रचना-

नेपाळची राजधानी काठमांडू येथे 16 जानेवारी 1987 रोजी सार्कच्या सचिवालयाची स्थापना करण्यात आली. सार्क च्या सरचिटणीसची नियुक्ती सदस्य देशामधून आळीपाळीने केली जाते. देशामधील विविध शहरातून विविध समित्यांमार्फत सार्कचे काम चालते. सार्कची वार्षिक परिषद (वर्षातून एकदा) देशाच्या नावाच्या आकारविल्हेनुसार त्या-त्या देशात भरते. तत्पूर्वी या देशांच्या परराष्ट्र मंत्र्यांची वर्षातून एकदा बैठक होते. त्या बैठकीला सदस्य देशांचे राष्ट्रप्रमुख /पंतप्रधान उपस्थित राहतात. पूर्वी सदस्य देशातील मतभेदांमुळे या बैठका सौहार्दपूर्ण वातावरणात होत नसत. पाकिस्तान दहशतवादायांना देत असलेल्या

पाठिंब्यामुळे आणि “उरी” येथील लष्करी तळावर झालेल्या हल्ल्यानंतर भारत, बांगलादेश, भूतान आणि अफगाणिस्तान या देशांनी नोव्हेंबर 2016 मध्ये पाकिस्तानात होणाऱ्या सार्कच्या बैठकीवर बहिष्कार घातला होता. त्यामुळे ही बैठक रद्द करावी लागली. सार्क शिखर परिषदांमध्ये दहशतवादाविरुद्ध लढण्यासाठी सदस्य राष्ट्रांच्या व्यापक सहकार्यावर नेहमी भर देण्यात आला आहे. 2015 च्या आकडेवारीनुसार सार्क मध्ये जगाच्या क्षेत्रफळाच्या तीन टक्के भूभाग समाविष्ट होता, तर जगाच्या लोकसंख्येच्या 21% लोकसंख्या या देशांची होती. सदस्य देशांमध्ये आर्थिक आणि क्षेत्रीय सहकार्य वाढावे यासाठी सार्क नेहमीच प्रयत्नशील असते. निरीक्षक या नात्याने सार्कचे संयुक्त राष्ट्र संघाशी कायमस्वरूपी राजनैतिक संबंध आहेत. युरोपियन युनियन व अन्य अनेक आंतरराष्ट्रीय संघटनांबरोबर सार्कने मैत्रीपूर्ण संबंध ठेवले आहेत. सार्कने अल्पकाळात विविध आघाड्यांवर लक्षणीय प्रगती केली आहे. दक्षिण आशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र या सार्क अंतर्गत संघटनेची (SAFTA) स्थापना 2006 मध्ये करण्यात आली. सदस्य देशांमधील व्यापारवृद्धी बाबत या संघटनेला चांगलेच यश मिळाले आहे. सार्क अंतर्गत देशांमधील प्रवासासाठी व्हिसाच्या 24 प्रकारांच्या अतिशय शिथिल करण्यात आल्या. महिला व बालकल्याण, शांतता, विकास, दारिद्र्य निर्मूलन, पर्यावरण रक्षण आणि प्रादेशिक सहकार्य या क्षेत्रात सार्कच्या कामात सहकार्य करणाऱ्यांना अनेक पारितोषिके जाहीर करण्यात आली. सदस्य देशातील नामवंत लेखक व युवकांसाठी ही सार्क पुरस्कार जाहीर करण्यात आले.

सार्क उपग्रह पार्श्वभूमी-

सार्क उपग्रह हा भारतीय अवकाश संशोधन संस्था द्वारा निर्मित सार्क अंतर्भूत प्रदेशासाठी नियोजित उपग्रह इसवी सन 2014 साली नेपाळ येथे झालेल्या सार्क परिषदेत सार्कच्या अपयशाची अनेक कारणे आहेत. लोकसंख्या संसाधने, लष्करी सामर्थ्य,

आर्थिक आणि तंत्रज्ञानात्मक विकास, भौगोलिक स्थान या सर्व बाबत भारत व इतर सार्क देशांमध्ये प्रचंड विषमता आहे. दक्षिण आशियाई प्रदेशातील आर्थिक व राजकीय ऐतिहासिक गुंतागुंत, जागतिक स्तरावर अधिक गरीब लोकसंख्या, तीव्र राजकीय अस्थिरता असणारा प्रदेश या बाबी सार्कदेशांच्या द्विपक्षीय संबंधातील मोठा अडथळा आहे. गेल्या तीस वर्षांच्या सार्क च्या वाटचालीवर दृष्टिक्षेप टाकल्यास ताणलेले द्विपक्षीय संबंध हे सार्कचे यशामधील अडथळा आहे. 1947-48 पासून भारत पाक मधील शत्रुत्वाची भावना, विश्वासाची कमतरता सार्कच्या अपयशाचे मूळ आहे. भारताचे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी यांनी सार्क देशासाठी (अफगाणिस्तान, नेपाळ, पाकिस्तान, बांगलादेश, भारत, भूतान, मालदीव, श्रीलंका) असा उपग्रह सोडण्यात येणार अशी घोषणा केली होती. सार्क उपग्रह विकसित करण्याची संकल्पना तशी जुनी आहे. 26 एप्रिल 1998 ला सार्क देशांच्या माहिती आणि प्रसारण मंत्र्यांनी याविषयी चर्चा केली होती तत्कालिन सार्क महासचिव नईम हसन यांनी याविषयी माहिती देताना नमूद केले होते की, "आम्ही सार्क उपग्रह स्थापण्यासाठी आवश्यक आर्थिक व तांत्रिक शक्यता पडताळून पाहत आहोत". परंतु भारत व पाकिस्तानातील तणावाची छाया या संकल्पनेवर देखील पडली. त्यानंतर एक वर्षाने कारगिल संघर्षामुळे सार्क उपग्रहाचा विचार अडगळीत पडला. आता मात्र मोदींनी सार्क उपग्रहाचा विचार उचलून धरल्यामुळे या संकल्पनेस बळ प्राप्त झाले.

सार्क उपग्रह निर्मिती-

भारताने सार्क देशातील संपर्कासाठी एक दळणवळण उपग्रह देण्याचे मान्य केले आहे. भारतीय अवकाश संशोधन संस्थेचे अध्यक्ष ए.एस. किरणकुमार यांनी 18 महिन्यांचे उद्दिष्ट देऊन सदर सार्क उपग्रह मोहिमेस सुरुवात केली. सदर मोहिमेसाठी चा अंदाजे खर्च 235 कोटी रुपये इतका आहे. पाकिस्तानचा या योजनेला विरोध आहे.

सार्क देशांचा प्रतीसाद-

भारताच्या सार्कउपग्रह मोहिमेबाबत श्रीलंका व बांगलादेश यांनी समर्थन देऊन अनुकूलता दर्शविली आहे. पाकिस्तानने या मोहिमेबाबत सुरुवातीला मौन बाळगले. परंतु नंतर उपग्रह सुरक्षा व मिशन व्याप्ती संबंधित चिंता व्यक्त केली. पाकिस्तानची मुख्य चिंता ही आहे की, उपग्रह भारताला पाकिस्तानची संवेदनशील माहिती डेटाबेस पायाभूत सुविधा यांची माहिती देऊ शकते, की त्याद्वारे चिन्हांकित केले आहे. पाकिस्तानचा या योजनेला विरोध असल्यामुळे पाकिस्तान वगळता अन्य सार्क देशांनी या उपग्रहाचा वापर करण्याचे ठरविले आहे. "सीमाविरहितज्ञान" असे घोषवाक्य असलेले एक दक्षिण आशियाई विद्यापीठ भारताने नवी दिल्ली येथे सुरू केले आहे. या विद्यापीठात अनेक विषयातील संशोधनाची सोय असून अत्यंत समृद्ध ग्रंथालय उभे करण्यात आले आहे. सार्क व अन्य देशातील विद्यार्थी 2014 पासून या विद्यापीठात शिक्षण घेत आहेत. सुमारे सात हजार विद्यार्थी या विद्यापीठात शिक्षण घेऊ शकतील. संघटनेच्या सदस्य देशांमध्ये या विद्यापीठाच्या संलग्न शाखा असतील व तेथेही या विद्यार्थ्यांना संशोधन करता येईल. नवी दिल्लीतील इगू विद्यापीठ व असोला अभयारण्य यांच्या दरम्यान या विद्यापीठासाठी शंभर एकर जागा उपलब्ध करून देण्यात आली आहे.

भारत आणि अन्य सदस्य देश यांची महत्त्वाची भूमिका असलेल्या अनेक जागतिक व प्रादेशिक संघटनांबरोबर सार्क चे मैत्रीपूर्ण संबंध आहेत. त्यामध्ये एशिया को-ऑपरेशन डायलॉग (ACD-34 देश), साऊथ एशिया सब रिजनल इकॉनॉमिक को-ऑपरेशन (SASEC-6 देश), मेकाँग-गंगा को-ऑपरेशन (MGC-6 देश), इंडियन ओशनरिम असोसिएशन (IORA-21 देश), बांगलादेश, भूतान, भारत, नेपाळ सहकार्य (BBIN-4 देश) आणि बंगालच्या उपसागरानजीकच्या देशांची परिषद (BIMSTEC-7 देश) या संघटनांचा यात

समावेश होतो. या संघटनांमुळे सार्कला स्थैर्य प्राप्त झाले आहे. दहशतवादाला उघडउघड पाठिंबा देणाऱ्या पाकिस्तान मुळे सार्क मध्ये मतभेद निर्माण झाले असून या भूप्रदेशातील शांततेला बाधा निर्माण झाली आहे.

सार्क मधील सर्व देशांना विकासासाठी खूप वाव असल्याने अनेक देश निरीक्षक म्हणून या संघटनेत सहभागी झाले आहेत. धोरण आणि उद्दिष्टांची पूर्तता करण्याबाबत सार्कचा प्रभाव हा नेहमीच वादाचा विषय राहिला आहे.

सार्क उपग्रह ची आवश्यकता-

दक्षिण आशियाच्या इतिहासाकडे बघितल्यास असे लक्षात येते की, नैसर्गिक आपत्ती विशेषतः चक्रीवादळे, भूकंप आणि दुष्काळ यांच्यामुळे येथील जनजीवन अनेक वेळा उद्ध्वस्त झाले आहे. आणि नैसर्गिक आपत्ती पासून रक्षण करण्यासाठी वास्तविक शास्त्रीय माहिती मिळवून तिचे संकलन करणे काळाची गरज आहे. या संदर्भात भारतीय दूरसंवेदन उपग्रहांची उपयुक्तता आपत्ती निवारणात वेळोवेळी सिद्ध झाली आहे. भारतीय दूरसंवेदन उपग्रहाद्वारे प्राप्त झालेली माहिती संपूर्ण प्रादेशिक समूहासाठी अत्यंत महत्त्वपूर्ण आहे. प्रस्तावित सार्क उपग्रह दक्षिण आशियातील नैसर्गिक आपत्ती निवारणासाठी महत्त्वपूर्ण ठरेल. त्सुनामी संकटांची पूर्वसूचना मिळणे. अंतराळ तंत्रज्ञानामुळे शक्य होऊ शकते आणि त्यामुळेच दक्षिण आशियातील सागरी किनारा असलेल्या देशांसाठी हे तंत्रज्ञान अत्यंत उपयुक्त आहे. भारताने यापूर्वीच त्सुनामी पूर्वसूचना प्रणाली विकसित केली आहे. जी हिंदी महासागरातील त्सुनामी विषयक धोक्याची पूर्वसूचना देते. या प्रणालीच्या उपलब्धतेमुळे सार्क च्या नवी दिल्ली स्थित आपत्ती व्यवस्थापन केंद्राला अधिक परिणामकारकरीत्या कार्य करता येईल. दक्षिण आशिया अनेक समस्यांना सामोरे जात आहे आणि त्याचा सामना करणे एका देशाला शक्य नाही. सार्क उपग्रह या सर्व जटिल प्रश्नांवरील एकमेव

रामबाण उपाय नक्कीच नाही, पण या उपग्रहाच्या माध्यमातून सर्व देशांना सामाईक प्रश्नांच्या सोडवणुकीसाठी काम करण्याची संधी मिळेल.

निष्कर्ष-

उद्दिष्ट क्रमांक 1,2, 3 नुसार निष्कर्ष पुढीलप्रमाणे आहेत.

उद्दिष्ट क्रमांक 1 - सार्कच्या पार्श्वभूमी व रचनेचा अभ्यास करणे.

उद्दिष्ट क्रमांक 2 - सार्क उपग्रहाच्या पार्श्वभूमी अभ्यास करणे.

उद्दिष्ट क्रमांक 3 - सार्क उपग्रहाच्या निर्मिती व आवश्यकतेचा अभ्यास करणे.

निष्कर्ष

1. 8 डिसेंबर 1985 रोजी सार्क संघटनेची ढाका येथे स्थापना झाली.
2. स्थापनेच्या वेळी भारत, बांगलादेश, पाकिस्तान, नेपाळ, भूतान, श्रीलंका व मालदिव असे सात सदस्य देश होते. 2007 साली या मध्ये अफगाणिस्तानला सार्कचा आठव्या सदस्य देश म्हणून मान्यता दिली.
3. दक्षिण आशियाई देशातील सामाईक प्रश्न सोडविणे, एक सामुहिक बाजारपेठ निर्माण करणे या हेतूने सार्क परिषदेची स्थापना झाली.
4. स्थापनेपासून 30 वर्षांपेक्षा अधिक कालावधीत सार्क संघटनेची वाटचाल समाधानकारक नाही.
5. सार्क अधिवेशनात महत्त्वाचे निर्णय घेतले जातात पण ते कागदोपत्री राहतात.
6. सार्क संघटना निर्णय अंमलबजावणीतील एक अडथळा म्हणजे भारत-पाकिस्तान मधील राजकीय संघर्ष व दुसरे म्हणजे विश्वासाची कमतरता. सार्क संघटनेतील बहुतेक निर्णय पाकिस्तानच्या आडमुठ्या धोरणामुळे पूर्णत्वाला येऊ शकले नाही.
7. सार्क संघटनेतील देशात गरिबी, बेकारी, निम्न जीवनस्तर, दहशतवाद, धार्मिक मूलतत्त्ववाद, निरक्षरता, लोकसंख्यावाढ, नैसर्गिक आपत्ती

- यांसारखे काही समान प्रश्न आहेत. त्यावर सहकार्यांच्या माध्यमातून तोडगा काढणे शक्य आहे.
8. भारताने सार्क उपग्रहाची निर्मिती केली आहे. सार्क सदस्य देशांना दळणवळण, नैसर्गिक आपत्ती, कृषी व ग्रामीण विकास, शांतता, दूर संचार, हवामान, आरोग्य इत्यादी सामाईक प्रश्न सोडविण्यासाठी या उपग्रहाची उपयुक्तता आहे.
- संशोधन शिफारशी-** संशोधिकेने पुढील शिफारशी मांडल्या आहेत.
1. सार्कला यशस्वी व्हायचे असेल तर प्रथम सार्क देशांनी परस्परांमधील व्यापार वाढवायला हवा. त्यासाठी एअर लँड, रेल कनेक्टीव्हिटी ची आवश्यकता आहे.
 2. भारत-पाकिस्तान राजकीय संघर्ष संपविणे आवश्यक आहे.
 3. युरोपमधील लोकांप्रमाणे दक्षिण अशियातील लोकांनी पुढाकार घेऊन सार्कला यशस्वी बनवायला हवे.
 4. सार्क सारखी उत्तम संकल्पना काही नेत्यांच्या अडमुठे धोरणाला बळी पडायला नको.
 5. सार्कने सार्क उपग्रहाचा वापर करून सार्क देशातील सामाईक प्रश्न सोडविण्याचा अधिकाधिक प्रयत्न करावा.
4. कदम, गणेश पांडुरंग (30 नोव्हेंबर 2014) महाराष्ट्र टाईम्स
 5. पवार, विजय (2 एप्रिल 2019) Marathi vishwa kosh.org/83 Retrived on 10 Jan 2022
 6. चौगले, प्रविण (8 डिसेंबर 2016) युपीएससी ची तयारी : सार्कची 30 वर्षे लोकसत्ता
 7. <http://www.saarc-sec.org/SAARC-charter/5/>.accessedon1stMay2017 Retrived on 14Jan2022
 8. quora.com/what-are-the-functions-of-SAARC; accessed on 1st May 2017 Retrived on 14 Jan 2022
 9. preserver-articles.Com/2012020222426/brief-notes-on.... The Organization structure of SAARC accessed on 1st May 2017 Retrived on 14 Jan 2022
 10. [saarc – sec. org](http://saarc-sec.org) ;accessed on 1st May 2017 Retrived on 14 Jan 2022
 11. [www.mr.m.wikipedia .org/wiki/](http://www.mr.m.wikipedia.org/wiki/) दक्षिण आशियाई प्रादेशिक सहकार संघटना Retrived on 13 Jan 2022

संदर्भ-

1. Best, J. W (2007) Research in Education Englewood cliffs N. J prentice Hall
2. Kothari, C. R (2005) Research methodology New age , International (p) Limited, publishers. Ansari Road , Daryaganj, New Delhi.
3. भावठाणकर, अनिकेत (7 डिसेंबर 2014) सार्क उपग्रह : एक आशेचा किरण, लोकसत्ता Retrived on 10 jan 2022

महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण

डॉ. गौरी सिंह परते

सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान शासकीय महाविद्यालय मेंहदवानी जिला-डिन्डौरी म.प्र.

Email: parte1980.2011@gamil.com

स्वातंत्रता के पश्चात् भारतीय नारी की स्थिति में काफी सुधारात्मक परिवर्तन हुए हैं। फिर भी आजादी के ७५ वर्षों के पश्चात् कानूनी दृष्टिकोण से नारी अपराधों के पर्दा से अभी तक उभर बाहर नहीं आयी है। नारी की गरिमामयी स्थिति को बनाये रखने के लिए बहुत सारे कानून बनाये गये हैं। किन्तु पर्याप्त कानूनी शिक्षा के अभाव में कानूनों की जानकारी उनको नहीं मिल पाती, यहाँ तक कि अधिकांश महिलाओं को पता ही नहीं हो पाता कि उनके कौन कौन से अधिकार प्राप्त हैं। विश्व एवं समग्र राष्ट्रीय विकास में जिन आधारभूत विषयों पर विचार किये जाने की शतत् आवश्यकता है, उनमें महिला सशक्तिकरण का समस्या सम्भवतः सर्वोपरि है। यद्यपि स्वातंत्रता के पश्चात् भारत में महिलाओं की स्थिति सुधारने की दिशा में विविध-विशेषकर ७३वें संवैधानिक संशोधन, १९९३ के पश्चात्-निरन्तर प्रयास हुए हैं तथापि अभी भी इस दिशा में राज्य और समाज द्वारा अपने प्रयत्नों को और अधिक तीव्र किए जाने की आवश्यकता बनी हुई है। जिससे महिलाओं को समानता का सम्मान एवं अधिकार मिल सके। इस तरह से इन्हें उभरते आयामों को उद्घाटित करने का एक विनम्र प्रयास है।

कुंजी शब्द- सामाजिक न्याय, अधिकार, सम्मान, धरलू हिंसा, नैतिक बल, आरक्षण, प्रतिबद्धता, जागरूकता।

प्राचीन काल में स्त्री की दशा :- प्राचीन काल से भारतीय समाज में स्त्रियों की सम्मानपूर्ण स्थिति रही है। स्त्री को शक्ति की साकार प्रतिमा के रूप में जाना जाता है। भारतीय इतिहास का प्रारम्भ वैदिक युग से होता है। ऋग्वैदिक काल में स्त्रियों को ऊँचा स्थान प्राप्त था उस युग में नारी का समाज में आदर था। वह जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती थी। उसे पुरुष के समान ही सभी अधिकार प्राप्त थे। उस युग की कुछ ऐसी नारियाँ हैं, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर ऋषियों का पद प्राप्त किया था। किन्तु इसी का दूसरा पूर्णतः भिन्न पहलू सीता, द्रौपदी व शकुन्तला के रूप में देखने को मिलता है। इन्हें क्या-क्या नहीं भोगना पड़ा। सम्पूर्ण भारत भारतीय नारी के आँसुओं से भीगा हुआ है। रामायण, महाभारत, कुमारसम्भव, स्वप्न वासवदत्तम् मृच्छकटिकम् में इसके घोषणा पत्र दर्ज हैं।^१

मनु के अनुसार तो "स्त्री के लिए पति सेवा ही गुरुकुल में वास और गृह कार्य अग्नि होम है।"^२ भारत में आज भी सामाजिक व्यवस्था ऐसी है जिसमें महिलाएं पिता या पति पर ही आर्थिक रूप से निर्भर करती हैं तथा निर्णय लेने के लिये भी परिवार के पुरुषों पर निर्भर करती हैं। महिलाओं को न तो घर के मामलों की निर्णय प्रक्रियता में शामिल किया जाता है और न ही बाहर के मामलों में। इस संदर्भ में सीमोन ट बोउवार का यह कथन विशेष महत्व रखता है कि "स्त्री पैदा नहीं होती बल्कि बना दी जाती है।"^३ किन्तु यदि स्वातंत्र्योत्तर भारत में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण करें, तो भारतीय नारी का आधुनिक रूप देखने को मिलता है।

महिलाओं की स्थिति में सुधार हेतु प्रयास :- महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए व्यापक प्रयास किए गए जिसके फलस्वरूप आधुनिक भारतीय नारी की स्थिति में निरंतर सुधार हुआ है। पश्चिमी शिक्षा के प्रचार-प्रसार और उन्नीसवीं सदी के बदलते परिवेश में बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा विवाह आदि सामाजिक बुराइयों से जकड़ी होने के कारण महिलाओं को नए

वातावरण के अनुरूप ढलने में कठिनाइयों हो रही थी। इन परिस्थितियों को दूर करने के लिए तत्कालीन समाज सुधारकों ने पश्चिमी उदारवादी विचारधारा से प्रभावित होकर तत्कालीन शासकों के साथ मिलकर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कई प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए।^४

महिला सशक्तिकरण से अभिप्राय :- महिला सशक्तिकरण की अवधारणा, वास्तव में सशक्तिकरण अपने आप में एक व्यापक अर्थ को समेटे हुए है, इसमें अधिकारों तथा शक्तियों का स्वाभाविक रूप से समावेश हुआ प्रतीत होता है। सशक्तिकरण एक मानसिक अवस्था है जो कुछ विशेष आन्तरिक कुशलताओं और शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आदि परिस्थितियों पर आधारित होती है। जिसके लिए समाज में आवश्यक कानूनों, सुरक्षात्मक प्रावधानों और उनके भली-भाँति क्रियान्वयन हेतु सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था होना भारत में महिला सशक्तिकरण अत्यन्त आवश्यक है। वास्तव में सशक्तिकरण एक सक्रिय तथा बहुआयामी प्रक्रिया है जिसे राज्य के सक्रिय हस्तक्षेप के बिना समाज के सम्बन्धों में इसे प्राप्त नहीं किया जा सकता है। महिला सशक्तिकरण से तात्पर्य एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया से है जिसमें महिलाओं के लिये सर्वसम्पन्न तथा विकसित होने हेतु सम्भावनाओं के द्वार खुलें, नये विकल्प तैयार हों, भोजन, पानी, घर, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुविधाएं, शिशु पालन, प्राकृतिक संसाधन, वैकिंग सुविधाएं, कानूनी हक तथा प्रतिभाओं के विकास हेतु पर्याप्त रचनात्मक अवसर प्रदान हों।

पैलिनीशूयर्ड ने लिखा है कि "महिला सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के विकास की प्रक्रिया में राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को पुरुषों के बराबर मान्यता दी जाती है।"^५ गांधी जी का कथन है कि "स्त्रियों को अबला कहना उचित नहीं है। यह पुरुषों का स्त्रियों के प्रति अन्याय है। यदि शक्ति का तात्पर्य पार्श्विक शक्ति से है तो स्त्री निश्चय ही पुरुष से कम पशुवत् है। यदि शक्ति का

तात्पर्य नैतिक बल से है तो महिला पुरुष से कहीं आगे है।⁶ गांधीजी का नारी की शक्ति व क्षमता में अटूट विश्वास था। वे आशा करते थे कि भारत की महिलाएं स्वयं पर निर्भर रहें एवं स्वयं ही अपनी उन्नति के लिये प्रयास करें। महिला सशक्तिकरण एक बहुआयामी अवधारणा है जिसके लिये शिक्षा की अहम भूमिका है यह महिलाओं के संवांगीण विकास के लिये प्रथम एवं मूलभूत साधन है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से महिलाएँ समाज में सशक्त समान एवं महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकेंगी। शिक्षित महिलाएं न केवल स्वयं आत्मनिर्भर एवं लाभान्वित होती हैं अपितु भावी पीढ़ी के उत्थान में भी सहायक सिद्ध होती हैं। जैसा कि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो० अर्मन्थ सेन ने लिखा है कि "महिला सशक्तिकरण से न केवल महिलाओं के जीवन में निश्चित रूप से सकारात्मक असर पड़ेगा बल्कि पुरुषों व बच्चों को भी लाभ होगा। भारतीय समाज में महिलाओं की हीन स्थिति की वजह से समाज में व्याप्त सामान्य बदहाली को कारण तरीके से दूर करने में कामयाबी नहीं मिल पा रही है। इस तरह महिलाओं के माध्यम से बालिका और वयस्क महिलाओं दोनों की खुशहाली सुनिश्चित की जा सकती है।"⁹

महिला सशक्तिकरण की अवधारणा के लिये भारतीय समाज में चली आ रही परम्पराएं, विश्वास, मूल्य, रीति-रिवाज व शिक्षा की प्रक्रियाएं आदि अनेक चुनौतियाँ हैं किन्तु सम्भावनाएं भी उतनी ही ज्यादा हैं क्योंकि प्राचीन भारतीय समाज और वर्तमान-समाज की महिलाओं की स्थिति की तुलना करें तो हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि महिलाओं की स्थिति में काफी सकारात्मक बदलाव आये हैं। आज खेलों से लेकर सेना, राजनीति, मीडिया और अन्य सभी महत्वपूर्ण जगहों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। श्रीमती इन्दिरा गांधी, किरण बेदी, सुषमा स्वराज्य, सानिया मिर्जा, एमसी मैरी कॉम, सुमित्रा महाजन, ममता बनर्जी, लता मंगेशकर जैसी महिलाओं ने भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। परिवर्तन चाहे सोच में हो या समाज में एक दिन में नहीं लाया जा सकता इसमें सन्देहों लगे जाती हैं। किन्तु यह वास्तविकता है कि भारत में महिलाओं के प्रति व्यवहार में आजादी के पहले और उसके बाद की परिस्थितियों में काफी बदलाव आया है।

जीवनदायनी पूजनीय मातृशक्ति :- आज के वैश्वीकरण दौर में हम सभी देशवासियों को समझ रहे हैं यह समझ लेना चाहिए कि महिलाएं कोई बाजार में बिकने वाली वस्तु नहीं हैं वो जीवनदायनी पूजनीय मातृशक्ति ईश्वर की सबसे सुंदर व अनमोल रचनाओं में से एक हैं। इसलिए आज 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर हम देशवासियों को यह संकल्प लेना चाहिए कि वो महिलाओं का दिल से सम्मान करते हुए उनके सम्मान के अधिकार की रक्षा करेंगे और उनको समाज में प्रगति करने के लिए समान अवसर मुहैया करवाएंगे। भारत सरकार द्वारा किये गये प्रयासों में राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण नीति २००१, महिलाओं पर घरेलू हिंसा निरोधक अधिनियम २००१, भारतीय तलाक संशोधन अधिनियम २००१, बालिका

अनिवार्य शिक्षा एवं विधेयक २००१, परित्यक्ताओं के लिये गुजारा भत्ता संशोधन अधिनियम बिल २००१, भ्रूण हत्या रोकने हेतु अधिनियम, महिला शक्ति पुरस्कारों की घोषणा इस दिशा में सराहनीय कदम कहे जा सकते हैं इसके अतिरिक्त भारत सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण की दिशा में महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से सबलता प्रदान करने के लिये नई विकास तथा कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा की गयी है। इसके लिये पूर्व में संचालित विशेष योजनाओं तथा न्यू मॉडल चर्खा योजना १९८७, महिला समाख्या योजना १९८९, नौराड प्रशिक्षण योजना १९८९, राष्ट्रीय महिला कोष की मुख्य ऋण योजना १९९३, मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य कार्यक्रम १९९२, ऋण प्रोत्साहन योजना १९९३ तथा विपणन वित्त योजना १९९३, के अतिरिक्त राष्ट्रीय मातृत्व लाभ योजना १९९७, ग्रामीण महिला विकास योजना १९९६, मार्जिन मनी ऋण योजना १९९७, स्वास्थ्य सखी योजना १९९७, इवामुआ योजना आदि।"^६

महिलाओं के प्रति शिक्षा का महत्व :- पुरुष और महिला इस समाज के एक सिक्के के दो पहलु हैं तो फिर शिक्षा भी एक समान प्राप्त होनी चाहिए। जिस तरह पुरुष का शैक्षिक जीवन इस समाज के विकास के लिए महत्वपूर्ण है उसी प्रकार महिला शिक्षा भी देश के हित के लिए आवश्यक है। किसी भी तरह की नकारात्मक सोच इस समाज के विकास का रोड़ा बन सकती है। आज के इस युग में स्त्री पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही हैं। हर एक क्षेत्र में महिला आज कुशल बनना चाहती हैं। वह घर की देखभाल के साथ-साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लालायित हैं। शिक्षा के बिना संस्कार का कोई स्थान नहीं है और एक शिक्षित माँ ही संस्कार का उपचार है। इस दुनिया में विद्या के समान कोई क्षेत्र नहीं है और माता के समान कोई गुरु नहीं है। स्त्री शिक्षा के महत्व ने ऐसी लड़ाइयों पर विजय पाई है, आजकल समाज के ये दोनों पहलु स्त्री शिक्षा के महत्व को समझकर एक विकसित देश की नींव दे रहे हैं।

स्त्री शिक्षा का समाज पर प्रभाव :- एक स्त्री शिक्षित होती है तो वह अपनी शिक्षा का उपयोग समाज और परिवार के हित के लिए करती है। एक शिक्षित स्त्री के कारण देश की आर्थिक स्थिति और घरेलू उत्पादन में बढोत्तरी होती है। एक शिक्षित नारी घरेलू हिंसा और अन्य अत्याचारों से सक्षमता से निजाद पा सकती है। स्त्री शिक्षा का प्रभाव परिवार, समाज और देश के हर क्षेत्र में अहम योगदान देता है। देश के हर उच्च पद पर आज महिलाओं ने महत्वपूर्ण फर्ज निभाया है। अभी भी समाज में स्त्री को शिक्षा का समान दर्जा दिलाने की जागरूकता है। आज भी समाज में भेद-भाव की प्रचलन है, जिसके चलते सिर्फ लड़कों को ही शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति होती है। देश में महिला सशक्तिकरण को और मजबूत करने की जरूरत है। जब महिलाएं अपने अधिकारों से परिचित होंगी तभी वह सही कदम उठा पाएंगी। कई समाजिक एवं राजनीतिक संगठन और संस्थानों को स्त्री शिक्षा के महत्व के लिए इस समाज को जागरूक करने की आवश्यकता है।

स्त्री शिक्षा की आवश्यकता :- एक स्त्री शिक्षा के बिना एक विकसित समाज की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। स्त्री शिक्षा की आवश्यकता इस समाज और देश को है जैसे-

- स्त्री शिक्षा से बौद्धिक विकास प्राप्त होगा जिससे समाज के व्यवहार में सरसता आएगी।
- मनसिक और नैतिक शक्ति के विकास में महिलाएं पुरुषों का सम्पूर्ण योगदान दे रही हैं।
- एक शिक्षित महिला गृहस्त-जीवन में शांति और खुशहाली का स्रोत होती है।
- स्त्री शिक्षा हमारे संस्कृति के ऊर्जा और विकास का संचार है।
- जब कभी नए समाज की स्थापना की जाती है तो शिक्षित महिलाएं ही एक बेहतर अकार और व्यवस्था प्रदान करती हैं।

महिलाओं के लिए संवैधानिक उपबंध :- भारतीय संविधान में महिलाओं पुरुष प्रधानता के बीच भेद-भाव उन्मूलन हेतु संवैधानिक उपबंध किये गये हैं जो इस प्रकार हैं- भारतीय संविधान का अनुच्छेद १४ के अनुसार "भारत राज्य क्षेत्र के किसी व्यक्ति को विधि के समक्ष समता से अथवा विधियों के समान संरक्षण से वंचित नहीं किया जाएगा।" समता से तात्पर्य यहां पर यह है कि स्त्री और पुरुष में किसी प्रकार का लिंग भेद नहीं है तथा यह अधिकार स्त्री और पुरुष दोनों को समान रूप से प्राप्त है। भारतीय संविधान में स्पष्ट है कि पुरुष और महिला को समान अधिकार प्रदान किये गये हैं, अनुच्छेद १५ के खण्ड ३ में महिलाओं के लिए विशेष व्यवस्था भी की गई है क्योंकि महिलाओं की स्वाभाविक प्रकृति के कारण उन्हें विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है। अनुच्छेद १५ में महिलाओं को स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान किया गया है, ताकि वह स्वतंत्र रूप से भारत में आवागमन, निवास एवं व्यवसाय कर सकती हैं। महिला होने के कारण किसी भी कार्य से उनको वंचित करना मौलिक अधिकार का उल्लंघन माना गया है। अनुच्छेद २३-२४ द्वारा महिलाओं के विरुद्ध होने वाले शोषण को नारी गरिमा के लिए उचित नहीं मानते हुए महिलाओं की खरीदी और बिक्री, वैश्यावृत्ति के लिए जबरदस्ती करना, भीख मांगवाना आदि को दण्डनीय माना गया है। आर्थिक न्याय प्रदान करने हेतु अनुच्छेद ३९ (क) में स्त्री को जीविका के पर्याप्त साधन प्राप्त करने का अधिकार एवं अनुच्छेद ३९ (द) में समान कार्य के लिए समान वेतन का उपबंध है। अनुच्छेद ४२ के अनुसार महिलाओं को विशेष प्रसूति अवकाश प्रदान करने की बात कही गई है। अनुच्छेद २४३ (द) (३) में प्रत्येक पंचायत में प्रत्यक्ष निर्वाचन से भरे गये स्थानों की कुल संख्या के १/३ स्थान महिलाओं के लिए आरक्षित रहेंगे और इसी चक्रानुक्रम से पंचायत के विभिन्न निर्वाचन क्षेत्रों में आवंटित किये जाएंगे। अनुच्छेद ३२५ के अनुसार निर्वाचक नामावली में महिला एवं पुरुष दोनों को ही समान रूप से सम्मिलित होने का अधिकार प्रदान किया गया है। भारत में पुरुष और महिला को समान मतदान का अधिकार दिये गये हैं।"^३

भारत में महिला सशक्तिकरण उभरते आयाम :- १९९७, राज राजनेश्वरी बीमा योजना १९९७, आदि को भी

साथ-साथ व्यापक संचालित करने का प्रयास किया गया इनके अतिरिक्त कुछ नई संचालित की गयी योजनाओं में किशोरी शक्ति योजना, महिला स्वयं सहायता योजना, महिला स्वास्थ्य योजना, महिला उद्यमियों हेतु ऋण योजना, स्व शक्ति योजना आदि प्रमुख रूप से उल्लेखनीय रही हैं। भारत सरकार द्वारा पहले से चली आ रही बालिका समृद्धि योजना में व्यापक संशोधन कर इसे और अधिक व्यावहारिक बनाने का भी प्रयास किया गया है। साथ ही महिलाओं के विकास के लिये भारत सरकार ने कुछ अन्य योजनाओं जैसे बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, उज्वला योजना, सुकन्या योजना, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना आदि की भी शुरुआत की है। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण आंदोलन में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तर पर महिलाएं निश्चित रूप से राजनीतिक शक्ति बन कर उभर रही हैं यद्यपि सदियों से पराश्रित एवं शोषित, महिलाओं की स्थिति में एकाएक सुधार संभव नहीं है लेकिन सरकार द्वारा किये गये प्रयासों से कुछ लाभ अवश्य होगा। महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने में ७३वें संविधान संशोधन अधिनियम १९९३ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। रूढ़िवादी शक्तियों के विरोध के बावजूद महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई है। महिलाओं ने अपनी शक्ति, सामर्थ्य और विवेक से निर्णय लेने की क्षमता के कई उल्लेखनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। जैसे-जैसे निर्वाचित महिलाओं में राजनीतिक सशक्तिकरण की प्रक्रिया बढ़ी है उन्होंने शराबखोरी, घरेलू हिंसा और बाल विवाह जैसी- सामाजिक बुराइयों से भी लड़ना आरम्भ कर दिया है।"^४ उपर्युक्त नियमों एवं संवैधानिक प्रावधानों ने महिलाओं को शोषण से मुक्ति में सहायता की है, इसमें कोई संदेह नहीं है परन्तु संवैधानिक अधिकार ही महिलाओं को सशक्त बना देंगे ऐसा भी नहीं है जब तक व्यावहारिक जगत में इसका कुशल अनुप्रयोग नहीं होगा तथा समाज की मानसिकता नहीं बदलेगी, महिलाओं का सशक्तिकरण संभव नहीं है। संवैधानिक अधिकार महिलाओं को तभी सशक्त बनाएंगे जब वे स्वयं इस लायक बनेंगी कि उनका उपयोग कर सकें।

निष्कर्ष :-

महिलाओं को प्रदत्त अधिकारों एवं उनके लिए बनाये गये अधिनियमों के बाद भी महिलाओं की स्थिति शोचनीय है। महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिए पर्याप्त अधिनियम हैं, जिनके कारण महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं हो पा रहा है। स्वतंत्रता के पश्चात् से वर्तमान तक विभिन्न अधिनियम जैसे- हिन्दु विवाह अधिनियम, विशेष विवाह अधिनियम, विवाह-विवेक व तलाक अधिनियम, वैश्यावृत्ति उन्मूलन अधिनियम, गर्भपात की विकित्सा द्वारा मान्यता जैसे प्रमुख सुधारों से महिलाओं की सामाजिक स्थिति में पर्याप्त अंतर आया है, फिर भी बहुत सी कमियाँ हैं, जिनकी वजह से इन कानूनों का लाभ महिलाएँ नहीं उठा पातीं। यद्यपि भारत सरकार द्वारा अब तक महिला सशक्तिकरण की दिशा में अनेक प्रयास किये गये जिनके परिणाम आगामी वर्षों में दिखाई पड़ेंगे

वैसे इन परिणामों की अपेक्षा तब ही की जाती है जब इस मुद्दे को लगन, उत्साह, तथा प्रतिबद्धता के साथ संचालित किया जा सके। इस अवधि में लिये गये निर्णय तथा उठाए गये विशेष कदमों का निरंतर मूल्यांकन होता रहे तथा यस्ते में आने वाली बाधाओं तथा कठिनाईयों का प्राथमिकता के आधार पर स्थायी हल खोजा जा सके। इसके लिए उन्हें अधिक से अधिक शिक्षित एवं सशक्त होना होगा ताकि उनमें जागरूकता का संचार हो सके और वे अपने अधिकारों की लड़ाई स्वयं लड़ने में सक्षम हो सकें। तभी वास्तविक अर्थों में महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की दिशा में उठाये गये कदम सार्थक कहे जा सकेंगे।

सन्दर्भ

१. मनु : मनुस्मृति, ३/११-११।
२. ज्ञानेन्द्र रावत: औरत-एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, विश्वभारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, २०१२, पृ. ०४,
३. मनु : मनुस्मृति, ३/११-११।
४. डॉ० प्रभा खेतान: स्त्री उपेक्षिता, - प्रकाशक: हिन्दू पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड जे-४० जोरबाग लेन, नई दिल्ली-२००२ पृ. १४,
५. पैलिनीशूयर्स जी: इण्डियन जनरल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, जनवरी-मार्च २००१, पृ. ३३,
६. महात्मा गांधी: रंग इण्डियन (१९१९-१९२२) पृ. १६१।
७. डॉ० अर्मन्थ सेन : इंडिया : इकोनॉमिक डवलपमेन्ट एण्ड सोशल अप्रोच्युनिटी, प्रकाशन, जीन ड्रूजी वलरेन्ड, प्रेस (१९९९) पृ. १३,
८. डॉ० दुर्गादास बसु: 'भारत का संविधान एक परिचय' प्रकाशन, वाधवा एण्ड कम्पनी, नागपुर, २०००,
९. भारत में केन्द्र सरकार द्वारा पारित अधिनियम व योजनाएँ।
१०. मुन्नी पंडलिया- "भारत में पंचायती राज व्यवस्था" प्रकाशन अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा०) लि० अ सारी रोड नई दिल्ली, २००४, पृ. ९,
११. देसाई नीरा और गैत्रयी कृष्णराज वीमेन एण्ड सोसायटी इन इंडिया अजंत पब्लिकेशंस दिल्ली १९८७, पृ. ४६,

लोकसाहित्याचे अध्यापनातील महत्व

प्रा.डॉ. संतोष सदाशिव देडे

मराठी विभाग प्रमुख श्री शिवाजी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, राजुरा, जि. चंद्रपूर

प्रस्तावना :

लोकसाहित्य हे सांस्कृतिक मूल्यांचे जतन करणारे अक्षर वाङ्मय आहे. आपल्या संस्कृतीचा अनमोल ठेवा म्हणजे लोकसाहित्य. “लोकांमध्ये प्रचलित असलेल्या मौखिक परंपरा म्हणजे लोकसाहित्य असते, लोकसाहित्य लोकांचे असते, व्यक्तीचे कधीही नसते.” अर्थातच लोकसाहित्य हे समाजाचे व देशाचे धन आहे, तो अमूल्य असा खजिना आहे. लोकसाहित्यात प्रामुख्याने लोकजीवनाचे, लोकसंस्कृतीचे प्रतिबिंब पडलेले आहे. लोकसाहित्यात लोकांचा आत्मा अंतर्भूत असल्यामुळे हे साहित्य जिवंत स्वरूपाचे वाटते. लोकसाहित्य आणि लोकजीवन यांचे अतुट नाते आहे. “लोकसाहित्यातूनच लोकसंस्कृतीचे दर्शन घडते. ही लोकसंस्कृती व्यक्तीमध्ये साकारते, जिवंत होते आणि लय पावते.” याचाच अर्थ असा की, लोकजीवनातून लोकसाहित्य फुलते आणि बहरून येते. या साहित्यातूनच लोकमानसाचे प्रतिबिंब पडलेले असते. त्यामुळे आपल्याला लोकजीवनाचे अनेकविध विशेष लोकसाहित्यात पाहण्यास मिळते. “लोकसाहित्य ह्या लोकजीवनाचा एक अविभाज्य घटक असते. लोकसाहित्यातून व्यक्त होणारे जीवन समाज जगत असतो. त्या साहित्यातून समाजाची कोणती तरी गरज पूर्ण होत असते. लोकसाहित्यातून समाजजीवनाचा आविष्कार होत असतो आणि समाजजीवनाला आकार देण्याचे कार्य लोकसाहित्यातून घडत असते.” लोकजीवनातील सुखदुःखाचे, आचार—विचाराचे, रीतीरिवाजांचे, संस्कृतीचे, लोकांच्या जीवन जगण्याच्या पद्धती इत्यादी प्रकारांचे प्रामुख्याने दर्शन आपणांस होताना दिसते, म्हणून लोकसाहित्याच्या अभ्यासाने त्यांच्या लोकमानसाचा, लोकजीवनाचा आपणांस शोध घेता येतो.

लोकसाहित्याचा अभ्यास म्हणजे लोकजीवन संस्कृतीचा अभ्यास आहे. मानव व त्याच्या सभोवतालची चराचर सृष्टी हिचे नाते लोकसाहित्याच्या अभ्यासाने तर विशेष लक्षात येते. लोकसाहित्याच्या प्रांगणात भारतीय संस्कृतीचे दर्शन होते. काही राष्ट्रांनी तर लोकसाहित्याला ‘धार्मिक गाथा’ म्हणून संबोधले आहेत. लोकसाहित्याचा अभ्यास अनेक दृष्टिकोनातून करता येतो. शिवाय समाजशास्त्र, इतिहास, मानववंशशास्त्र, मानसशास्त्र, पुरातत्वशास्त्र इत्यादी शास्त्रांनी त्याचा स्पर्श होतो. या वेगवेगळ्या शास्त्रांच्या अभ्यासातून मोठ्या प्रमाणावर विचारवंत लोकसाहित्याच्या अभ्यासाकडे लक्ष केंद्रित करतांना दिसतात. इतके लोकसाहित्याचे क्षेत्र व्यापक व विशाल आहे. त्या त्या शास्त्रांच्या अभ्यासाच्या दृष्टीने लोकसाहित्याचा अभ्यास महत्वपूर्ण ठरतो. लोकसाहित्याच्या संग्रहाने, अभ्यासाने कोणत्याही देशात, समाजास, साहित्यास फायदाच होत असतो. कारण लोकसाहित्यातून देशाच्या संस्कृतीचे प्राचीनत्व तसेच आचार—विचारांचे व रीतीरिवाजांचे ज्ञान मिळते. लोकसाहित्याच्या अभ्यासाचे महत्व स्पष्ट करतांना डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी “लोकसाहित्य ही आमच्या संस्कृतीची संपत्ती आहे. तिचे जतन व संवर्धन आम्ही केले पाहिजे. ती तर अत्यंत प्राचीन काळापासून हृदयपूर्वक सांभाळून ठेवलेली आमची मूल्यवान ठेव आहे. त्यात आमचा पूर्वेतिहास सामावलेला आहे.” असे मोठे प्रेरक व सूचक उद्गार काढले आहेत. लोकसाहित्याचे अभ्यासक ना. रा. शेंडे म्हणतात, “अत्यंत प्राचीन काळी भारतभूमीच्या आदिवासींनी लोकसाहित्य आणि लोककला निर्माण करून देशाची उदात्त संस्कृती सिद्ध केलेली आहे. जे वैभव त्यांनी निर्माण केले त्याचे जतन, संशोधन केले पाहिजे.” रामनरेश त्रिपाठी म्हणतात, “देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन लोकसाहित्यों से ऐसा

सुरक्षित है कि, इनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी।”

लोकसाहित्याची संकल्पना :

Folklore या इंग्रजी शब्दासाठी मराठीत लोकसाहित्य हा शब्द उपयोगात आणला जातो. दत्तो वामन पोतदार यांनी Folklore या शब्दासाठी ‘लोकविद्या’ हा शब्द सुचविला होता; पण मराठी ‘लोकविद्या’ हा शब्द प्रचलित होऊ शकला नाही. ‘लोकसाहित्याची रूपरेखा’ या ग्रंथात दुर्गा भागवत यांनी Folklore साठी ‘लोकसाहित्य’ हा शब्द सुचविला. एकुणच लोकसाहित्याचे स्वरूप लक्षात घेता ‘लोकविद्या’ पेक्षा ‘लोकसाहित्य’ हा शब्द Folklore ह्या शब्दाला अधिक समर्पक आहे. हिंदी भाषेत Folklore शब्दासाठी लोकवार्ता, लोकज्ञान, लोकायन, लोकसंस्कृती, लोकविद्या व लोकसाहित्य असे काही शब्द अभ्यासकानी रूढ करण्याचा प्रयत्न केला असला तरी ‘लोकवार्ता’ व ‘लोकसाहित्य’ हे शब्द मान्यताप्राप्त ठरले. मराठीत मात्र Folklore साठी लोकसाहित्य हा शब्द अधिक अर्थपूर्ण आहे तर ‘Folk literature’ साठी लोकवाङ्मय हा शब्द अधिक समर्पक आहे. Folklore ची व्याप्ती आणि इंग्रजी शब्दाला मराठीत दिलेला शब्द अधिक सार्थ वाटतो.

लोकसाहित्यात लोककथा, लोकगीते, उखाणे, म्हणी इत्यादी मौलिक आविष्काराबरोबरच जुन्या काळाच्या लोकसमजुती, लोकश्रद्धा, लोकविश्वास, लोकभ्रम, रूढी, प्रथा, विधी—विधाने, जादुटोणा, लोककला, पारंपारिक व्यवसाय अशा अनेक बाबींचा समावेश असतो. तेव्हा लोकसाहित्य म्हणजे पारंपारिक जीवनपद्धती, लोकमानसाच्या कृती, म्हणूनच लोकवाङ्मय हे पारंपारिक जीवनपद्धतीचा एक अविभाज्य घटक असते हे नाकारता येत नाही.

लोकसाहित्याच्या व्याख्या :

लोकसाहित्याचे स्वरूप स्पष्ट करतांना लोकसाहित्याचा अभ्यास करणाऱ्या अभ्यासकांनी लोकसाहित्याविषयी आपली मते मांडली. त्यांच्या व्याख्यातून आपणास लोकसाहित्याचे स्वरूप बऱ्याच प्रमाणात स्पष्ट होते. जोनास बॅलिस लोकसाहित्याची व्याख्या पुढीलप्रमाणे करतो— “लोकसाहित्याची निर्मिती आदिम जीवनात झालेली असून ते परंपरेने पुढच्या पिढीस प्राप्त होत असते. लोकसमुहाचा पारंपारिक लोकजीवनाचा आविष्कार म्हणजे लोकसाहित्य.” विलियम बॅस्करम यांच्या मते— “म्हणी, लोकगीते यासारखे कलात्मक आविष्कार म्हणजे लोकसाहित्य. भाषेच्या माध्यमातून, मौखिक रूपातील शब्दाविष्कारातून अभिव्यक्त होणारे पारंपारिक कलात्मक आविष्कार म्हणजे लोकसाहित्य. भाषेच्या माध्यमातून, मौखिक रूपातील शब्दाविष्कारातून अभिव्यक्त होणारे पारंपारिक कलात्मक आविष्कार म्हणजे लोकसाहित्य.” जार्ज एम. फॉस्टरच्या मते— लोकसमुहाच्या अलिखित म्हणजेच मौखिक रूपातील भाषाविष्काराचा, लोकविश्वास, लोकभ्रम, पारंपारिक खेळ, उत्सव, चेटूक इत्यादींचा समावेश लोकसाहित्यात होतो. गट्ट कुराय यांनी लोकसाहित्याची केलेली व्याख्या पुढीलप्रमाणे आहे— “लोकसाहित्याची निर्मिती समुहात होत असते. ती सामूहिक निर्मिती असते. लोकसाहित्य परंपरेने लोकजीवनात प्रचलित असते. लोकसाहित्यात लोककथा, गीते, निसर्गातील दैव्यशक्ती, लोकश्रद्धा, लोकसमजुती, लोकविश्वास, विधी आणि उत्सव इत्यादींचा समावेश होतो.”

वरील सर्व व्याख्येवरून आपणांस हे लक्षात येते की, लोकसाहित्य किंवा लोकवाङ्मय हा पारंपारिक जीवनाचा एक महत्वपूर्ण भाग आहे. परंपरेने चालत आलेले जीवन जगतांना विधी आचाराणातून, दैनंदिन जीवनातील कामे करतांना, कृषिकर्म, दळण, निवडणे, टिपणे, सण—उत्सव साजरे करण्यातून, मनोरंजनासाठी खेळण्यातून लोकवाङ्मयाची निर्मिती स्वाभाविकपणेच होत असते. लोकमनाला आकार देण्याचे कार्यही लोकवाङ्मयाकडून होत असते. लोकवाङ्मयाला लोकजीवनापासून वेगळे काढता येत नाही आणि लोकजीवनाला लोकवाङ्मयातून वगळून अभ्यासही करता येत नाही.

लोकवाङ्मयाचे स्वरूपविशेष :

1. लोकवाङ्मयाच्या निर्मितीत प्रचलनात परंपरा हे तत्व असते. त्यामुळे लोकवाङ्मयाच्या मागे कित्येक शतकांची परंपरा आहे.
2. लोकवाङ्मय चलस्वरूपाचे असल्याने त्यात परिवर्तनशिलता असते.
3. निरनिराळ्या काळात लोकवाङ्मयात परिवर्तन होत गेले तरी त्याचा मूळ गाभा कायम राहतो.
4. लोकवाङ्मय मौखिक रूपात लोकजीवनात परंपरेने प्रचलित असते.
5. लोकवाङ्मयाचा निर्माता अज्ञात असतो.
6. लोकवाङ्मयाची निर्मिती जाणिवपूर्वक केली जात नाही तर ती सहजत्फुर्त होत असते.

7. लोकवाङ्मय आणि लोकजीवन यांच्यातील परस्पर संबंध अतूट असतात.
8. लोकवाङ्मयातून लोकजीवनाचा आविष्कार घडतो. त्यातून मानवी जीवनाचा इतिहास शोधता येतो.
9. लोकवाङ्मयाचा विधीशी संबंध असतो.
10. लोकवाङ्मयाची भाषा बोलभाषा असते. दैनंदिन व्यवहारातील, रोजच्या जीवनातील भाषा असल्यामुळे लोकवाङ्मयाच्या भाषेला जिवंतपणा आलेला असतो.

एखाद्या देशाची जीवनप्रणाली, संस्कृती, धर्म, आचार—विचार, रूढी, प्रथा, कला, वाङ्मय, सामाजिक उन्नती किंवा अधःपतन जाणून घ्यावयाचे असतील तर त्या देशाच्या लोकसाहित्याचा अभ्यास उपयुक्त ठरतो. त्यातल्या त्यात समाजजीवनाचा प्राचीन इतिहास प्राचीन काळातील समाजजीवन यांचा अभ्यास लोकसाहित्याच्या किंवा लोकवाङ्मयाच्या अभ्यासाशिवाय पूर्ण होवूच शकत नाही. त्या त्या देशाच्या, प्रदेशाच्या लोकजीवनाचे, लोकसंस्कृतीचे प्रतिबिंब लोकसाहित्यात पडलेले असल्याने लोकवाङ्मयाचा अभ्यास विविध दृष्टिने, अंगाणे करता येते.

लोकवाङ्मयाचे अध्यापनातील महत्व :

लोकसाहित्याची, लोकवाङ्मयाची निर्मिती लोकजीवनातून होत असून लोकजीवनाला आकार देण्याचे काम लोकसाहित्याकडूनच होत असते. पारंपारिक जीवन विशेषांचा तसेच संस्कृतीचा अभ्यास करतांना लोकसाहित्याचा अभ्यास महत्वाचा ठरतो. आज ज्ञात झटलेल्या अनेक विद्यांचे, ज्ञानशाखांचे मूलस्रोत लोकवाङ्मयात सापडते. या दृष्टिने लोकसाहित्याचे अध्ययन व अध्यापन महत्वाचे आहे. मानवाच्या, समाजाच्या प्राचीन जीवन विशेषांचे स्वरूप, ज्यांची इतिहासात नोंद आढळत नाही, ऐतिहासिक पुरावे उपलब्ध होऊ शकत नाही अशावेळी लोकसाहित्याचा आधार महत्वाचा ठरतो. धर्मगाथा, पुराणगाथा, समाजविज्ञान, जातीविज्ञान, भाषाविज्ञान व कला इत्यादी क्षेत्रातही लोकसाहित्याचे अनन्यसाधारण महत्व आहे. थोडक्यात— लोकवाङ्मय म्हणजे हजारो वर्षापूर्वी उगम पावलेली, काळाच्या प्रवाहासोबत विविध ज्ञानाचे अंतःप्रवाह आपल्यात सामावून घेऊन आपल्या दोन्ही तीरावरच्या लोकांचे जीवन विकसित करित अखंडपणे प्रवाहित राहिलेली ज्ञानगंगाच होय. अशा लोकवाङ्मयाच्या अध्ययन अध्यापनाचे महत्व पुढीलप्रमाणे सांगता येईल.

ऐतिहासिक महत्व :

वर्तमानकाळातील समाजजीवनात प्रचलित असलेल्या जीवनविशेषांचा शोध घेण्याचे महत्वाचे साधन म्हणजे लोकवाङ्मय होय. आज लोकजीवनात प्रचलित असलेल्या काही परंपरा, रूढी, विधी या प्राचीन काळी केव्हातरी निर्माण झालेल्या असतात. लोककथा, लोकगीते, लोकगाथा इत्यादीतून इतिहासकालीन व्यक्तींची वर्णने आलेली असतात. एखाद्या वस्तुविषयी त्या त्या परिसरातील लोकजीवनात आख्यायीका, दंतकथा प्रचलित असतात. त्याचा इतिहासकालीन मागोवा आपल्याला लोकसाहित्याच्या आधारे घेता येतो. ही माहिती ऐतिहासिक पुरावा म्हणून

मानता येत नसली तरी इतिहास आपल्याला न्याहाळता येऊ शकते. लोकजीवनात प्रचलित असलेली प्राणीपूजा, वृक्षपूजा, जलपूजा यासारख्या बाबींचा प्राचीनकाळातील त्यांच्या रूपाचा, त्यामागे असलेल्या कारणांचा शोध आपल्याला लोकसाहित्याच्या आधारे घेता येतो. लोकसाहित्य म्हणजे **सामाजिक महत्व :**

समाजजीवनाच्या अभ्यासाच्या दृष्टीने लोकसाहित्याचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. कारण लोकजीवनाचे नितळ व स्पष्ट प्रतिबिंब लोकवाङ्मयात पडलेले असते. सामाजिक शास्त्रे आणि लोकसाहित्य यांच्यातील परस्पर संबंध घनिष्ठ स्वरूपाचे आहे. समाजशास्त्राच्या अभ्यासात लोकसाहित्याला असलेले महत्व मान्य करायलाच हवे. भारतीय समाजव्यवस्था कोणत्या प्रकारची होती, आजच्या समाजव्यवस्थेची बैठक कोणत्या सामाजिक तत्वावर आधारलेली होती, जातीव्यवस्था, कुटुंबव्यवस्था, समाजातील चालीरीती, रूढी—प्रथा, निरनिराळे व्यवसाय यांचे स्वरूप लोकसाहित्य—लोकवाङ्मयाच्या आधारे आपल्याला माहित करून घेता येतात. आदिमकाळातील, पुराणकाळातील समाजजीवनाचे स्वरूप लोकसाहित्याच्या आधारे आकलन करता येऊ शकते.

लोकवाङ्मयात समाजजीवनाचा आविष्कार घडत असतो आणि समाजजीवनाला आकार देण्याचे काम लोकवाङ्मयाकडून घडत असते. त्यामुळे समाजशास्त्रांच्या दृष्टीने लोकवाङ्मय ही अत्यंत मोलाची अध्ययन—अध्यापन सामग्री ठरते. लोकवाङ्मयातील मौखिक आविष्कार, संस्कृती, विधी, आचार—विचार, रूढी—प्रथा इत्यादीं तून समाजशास्त्रांना समाजजीवनाचा अभ्यास करतांना अध्ययन सामग्री मिळत असते. या दृष्टीनेही लोकसाहित्याच्या अध्ययन—अध्यापनाचे महत्व आहे.

भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीने महत्व :

लोकसाहित्याचा बराच मोठा भाग मौखिक रूपातील शाब्द आविष्काराने व्यापलेला असतो. या विभागात लोककथा, लोकगीते, उखाणे, म्हणी यांचा समावेश होतो. लोकसाहित्याचा अभ्यास करणाऱ्यामध्ये होऊन गेलेल्या अभ्यासकांत काही भाषापंडित होते. त्यांनी भाषा विज्ञानाच्या दृष्टीने लोकसाहित्यातील लोकवाङ्मयाचे महत्व विशद केलेले आहे. ग्रीम बंधु आणि मॅक्समूलर यांनी दैवतकथांच्या दृष्टीने अभ्यास केलेला आहे. १९ व्या शतकात भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीने अभ्यास केलेला आहे. भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीने पाश्चिमात्य भाषापंडितांनी लोककथांचा अभ्यास केला आहे. लोकसाहित्यातील लोकवाङ्मयाची निर्मिती

धार्मिक महत्व :

लोकसाहित्याचा, लोकवाङ्मयाचा अभ्यास पारंपरिक लोकजीवनाचा अभ्यास असल्यामुळे लोकजीवन ज्या ज्या माध्यमातून व्यक्त होते त्या माध्यमांचा अभ्यास लोकसाहित्याच्या आधारे करता येतो. लोकजीवनात प्रचलित असलेल्या धर्मविधी, संस्कारविधी, निरनिराळ्या देवदेवतांच्या उपासना पद्धती, तसेच लोकविश्वास, लोकश्रद्धा यांचा समावेश लोकसाहित्यात होत असल्याने व लोकजीवनाची बैठक धर्मावर असल्याने लोकसाहित्याचा या दृष्टीने केलेल्या

प्राचीन समाजजीवनाचा इतिहास या दृष्टीनेही लोकसाहित्याच्या ऐतिहासिक अध्ययन—अध्यापनांचे महत्व मान्य करायला हवे. थोडक्यात— इतिहासकालीन लोकजीवनाचा शोध घेण्यासाठी काही प्रमाणात लोकसाहित्याचा अभ्यास पूरक ठरत असतो.

बोलीभाषेतून होत असल्याने व बोलीत भाषेच्या प्राचीन रूपांचा स्वाभाविक वापर होत असल्याने प्राचीन भाषेची रूपे लक्षात घेण्यासाठी भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीनेही लोकवाङ्मयाचा अभ्यास महत्वाचा आहे. भाषा ही समाजातील एक महत्वाची संस्था आहे. लोकसाहित्याचा आणि समाजजीवनाचा निकटचा संबंध लक्षात घेता लोकवाङ्मयात इतिहास, समाज अनुभव समजण्यासाठी लोकसाहित्याची भाषा उपयुक्त ठरते. तेव्हा भाषा विज्ञानाच्या दृष्टीनेही लोकसाहित्याचे अध्ययन महत्वाचे ठरते.

सांस्कृतिक महत्व :

देशाच्या संस्कृतीची जडण—घडण कशी होत गेली, या संस्कृतीचा विकास कसा होत गेला तसेच या संस्कृतीला कोण—कोणते पैलू आहेत याची माहिती आपल्याला लोकसाहित्याच्या अभ्यासातून मिळते. लोकसाहित्य म्हणजे त्या त्या देशाचा, प्रदेशाचा सांस्कृतिक इतिहासच. वास्तवात लोकसाहित्य ही संस्कृतीची अमूल्य देणगी आहे. लोकसाहित्य म्हणजे लोकसंस्कृतीचा आरसाच. देशाच्या संस्कृतीच्या अभ्यासात लोकसाहित्याच्या अभ्यासाला वगळून चालत नाही. लोकसाहित्याच्या अभ्यासाचे महत्व ओळखूनच मानववंश शास्त्रज्ञांनी लोकसाहित्याचा अभ्यास या दृष्टीने करण्याचा प्रयत्न केला. एडवर्ड, टायलर, अँड्रु लॅंग आणि जेम्स फ्रेझर या लोकसाहित्य विशारदांनी लोकसाहित्य हे संस्कृतीच्या अध्ययनाचे एक महत्वाचे साधन असल्याचे स्पष्ट करून त्यांनी त्यादृष्टीने लोकसाहित्याचा—लोकवाङ्मयाचा अभ्यास केला. लोकसाहित्य हे संस्कृतीचे सातत्य टिकविण्याचे एक महत्वाचे साधन आहे असे मत फ्रांस बोआस यांनी मांडले आहे. पारंपरिक लोकजीवनातील सण—उत्सव, जत्रा—यात्रा, विधी, संस्कारविधी, रूढी—प्रथा, वेशभूषा, अलंकार, निरनिराळ्या जाती—जमातींची जीवनशैली, लोकगायकांच्या पारंपरिक संस्थांचे कलात्मक आविष्कार, कला—क्रीडा, वाङ्मय असे लोकसंस्कृतीचे विविध पैलू आहेत की, ज्याचा समावेश लोकसाहित्यात होतो. लोकसाहित्याचा अभ्यास म्हणजे संस्कृतीच्या अभिसरणाचा अभ्यास. थोडक्यात— देशाच्या संस्कृतीच्या अभ्यासात लोकसाहित्याचे अध्ययन—अध्यापन अतिशय उपयुक्त ठरते.

अभ्यासात महत्व आहे. भारतीय जीवनात प्राचीन काळापासून धर्माला अनन्यसाधारण महत्व प्राप्त झालेले आहे. लोकसाहित्याच्या निर्मितीत, जडण—घडणीत धर्माचा मोठा वाटा आहे. धर्माच्याच आधारे लोकसाहित्याचा विकास होत गेला. त्यामुळे लोकसाहित्यात लोकजीवनाच्या धार्मिकतेचे विविधपैलू प्रतिबिंबित झालेले आहेत. लोकवाङ्मयातील लोकगीते, लोककथा, लोककथागीते ही धार्मिक प्रेरणेतूनच धर्मविधीशी, संस्कारविधीशी जोडली गेलेली आहेत. लोकसाहित्याच्या निर्मितीत लोकांच्या धर्मधारणांना असलेले

महत्व जाणून घेतांना लोकसाहित्याचे अध्ययन महत्वाचे ठरते. धर्मशास्त्राचा इतिहास समजण्यास, लोकसाहित्यासारखे साधन नाही. आदिम जीवनातील धर्मधारणा, धर्मकल्पना, वेदकाळातील धर्माचे स्वरूप, पुराणकाळातील धर्मभावनेचा लोकमनावर पडलेला प्रभाव यांचा अभ्यास करतांना लोकसाहित्याचा आधार महत्वाचा ठरतो.

वाङ्मयीन महत्व :

लोकसाहित्याचा बराच मोठा भाग लोकवाङ्मयांनी लोककथा, लोकगीते, उखाणे, म्हणी यांनी व्यापलेला आहे. लोकवाङ्मयाचा अभ्यास वाङ्मयीन व शास्त्रीय दृष्टीने करता येतो. लोकवाङ्मयातून लोकमनातील भावभावना, सुख-दुःखे, राग-द्वेष, कौटुंबिक नात्यातील भावसंबंध इत्यादीचे स्वभाविक चित्रण केलेले असते. वाङ्मयाच्या आस्वादात्मक अभ्यासाने, परिशीलनाने मनाला एक प्रकारच्या आनंदाचा प्रत्यय येतो. शिवाय वाङ्मयातून लोकमनाच्या कल्पनावैभवाचे, विचार संपन्नतेचे दर्शनही घडते. लोकमनाचा ठाव घेण्याचे एक साधन म्हणून, तसेच जीवनात विरंगुळा मिळण्याच्या दृष्टीने लोकवाङ्मयाचे परिशिलन मोलाचे ठरते. लोकवाङ्मयातील लोककथा, लोकगीते, उखाणे, म्हणी यातून घडणारे जीवनदर्शन व मनोदर्शन लोकांच्या वृत्ती-प्रवृत्ती, भावभावना जाणून घेण्यास उपयुक्त ठरते. वाङ्मयाच्या इतिहासाचा मागोवा घेण्यातही लोकवाङ्मयाचा अभ्यास-अध्यापन उपयुक्त ठरतो. लिखित वाङ्मयाची निर्मिती होण्यापूर्वी लोकवाङ्मय हे मौखिकरूपात, अतिरिक्त स्वरूपात लोकजीवनात प्रचलित होते. लोकवाङ्मय आणि अभिजात वाङ्मय यांच्यातील परस्पर संबंध जाणून घेण्यातही लोकसाहित्याचा अभ्यास महत्वाचा आहे. लोकवाङ्मयातून समाजाचे, त्या मनातील भावविश्वाचे, समाजजीवनाचे व सांस्कृतिक परंपराचे प्रकटीकरण होत असल्याने तसेच त्यातील वाङ्मयीन गुणांच्या दृष्टीने लोकसाहित्यातील लोकवाङ्मयाच्या अध्यापनाचे महत्व अनन्यसाधारण आहे. लोकवाङ्मयाची निर्मिती बोलीभाषेत, लोकभाषेत होत असल्याने व भाषेतील शब्द, शब्द आविष्कार वाङ्मयात महत्वाच्या भूमिका बजावतात. लोकवाङ्मयाच्या भाषेला लोकजीवनात अत्यंत महत्व असल्याने भाषाविज्ञानाच्या दृष्टीनेही लोकवाङ्मयाच्या अभ्यासाचे महत्व लक्षात येऊ शकते. लोकसाहित्याचे अध्ययन-अध्यापनाचे महत्व विशद करणाऱ्या काही बाबींची वरीलप्रमाणे चर्चा केली. या बाबीशिवाय लौकिक ज्ञानाच्या विविध शाखांत अभ्यासातही लोकसाहित्याच्या अभ्यासाला महत्व आहे. लोकसाहित्याचे, लोकवाङ्मयाचे क्षेत्र व्यापक असल्याने लोकसाहित्याच्या अभ्यासाला विशेष महत्व येऊ लागले. लोकसाहित्याच्या अभ्यासाचे लोकजीवनाच्या संदर्भात असलेले महत्व लक्षात आल्यामुळे पाश्चात्य देशातील तसेच भारतातील अभ्यासकांचे लक्ष लोकसाहित्याकडे वेधले गेले. लोकवाङ्मयाचा किंवा लोकसाहित्याचे अध्यापन करतांना इत्यादी गोष्टीसंबंधीचा विचार करणे गरजेचे ठरते. अशाप्रकारे लोकवाङ्मयाच्या अध्ययन अध्यापनाचे महत्व सांगता येते.

संदर्भ ग्रंथ :

- १) प्रभाकर मांडे, लोकसाहित्याचे स्वरूप
- २) प्रभाकर मांडे, लोकसाहित्याचे अंतःप्रवाह
- ३) शरद व्यवहारे, लोकसाहित्य : रंग आणि रेखा
- ४) दुर्गा भागवत, लोकसाहित्याची रूपरेषा

साहित्यातून दिसणारे कृषी जीवन

प्रा.डॉ. लक्ष्मण गिल्ले

कला महाविद्यालय, नांदुरघाट, ता. केज. जि. बीड.

प्रस्तावना :

मराठी साहित्याला संपन्न अशी पपरंपरा आहे. मराठी साहित्य समृद्ध असून ते व्यापक आहे. मानवाचे जगणे सुसह्य व्हावे या गरजेतून समाज निर्मिती झाली. समाज व्यवस्थित चालावा यासाठी संस्कृती निर्माण झाली, या संस्कृतीतून साहित्य उदयास आले. आणि साहित्यामध्ये विविध प्रवाह निर्माण झाले. मराठी साहित्याला अकराव्या शतकापासूनची परंपरा आहे. मराठी साहित्यामध्ये सतत स्थित्यंतरे होत गेली, व त्यात उत्तरोत्तर विविधता येत गेली. मौखिल साहित्यापासून सुरू झालेली प्रवाह आज विज्ञानाच्या सहाय्याने ई—बुकपर्यंत विकसित झाले आहे. मराठी साहित्याचे दोन प्रकार आहे, १) ललित साहित्य २) ललितेतर साहित्य, ललित साहित्याचे उपप्रकार पडतात — कथा, कादंबरी, कविता, नाटक, ललितलेख, चरित्र आणि आत्मचरित्र इ. तर ललितेतर साहित्याचे इतिहास, भूगोल, सामाजिक शास्त्रे, भौतिकविद्या, धर्म, तत्वज्ञान, टीकात्मक लेख इ. प्रकार आहेत. मराठी साहित्यात विविध प्रवाह प्रादेशिक साहित्य, ग्रामीण साहित्य, जनवादी साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य, आदिवासी साहित्य, कामगार साहित्य, ग्रामीण साहित्य, मुस्लीम साहित्य, बाल साहित्य, दलित साहित्य असे अनेक प्रवाह मराठीत उदयास आले. ग्राम जीवनाचे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष चित्रण या साहित्यातून झाले आहे, अशा साहित्याचा शोध घेण्यासाठी आपणाला महानुभावी साहित्यापर्यंत जावे लागते. 'दृष्टांत पाठा', लीळाचरित्र अशा महानुभावीय साहित्यांमधून आलेल्या कथांमधून शेती, शेतकरी आणि ग्रामीण जीवनाचे चित्रण नकळत का होईना झाले आहे. "अधारिये परिसाचा दृष्टांत" हे त्याचे उत्तम उदाहरण आहे. या चपद्धतीने नामदेव, तुकाराम, एकनाथ आदी संतांच्या वाङ्मयातून शेतकरी जीवनाच्या काही छटा प्रकट होताना दिसतात. असे असले तरी जाणीवपूर्वक शेतकरी जीवनदर्शन घडवू इच्छिणाऱ्या साहित्याचा सलगप्रवाह विसाव्या शतकाच्या पूर्वार्धानंतरच दिसतो.

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. शेती ही मुख्य व्यवसाय आहे. पशुपालन हा शेतीपूरक व्यवसाय आहे. एकंदरीत शेतकरी साकार होण्यासाठी कृषिनिष्ठ संस्कृती, निसर्गसन्मुखला त्यातून निर्माण झालेले लोकमान्य घटक महत्वाचे ठरतात. या सर्वांमधून जगण्याची एक रीत साकार होत जाते. या रीतीचे चित्रण ज्या साहित्यात आढळते त्या साहित्याला कृषिनिष्ठ अथवा ग्रामीण साहित्य म्हणता येईल. शेतकरी जीवनात अनेक समस्या निर्माण झाल्या, किंबहुना ही कृषिसंस्कृती कुठल्यातरी अर्थव्यवस्थेची अंकित बनून राहिली आहे. शहरी जीवनाच्या डालडौलापुढे कृषिसंस्कृतीचे, कृषिजीवनाचे दुय्यमत्त्व पदोपदी प्रत्ययाला येते. यातून संख्य प्रश्न निर्माण झाले आहेत. शेतीमालाच्या भावाचा प्रश्न, बी—बियाणांचा प्रश्न, जमीनीचे छोटे—मोठे तुकडे, पाण्यावरती धनदांडग्याची मालकी, शेतमजुरांचा आभाव, बेकारीचा प्रश्न इ. समस्येमुळे शेतकरी जीवनाची घडी आज विस्कटून गेली आहे. या सर्वांचा वेध घेण्याचा प्रयत्न साहित्यिक करीत असतात.

शेतकरी जीवन जाणिवेचा प्रारंभ सर्वप्रथम महात्मा फुले, यांच्या "शेतकऱ्यांचा आसूड" या ग्रंथातून झाला. छिन्न—भिन्न होणाऱ्या कृषिजीवनासंबंधीचा असंतोष आणि आक्रोश

यातून व्यक्त झाला. पुढे कृष्णराव भालेराव यांनी 'बळीबा पाटील' ही शेतकरी जीवनाशी संबंधित कादंबरी लिहली. म.वि.रा. शिंदेनी 'शेतकऱ्यांची दुःस्थिती' हा शेतकऱ्यांच्या चिंतनाचा विषय मांडला आहेच, पण त्याही पलीकडे जाऊन त्यांनी काही महत्वाची मीमांसा केलेली आहे. विशेषतः शेतीमालाच्या भावाचा प्रश्न त्यांनी उपस्थित केला आहे. शेती करणे फायदेशीर ठरत नाही, तेंव्हा त्यांना संपही करता येत नाही अशा कात्रीतशेतकरी सापडलेला असतो, असे त्यांचे प्रतिपादन आहे. स्वातंत्रोत्तर काळातील शेतकरी साहित्य हे वास्तवाच्या अधिक जवळ जाण्याचा प्रयत्न करते. सन १९७०—७५ सालात महाराष्ट्रावर दुष्काळाचे सावट होत. संपूर्ण महाराष्ट्र दुष्काळाने होरपळून निघालेला होता. त्यामुळे नव्याने शिकलेली पिढी अधिकच अंतर्मुख झाली होती तेंव्हा शेतकऱ्यांची नवी पिढी आंदोलक बनू लागली. नव्वदोत्तर शतकामध्ये यांत्रिकीकरण व जागतिकीकरणामुळे संपूर्ण मानवी जीवन बदलून गेले कृषी क्षेत्रामध्ये आमूलाग्र बदल झाला. यांत्रिकीकरणामुळे काही चांगले तर काही वाईट परिणाम कृषी क्षेत्रावर झाले. बी—बियाणे, रासायनिक खते, औषधांच्या किंमती भरमसाठ वाढल्याने शेती उत्पादन खर्च भरमसाठ वाढला. दलालांचा वापर वाढल्याने

शेतकरी अधिकच भरडला जावू लागला. खाजगी सावकार आणि बँका यांमध्ये शेतकरी उध्वस्त होवू लागला. जागतिकीकरणामुळे शेतकऱ्यांच्या जमिनी कवडीमोल किंमतीला विकत घेवून खाजगी कंपनी उभ्या राहू लागल्या. त्यामुळे कित्येक शेतकरी भूमिहीन झाले. या सर्वांमुळे पूर्णतः कृषी जाणीवाच बदलून गेल्या त्याचे प्रत्ययकारी चित्र नव्वदोत्तर दशकामध्ये मराठी साहित्यात उमटू लागले.

भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा असलेला शेतकरी कायम आर्थिक दृष्ट्या असुरक्षित, अन्यायग्रस्त राहिला. त्यामुळे शेतकऱ्यांच्या मनात आपण नागविले गेल्याची, असंतोषाची भावना सतत धुमसत राहिली. ही भावना असल्या प्रश्नांची सोडवणूक करण्याचे मार्ग शोधत राहिली. त्यातून शेतकऱ्यांना मार्ग सापडला. तो म्हणजे आंदोलनाचा, अलिकडच्या काळात जागोजागी उभ्या राहिलेल्या शेतकऱ्यांच्या आंदोलनांनी शेतकऱ्यांना एक अस्मिता प्राप्त करून दिली.

कादंबरीसारख्या वाङ्मय प्रकारातून विस्तृतपणे शेतकरी वर्गाचे चित्रण आले आहे. ग्रामीण कादंबरीतून निसर्ग देव—देवता, अंधश्रद्धा, दुष्काळ, पाणी समस्या, लहरी हवामान, शेतमजूर, शेतमालाला कमी हमीभाव यातून निर्माण झालेले दुःख, दैन्य—दारिद्र्य, कौटुंबिक ताण—ताणाव, बेकारी हरवत चाललेली माणूसकी, लुबाडणूक करणारा दलाल, यांचे चित्रण मराठी कादंबरीत दिसून येते.

तानाजी राऊ पाटील यांची “आभाळ” याकादंबरीत गोपाळ आणि सजी या शेतमजुराची दशा मांडली आहे, सदानंद देशमुख यांची “तहान” या कादंबरीतून बबनसारखा शेतकरी वाईट मार्ग स्वीकारताना दिसतो. “बारोमास” मधून सुशिक्षित तरूणाची व्यथा, आक्रमकता स्पष्ट केली आहे. मोहन पाटील यांची “साखरफेरा” या कादंबरीत किशा खोत हा आंदोलक शेतकऱ्याचे प्रतिनिधत्व करताना दिसतो, अशोक कोळी याची “पाडा” या कादंबरीत केळी उत्पादक असणारा आंदोलक शेतकरी चांगदेव तापकीर याची व्यथा मांडली आहे. “रिक्त अतिरिक्त” या रां.रं. बोराडे लिखित कादंबरीत आंदोलनग्रस्त शेतकरी नाथाप्पाची दुर्दशा दिसून येते. त्याचबरोबर रविंद्र शोभणे यांनी आपल्या “पांढर” व “कोंडी” या कादंबरीतून शेतकऱ्यांची फरफट मांडली आहे. कृष्णात खोत यांच्या “गावठाण”, चंद्रकुमार नवले यांची “देवाची साक्ष”, शंकर सखाराम यांची “एस.इ.झेड”, अनंत भोयर यांची “आभाळझुंज”, शेषराव मोहिते यांची

“धुळपेरणी”, इ. कादंबरीमधून आंदोलक शेतकऱ्यांचे दर्शन घडते.

मराठी कादंबरीतून व्यक्त झालेल्या शेतकऱ्यांच्या वास्तव चित्रणा बरोबरच त्यांचे कृषी जीवन व कृषी संस्कृती यांचा अभ्यास करणे महत्त्वाचे आहे. जागतिकीकरण, औद्योगिकीकरण, बेकारांच्या संख्येत होणारी वाढ, गावातील राजकारण, त्यातून निर्माण होणारी गुंडगिरी, व्यसनाधिनता, गटबाजी या सर्वांचा बळी ठरणारे शेतकरी जीवन मराठी कादंबरी वाङ्मयातून दिसून येते. मराठी साहित्यामधील शेतकरी आंदोलनात सहभागी झाल्याने त्यांच्या कौटुंबातील सदस्यांची ओढाताण होत असते. आंदोलनात सहभागी झाल्याने त्याला प्रसंगी जेलमध्ये जावे लागते याचे उदाहरण म्हणजे अशोक कोळी यांच्या प्रत्येक साहित्य प्रकारात वापरली जाणारी भाषा हा एक स्वतंत्र अभ्यासाचा विषय असतो. त्या त्या साहित्य प्रकारातून भाषाविशेषांचा वेगळा नमुना शोधता येतो.

प्रत्येक साहित्यप्रकारात वापरली जाणारी भाषा हा एक स्वतंत्र अभ्यासाचा विषय असतो. त्या त्या साहित्यप्रकारातून भाषाविशेषांचा वेगळा नमुना शोधता येतो. मराठी कादंबरीतील आंदोलक शेतकऱ्यांची व शेतकरी पात्रे स्वतःचे असे तत्त्वज्ञान सांगत असतात. उपमा—उपमाने, दृष्टांत, म्हणी, वाक्प्रचार यांनी प्रत्येक लेखक आपली कलाकृती अलंकृत करित असतो. प्रत्येक कथात्मक साहित्यात भाषाविशेषांचे वेगवेगळे नमुने सापडत असतात. मराठी कादंबरीतील व्यक्त झालेल्या जाणवा, आंदोलक शेतकरी व शेतकरी जीवन यांचा अभ्यास करतांना आपण प्रादेशिक, ग्रामीण बोलीभाषेचा अभ्यास करणार आहोत. या कथात्मक साहित्यात शेतकरी निवेदनासाठी व संवादासाठी वापरलेली भाषा, व रोजची बोलली जाणारी भाषेची वैशिष्ट्ये पाहणार आहोत. भाषा ही अनुभवाचा संस्कार करणारी शैली आहे. मराठीतील काही लेखकांनी वेगवेगळ्या प्रदेशातील बोलींचा वापर करून तेथील प्रादेशिक जीवन साकार करण्याचा प्रयत्न केला आहे. तर व्यंकटेश माडगुळकर, शंकर पाटील, आनंद यादव यासारख्या लेखकांनी कोल्हापूरकडील बोलीभाषेचे वेगळेपण हेरले आहे. वऱ्हाडी बोलीचा वापर काही लेखकांनी आपल्या शेतकरी कथा — कादंबरीच्या लेखनासाठी केला आहे. उद्धव शेळके, मनोहर तल्हार, रविंद्र शोभणे, प्रतिमा इंगोले आदी लेखकांनी अतिशय समर्थपणे वैदर्भी बोलीभाषेचा वापर केला आहे.

संदर्भ :

- १) झाडाझडती - राजहंस प्रकाशन — विश्वास पाटील.
- २) कापुसकाळ — कैलास दौंड — मीरा बुक्स औरंगाबाद.
- ३) पांढर — रविंद्र शोभणे — मॅजेस्टिक प्रकाशन मुंबई.

साहित्य समाज आणि दलित साहित्य

प्रा.डॉ.अनिल बळीराम बांगर

मराठी विभाग प्रमुख को.ए.सो.लक्ष्मी-शालिनी महिला महाविद्यालय,पेझारी, ता.-अलिबाग,जि.-रायगड

प्रास्ताविक: मराठी साहित्यात पुन्हा एकदा साहित्य आणि समाजाचा अन्योन्य असा प्रवाही संबंध दलित साहित्याच्या रूपाने प्रगट झाला आहे. विद्रोह आणि विज्ञान ही मूल्ये स्वीकारून वाट चालणारे दलित साहित्य, साहित्य आणि समाज यांचा अपरिहार्य संबंध प्रगट करते. आजवरचे मराठी साहित्य हे बहुतांशी पांढरपेशा वर्गातील लेखकांनी निर्माण केले आहे. डॉ.केतकरांनी साहित्याच्या संदर्भात वापरलेली, “सदाशिव पेठी” साहित्य ही संज्ञा अद्यापही सार्थ आहे. ती एक प्रवृत्ती असून; ती सामाजिक जीवनाच्या प्रचलित व्यवस्थेतून निर्माण झाली आहे. जातिभेदाच्या तटबंदीने एकूण समाज जीवनाचे विविध स्वायत्त प्रांत निर्माण करून या प्रवृत्तीला मोठा हातभार लावला आहे. साहित्य आणि शिक्षण क्षेत्रातील आजवर चालत आलेल्या उच्चवर्णीयांच्या वर्चस्वाखाली बहुजन व पददलितातून शिकून शहाणे होऊन पुढे आलेल्या नव्या पिढीतील तरुणांच्या आगमनाने तडे जाऊ लागले; तसेच जातिभेदाच्या तटबंदीला समतावादी विचारसरणीचे हादरे बसू लागले. आजवर पांढरपेशा वर्गातील साहित्यिकांनी साहित्यात जो तोच तोचपणा आणला होता; त्यालाही तळागाळातील शिक्षणाने जागृत झालेल्या तरुण-पिढीने जबरदस्त धक्के द्यायला सुरवात केली. आजपर्यंत मराठी साहित्याला अपरिचित असलेले पद-दलितांचे विश्व साहित्यात साकार होऊ लागल्यावर साहित्याला विस्तीर्ण स्वरूप प्राप्त झाले, यात शंका नाही. विख्यात कथाकार बाबुराव बागुल दलित साहित्याच्या संदर्भात म्हणतात, “दलित म्हणजे वर्णव्यवस्थेला आणि तिच्या समग्र वैचारिक व्यवस्थेला उध्वस्त करू बघणारा दलित, हे जग व जीवन नव्याने मांडू बघणारा, दलित म्हणजे या युगाने ज्याचे हात प्रज्ञावंत, प्रलयंकारी केलेले आहेत आणि ज्यांच्यासाठी आधुनिक शस्त्रे आणि शास्त्रे उपलब्ध करून दिलेली आहेत. या आपल्या दलितांच्या व्याख्येत अमेरिकेतील काळा, गोरा, तांबडा, अफ्रिकन – आशियाई देशातील काळा, गोरा, पिवळा आपल्या देशातील अस्पृश्य, आदिवासी, शोषित, पिडीत येतात.” सुप्रसिद्ध कवी व समीक्षक प्रा. केशव मेश्राम तर म्हणतात, “हजारो वर्षे ज्यांच्यावर अन्याय झाला, अशा अस्पृश्यांनी लिहिलेल्या साहित्याला दलित साहित्य म्हणावे.”

दोन्ही दलित साहित्यिकांनी मांडलेल्या विचारांचा मागोवा घेताना स्पष्ट होते ते असे – बाबुराव बागुलांनी दलितांचा अर्थ अत्यंत व्यापक दृष्टीकोनातून मांडलेला आहे. त्यांत त्यांनी आफ्रिकन निग्रो, अमेरिकेतील काळ्या वर्णांच्या व आशियाई देशातील बऱ्याच शोषित, पिडीत लोकांचा समावेश केलेला आहे. केवळ अस्पृश्य म्हणजे दलित, केवळ माणुसकी हिरावला गेलेला, पशूपातळीवर जीवन जगणारा म्हणजे दलित अशी संकुचित कल्पना बागुलांची नाही. तर प्रा. केशव मेश्राम दलित साहित्य म्हणजे केवळ अस्पृश्यांनी, दलितांनी लिहिलेले साहित्य म्हणजे दलित साहित्य अशी संकुचित स्वरूपाची व्याख्या करतात. पण आजचे दलित साहित्य हे फार व्यापक रूप धारण करून आहे. ज्यांना दलित जाणीव आहे, असेही दलित साहित्य निर्माण करू शकतात व त्यालाही दलित साहित्य म्हटले जाते. अशाच स्वरूपाची परंतु व्यापक अर्थाने केलेली शरदचंद्र मुक्तिबोध यांची व्याख्या आहे. “दलित वाङ्मय म्हणजे दलितोद्धाराचे वाङ्मय नव्हे. माट्यांचे वाङ्मय किंवा खांडेकरांच्या ‘दोन मने’ ह्या कादंबरीचा नायकही

दलितच आहे. ह्यात लेखक वरिष्ठ वर्गाचा असून तो कनिष्ठ वर्गाकडे अनुकंपेच्या दृष्टीने पाहतो. हे दलित वाङ्मय नव्हे. दलित असणे व दलित जाणीव असणे हे भिन्न आहे. दलित जाणिवेतून दलित जीवनविषयक जे वाङ्मय निर्माण होते ते दलित वाङ्मय.” थोर साहित्यिक नरहर कुरुंदकर यांनी दलित साहित्याबद्दल मांडलेले विचार पुढीलप्रमाणे – “दलित साहित्य ही मी केवळ वाङ्मयीन चळवळ समजत नाही. तर ती एक जीवनसृष्टी आहे. असे मी मानतो. प्रत्येक मानवाला स्वातंत्र्य, प्रतिष्ठा आणि भीतीशून्य सुरक्षितता मिळाली पाहिजे अशा भूमिकेवरून निर्माण झालेली एक जीवनसृष्टी वाङ्मयात अभिव्यक्त होत आहे. त्याला मी दलित साहित्य मानतो.” कुरुंदकरांना दलित साहित्य ही एक जीवनदृष्टी वाटते. ही जीवनदृष्टी म्हणजे स्वातंत्र्य, प्रतिष्ठा आणि सुरक्षितता मिळावी त्या हेतूने साहित्यात अभिव्यक्त झालेले जीवनदर्शन होय. प्रा. शरदचंद्र मुक्तिबोधांना मात्र दलित असो अथवा दलितेतर असो लेखक कुणीही असो पण त्याला दलित जाणीव असणे आवश्यक वाटते; केवळ दलित लेखक

असेल आणि जर दलित जाणीव नसेल तर ते दलित साहित्य होऊच शकणार नाही असे ते म्हणतात. आजचे दलित साहित्य डॉ. आंबेडकरांच्या तत्वज्ञानातून जन्माला आले आहे असे म्हणत असताना स्वातंत्र्योत्तर काळातील ही एक महत्वाची वाङ्मयीन उपलब्धी होय हे लक्षात घ्यावे लागते. तसे पहिले तर दलित लेखनाची परंपरा तेराव्या शतकापासून आहे. संत चोखामेळा आणि त्याचे संत घराणे यांची भक्तिरचना ही एक प्रकारे त्यांच्या मनाचे आक्रंदनच होय, परंतु अन्याय, अत्याचार आणि छळ सहन करीत चोखामेळ्याने आपली जीवनयात्रा संपवली. आपले दुःख म्हणजे आपल्या नशिवाचा लेख होय, अशीच त्याची धारणा होती. त्यामुळे कर्मविपाकाच्या पाशातून चोखामेळा कधीही मुक्त होऊ शकला नाही. "तुझिया दरीचा कुतरा नको मोकलू दातारा" अशी आर्त हाक चोख्याने मारली ती कोणत्या अर्थाने ? तो अन्याय, अत्याचार व छळ याविरुद्धची तक्रार नव्हती. विसाव्या शतकात मात्र डॉ. बाबासाहेबांच्या विचारांनी आणि तत्वज्ञानाने दलितांचे एक नवे जग निर्माण झाले. त्यांच्यात स्वाभिमान आणि आत्मसन्मान निर्माण झाला. आणि याच प्रेरणेतून दलित साहित्य जन्माला आले. दलित लेखकांनी विषमतावादी समाजव्यवस्था नाकारली; आणि मानवी प्रतिष्ठेचा पुरस्कार केला. आंबेडकरी प्रेरणेने जागून उठलेल्या दलित लेखकांनी पुराणप्रियता, ईश्वरीय अधिसत्ता, अन्याय, अत्याचार, सामाजिक विषमता नाकारली. आणि आपल्या लेखनातून समतावाद, मानवी प्रतिष्ठा, मानवी स्वातंत्र्य आणि वैज्ञानिकतेचा पुरस्कार केला. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांनी म्हटले होते - "आज समाजजीवन व राष्ट्रजीवन प्रगत होणारे साहित्यशास्त्र निर्माण होत नाही. आपल्या स्वतंत्र देशाला एकात्मतेची बंधुत्वाची नितांत गरज आहे. एकात्मता आणि बंधुता हा आपल्या राष्ट्राचा गाभा ठरला पाहिजे. त्याशिवाय प्रबळ संघशक्ती निर्माण होणार नाही. म्हणून साहित्य कलेतूनही मानवतावादी शास्त्र निर्माण होण अत्यावश्यक आहे. त्यासाठी साहित्य क्षेत्रात राष्ट्रोपयोगी क्रांतीची लाट उसळली पाहिजे. अलीकडे तर साहित्याच्या कडा काळवंडत चाललेल्या आढळतात. पीक फार आहे. पण ते निसत्व आहे. आज आम्हाला ज्ञानसत्वाची भूक आहे. तेंव्हा तत्परतेने सावध होऊन जीवन व संस्कृतीविषयक मूल्ये साहित्यिकांनी जोपासली पाहिजे. ती सतेज बनविली पाहिजे. म्हणून मला साहित्यकारांना आवर्जून सांगावायचे आहे की उदात्त जीवनमूल्ये सांस्कृतिक मूल्ये आपल्या साहित्य प्रकारातून आविष्कृत करा. आपल लक्ष आंकुचित, मर्यादित ठेवू नका. ते विशाल

बनवा. आपली वाणी चार भिंतीपुरती राखू नका. खेड्यातील उपेक्षित, दुःखी समाजाचं साहित्याद्वारे त्याचं जीवन उन्नत करण्यास झटा. त्यातच खरी मानवता आहे. हीच प्रेरणा घेऊन डॉ. बाबासाहेबांच्या प्रेरणेने व त्यांच्या तत्वज्ञानातून दलित लेखक, समीक्षक, विचारवंत उदयास आलेले आहेत. दलित साहित्यिकांनी आपल्या निर्मितीच्या संदर्भात जे विचार मांडले ते चिंत्य आहेत. थोर दलित साहित्यिक अण्णाभाऊ साठे यांनी काल्पनिकतेला कधीही ग्राह्य मानले नाही. जे जीवन आपण जगतो तेच साहित्यात यावे अशी त्यांची धारणा होती. आपल्या लेखनाचे प्रयोजन प्रतिपादन करताना ते म्हणतात - "जशी प्रतिभेला वास्तवाची गरज असते, तद्वतच कल्पनेला जीवनाचे पंख असणे आवश्यक असते आणि अनुभूतीला सहानुभूतीची जोड नसेल तर आपण का लिहितो याचा पत्ताच लागण शक्य नाही. म्हणून मी लिहिताना सदैव सहानुभूतीने लिहिण्याचा प्रयत्न करतो; कारण ज्यांच्या विषयी मी लिहितो, ती माझी माणसे असतात." साहित्य निर्मितीसाठी वास्तवता, जीवनाभूव आणि सामाजिक जाण या गोष्टींची नितांत गरज असते. त्याशिवाय साहित्य निर्मिती होणे अशक्य आहे, असे अण्णाभाऊ साठे यांना वाटते. आणि आतापर्यंत जो समाज उपेक्षित राहिला, आर्थिक, सांस्कृतिक व साहित्य क्षेत्रात सुध्दा; त्या आपल्या लोकांविषयी लिहिने मी माझे कर्तव्य समजतो, अशीही ते कबुली देतात. एवढेच नाही तर - "मी जीवन जगतो, अनुभवतो, पाहतो, तेच मी लिहितो. मला कल्पनांचे पंख लावून भरारी मारता येत नाही." असे स्पष्ट मत आपल्या "बरबाद्याकंजारी" च्या प्रस्तावनेत ते मांडतात. दलित लेखकाजवळ अनुभवाचा इतका विपुल साठा आहे की, त्याला कल्पनेची जोड लावण्याची गरजच भासत नाही. आणि 'वास्तवता' हे एकदा दलित साहित्यातील तत्व मान्य केल्यावर मनाला स्वैर सोडणे दलित लेखकांना परवडण्यासारखे नाही. सामाजिक जाणिवेने प्रेरित होऊन थोर समीक्षक डॉ.म.ना.वानखेडे हे दलित लेखकांना सावध करताना म्हणतात - "समाज ढवळून निघत आहे; आपल्या आतापर्यंतच्या स्थिर सिंहासनाला भुकंपाचे धक्के बसत असल्याची जाणिव झाल्यामुळे पांढरपेशी लेखक व समीक्षक कलेसाठी कला हा मंत्र अधिकच जोराने बडबडू लागला आहे. दलित लेखकांनी या सुंदर दिसणाऱ्या सायरनच्या आवाजाला भुलू नये. कला समाजासाठी नाही तर कुणासाठी आहे?" वस्तुस्थितीचे भान असलेले डॉ.म.ना.वानखेडे संपूर्ण दलित लेखकांना जागृत करीत आहेत. आव्हान देत आहेत. ते स्पष्ट विचारतात; कला समाजासाठी नाही तर कुणासाठी असते ?

दलित लेखक जर या वादाला भुलून बळी पडायला लागला तर दलित साहित्याला जी एक दिशा आहे. तिला एक खास प्रेरणा लाभली आहे. त्याचे काय होणार ? अशी एक प्रकारची भीती डॉ.म.ना.वानखेडे यांना वाटते. बाबासाहेबांनी स्वातंत्र्य, समता, बंधुता व एकात्मता या जीवन मूल्यावरच जास्त भर दिला होता. त्यांनी साहित्यिकांना एक प्रकारची मानवतावादी विचाराची दृष्टी दिली. खेड्यातील गरीब समाजाकडे, तसेच अस्पृश्य, आदिवासी जाती – जमातींचे जीवन साहित्यातून प्रगट होणे आजच्या मानवी समाजाच्या दृष्टीने किती महत्वाचे आहे हे पटवून दिले. याच डॉ.बाबासाहेब आंबेडकरांच्या प्रेरणेने प्रेरित होऊन पुढे दलित साहित्य अवतरू लागले. ही आंबेडकरी प्रेरणा दलित साहित्यिकांना जीवदान ठरली. याच दलित साहित्य प्रेरणेविषयी डॉ.पानतावणे म्हणतात – “ दलित साहित्याचे प्रेरक, प्रवर्तक व जनक आज कोणीही दलित लेखक नाही, जो ज्वालामुखी झाला आणि ज्याने आत्मजागृतीसाठी सारी मने पेटवली तो डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर नावाचा महान माणूस आणि त्यांचे महान तत्वज्ञान हेच दलित साहित्याचे आदि आणि अंती प्रेरणास्थान आहे.” ज्या समाजाला वर्षानुवर्षे अस्पृश्य म्हणून गावकुसाबाहेर गुलामीचे जिणे जगावे लागले. कुत्र्या-मांजरापेक्षाही हीन दर्जाचे जिणे ज्याच्या वाट्याला आले. अशा समाजाच्या मृत झालेल्या मनावर आपल्या तत्वज्ञानरूपी अमृताचे सिंचन करून ज्यांना जीवदान दिले. स्वतः ज्वालामुखी बनून पेटत राहिले, जळत राहिले; आणि दलितांना प्रकाश दिला; चैतन्य दिले. त्या महान पुरुषाची बरोबरी करणारा अजून झाला नाही व होणारही नाही असा विचार डॉ.पानतावणे व्यक्त करतात. दलित साहित्याच्या प्रेरणेविषयी विद्याधर पुंडलिक आपले विचार व्यक्त करताना म्हणतात – “ दलित साहित्यामागील सामाजिक प्रेरणा अधिक जीवंत आणि खऱ्या आहेत. त्यामागे हिंदू समाज रचनेतील भयानक विषमता आणि अन्यायाबद्दलची धगधगीत भाजून काढण्याची चीड आहे.” दलित साहित्य समाजाभिमुख असून वास्तव आहे, या साहित्यामधून दलितांच्या जीवनाचे हुबेहूब प्रतिबिंब उमटत असते. समाजापुढे ते एक प्रकारचा आरसा धरत असते. हे सगळ त्यांनी भोगलेल्या, अनुभवलेल्या अनुभूतीतून साकार होत असते. जातीयता, वर्णद्वेष, वर्णभेद, आर्थिक, सामाजिक, राजकीय व्यवस्थेतील विषमता, अस्पृश्यता आपल्या संस्कृतीने दिलेले दुःख, व्यथा, वेदना, चीड, अन्याय, नकार, विरोध हे सगळे या साहित्यात येते. दलितांच्या जीवनातील सत्य घटना, प्रसंग, व्यक्ती, व्यक्तीसमूह यांचे यथार्थ दर्शन या

साहित्यात घडते; दलित साहित्याचे ते आदि व प्रमुख कर्तव्य आहे. म्हणून समाज व दलित साहित्य यांचा अत्यंत निकटचा संबंध आहे हे स्पष्ट होते.

समारोप

दलित साहित्याच्या संदर्भात दलित साहित्याकडे पाहण्याचा दृष्टीकोन सुद्धा लक्षात घेणे आवश्यक आहे. दलितानी साहित्यीनिर्मिती करताच त्याकडे उपहासगर्भितेने पाहणारा समीक्षकाचा आणि वाचकाचा एक वर्ग निर्माण झाला. हे साहित्य सूडवाद्यांचे साहित्य आहे, सवतासुभा निर्माण करणारे साहित्य आहे, अशी टीका झाली. मराठी साहित्याच्या कक्षा रुंदावण्याचे काम दलित साहित्याने जसे केले त्याचप्रमाणे जीवनवादाच्या कक्षा रुंदावण्याचे कामही याच साहित्याने केले. पारंपारिक जीवनदृष्टी आणि साहित्यदृष्टी यास दलित साहित्याने एक प्रकारे हादरा दिला, असे म्हणता येईल. त्यामुळेच कदाचित दलित साहित्यावर टीकेचे बाण सोडण्यात आले असावेत. या टीकेचा अनेक दलित समीक्षकांनी समाचार घेतला आहे.आज दलित साहित्याचा काही समीक्षक उपहासाने निर्देश करित असले तरी दलित साहित्यातील वाङ्मयीन गुणवत्ता नाकारता येत नाही. दलित कविता, कथा, नाटक, आत्मकथन आणि वैचारिक लेखन या दृष्टीने लक्षात घ्यावे लागेल.

संदर्भग्रंथ सूची :

- १) दलित साहित्य वेदना आणि विद्रोह – भालचंद्र फडके
- २) भारतीय दलित साहित्य – शरणकुमार लिंबाळे
- ३) साहित्याचा अन्वयार्थ – नागनाथ कोत्तापल्ले
- ४) शतकातील दलित साहित्य - शरणकुमार लिंबाळे
- ५) समग्र लेखक – बाबुराव बागूल (संपादक – डॉ.कृष्णा किरवले
- ६) समाज आणि साहित्य – डॉ.सदा.कऱ्हाडे
- ७) साहित्य आणि समाजजीवन – वि.स.खांडेकर
- ८) मराठी साहित्यातील स्पंदने – गो.म.कुलकर्णी
- ९) प्रतिभा साधन – प्रा.ना.सी.फडके
- १०) रुपवेध – नरहर कुरुंदकर

ग्रामीण विकासात सिंचनाचे महत्त्व : एक अभ्यास

प्रा.डॉ.डी.पी. जावळे

ज्ञानोपासक कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय परभणी

प्रस्तावना:

देशाचा विकास हा ग्रामीण भागाच्या विकासावर अवलंबून आहे. म्हणून महात्मा गांधीजीच्या खेड्याकडे चला या उक्तीप्रमाणे सध्याच्या जागतिकीकरणाच्या युगात ग्रामीण विकासाच्या योजना निर्माण करून त्याची प्रभावी अंमलबजावणी करणे महत्त्वाचे आहे. कारण देशाच्या एकूण लोकसंख्येच्या 68. 84 टक्के जनता आजही खेड्यातच वास्तव्य करीत आहे. आणि एवढ्या मोठ्या जनतेला उपेक्षित ठेवून कोणत्याही देशाचा विकास होणार नाही, हे तितकेच सत्य आहे. ग्रामीण भागातील सर्व जनतेचा मुख्य व्यवसाय शेती आहे. म्हणून शेतीचा विकास करण्यासाठी प्रजनन यावर आधारित शेती न करता पावसाच्या पाण्याचे योग्य व्यवस्थापन करून त्या पाण्याचा दीर्घकाळ उपयोग करणे आवश्यक आहे. त्या आधारावरच आज भारतामध्ये व जगातील विविध देशांमध्ये मध्यम सिंचन प्रकल्प राबवून शेती विकासाला चालना देण्याचा प्रयत्न करताना दिसून येतो. शेतीच्या विकासावरच ग्रामीण विकास अवलंबून असतो आणि शेतीचा विकास हा पाण्यावर अवलंबून असतो. पाण्याचे व्यवस्थापन म्हणजे पर्यायी शेतीचा विकास करण्याचे महत्त्वाचे साधन म्हणून सिंचन व्यवस्थेकडे पाहिले जाते. ग्रामीण विकास ही महत्त्वपूर्ण संकल्पना आहे. विविध देशातील लोक या संकल्पनेचा अर्थ आपल्या सोयीनुसार लावतात व ग्रामीण विकास साधतात. विश्व बँकेच्या मते ग्रामीण विकास म्हणजे "ग्रामीण भागातील गरिबी भूमिहीन शेतमजूर यांचा आर्थिक व सामाजिक जीवनात परिवर्तन करण्यासाठीचा आराखडा होय.

उद्दिष्टे :

- 1) ग्रामीण भागाच्या विकासात सिंचनाचे महत्त्व अभ्यासणे
- 2) ग्रामीण भागाची उपजीविका भागवण्यासाठी व उत्पन्नात वाढ होण्यासाठी सिंचनाची आवश्यकता आहे.

१) ग्रामीण विकास संकल्पना:

ग्रामीण विकास संकल्पनेत ग्रामीण विकास व विकास अशा दोन शब्दांचा समावेश आहे. त्यानुसार ग्रामीण विकास म्हणजे सर्वांगीण विकास साधणे होय. ग्रामीण विकासाची संकल्पना ही अत्यंत गुंतागुंतीची व्यापक आणि विविध अंगी संकल्पना आहे. या संकल्पनेला विविध अंगानी मानले गेल्यामुळे आतापर्यंत यांची सर्वमान्य अशी व्याख्या विकसित होऊ शकली नाही. काही तज्ञांनी या संकल्पनेला परिभाषित करण्याचा प्रयत्न केला आहे. World Bank-- "A strategy designed to improve the economic and social life of specific group of people, the rural poor". रॉबर्ट चेंबर्स यांच्या मते-- ग्रामीण विकास ही एक अशी संकल्पना आहे. ज्यामध्ये संस्था, संघटन, सरकारची धोरणे आणि कार्यक्रम अशा औद्योगिक सुविधा ज्या प्रामुख्याने ग्रामीण भागात आर्थिक विकासाला गतिशील करण्यासाठी, तेथील लोकांना रोजगार उपलब्ध करून

देण्यासाठी आणि अंतिमतः ग्रामीण लोकांच्या जीवनमानात सुधारणा घडवून आणण्यासाठी ज्या ज्या महत्त्वपूर्ण बाबी असतील त्याला ग्रामीण विकास म्हणता येईल. वरील व्याख्या अनुसार ग्रामीण विकासामध्ये कृषी आणि अकृषी अशा पैलूंचा समावेश होतो. आर्थिक व सामाजिक समता निर्माण करणे, सामुदायिक विकास साधणे, तर ग्रामीण विकासाच्या नवीन विचार सारणी यानुसार दारिद्र्यात घट, आर्थिक सामाजिक विषमतेत आणि रोजगाराच्या स्थितीत सुधारणा घडवून आल्यास त्याला विकासाचे निर्देशांक मानले जाते. ग्रामीण विकासात प्रामुख्याने कृषी विकास, आरोग्य संदेशवहन सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक यासारख्या घटकांचा समावेश होतो.

२) सिंचन म्हणजे काय?:

देशाच्या विकासासाठी देश अन्नधान्याच्या तसेच कृषी क्षेत्राच्या बाबतीत स्वयंपूर्ण असा असावा लागतो. कृषी क्षेत्राचा विकास हा सिंचनावर अवलंबून असतो. शेतीला सर्व घटक उपलब्ध आहेत परंतु पुरेशा प्रमाणात पाणी उपलब्ध नसेल तर शेतीतून मुबलक प्रमाणात उत्पन्न मिळणार नाही. पाण्याला अनन्यसाधारण महत्त्व आहे. पाणी मुबलक प्रमाणात असेल तर कृषी विकास सहज शक्य होतो. सिंचनामुळे कृषी उत्पादनात वाढ होते त्याचबरोबर शेतमजुराच्या

कामाच्या दिवसातही वाढ होते. शेतकऱ्यांच्या राहणीमानाचा दर्जा उंचावतो. अनेक सामाजिक, आर्थिक सुधारणा घडून येतात. पाणी हे सर्वात महत्वाचे असे आहे. भारतातील शेती नैसर्गिक पावसाच्या पाण्यावर अवलंबून असल्यामुळे ज्या ठिकाणी कोरडवाहू जमीन आहे त्या ठिकाणी शेतकरी वर्षातून एकदाच पीक घेतो परंतु सिंचनाची योग्य व्यवस्था केलेली असेल तर वर्षातून दोन वेळेला पीक घेऊन शेतीतील उत्पादन देखील वाढते व शेतमजुरांना दोन हंगामात रोजगार देखील उपलब्ध होतो. सिंचनामुळे शेतीची भटकंती स्थिरावली आहे. शेती व्यवसायाला स्थैर्य प्राप्त झाले आहे. अन्नधान्याच्या बाबतीत भारत स्वयंपूर्ण झाला आहे. त्यामुळे शेती क्षेत्राचा योग्य विकास होण्यासाठी सिंचन महत्वाची अशी भूमिका बजावतो.

३) ग्रामीण विकास आणि सिंचन:

शेतीच्या विकासासाठी सिंचन हे प्रभावी असे माध्यम आहे. शेतीचा विकास झाला म्हणजे तेथील गावाचा विकास झाला. सिंचनाचे योग्य पद्धतीने व्यवस्थापन केलेले असेल तर शेतीचा विकास साध्य होतो. पर्यायाने देशाचा विकास साध्य होतो. सिंचनामुळे शेतीचा विकास होतो. ग्रामीण भागात प स्थैर्य प्राप्त होते. शेतकऱ्याकडे आर्थिक सुबत्ता येते. सिंचन क्षेत्र वाढले तर शेतीला योग्य संरक्षण मिळते. ग्रामीण भागातील सिंचन क्षेत्र वाढले निष्कर्ष :

- १) सिंचनामुळे शेतकऱ्यांच्या उत्पादनात वाढ दिसून येते
- २) ग्रामीण सिंचन क्षेत्रात वाढ झाल्यामुळे शेतकरी 90 टक्के रासायनिक खताचा वापर करून पीक उत्पादकतेत वाढ करत असल्याचे निदर्शनास येत आहे
- ३) बदल झालेला असल्यामुळे शेतकऱ्याचा कल नगदी पीक घेण्याकडे जास्त प्रमाणात दिसून येतो.
- ४) ग्रामीण विकास झाला म्हणजेच देशाचा विकास होतो असे आपल्याला म्हणता येईल

संदर्भ सूची :

1. मोरवचीकर रा. श्री. 'भारतीय जलसंस्कृती =स्वरूप आणि व्याप्ती 'सुमेरू प्रकाशन डोंबिवली २००६
2. ढमढेरे एस. ही. 'महाराष्ट्रातील जलसंपदा', डायमंड पब्लिकेशन, पुणे

तर शासनास मोठ्या प्रमाणात कर मिळतो व शासनाची महसूल उत्पादनाची वाढ चांगल्या प्रकारे होते. सिंचनामुळे ग्रामीण भागातील दारिद्र्य दूर होण्यास मदत होईल. शेतकऱ्यांना रोजगाराच्या समान संधी उपलब्ध होतात. आर्थिक विवेचनाचा प्रश्न सुटतो ग्रामीण भागाचा विकास झाला तर देशाचा विकास साध्य होईल.

४) ग्रामीण विकासात सिंचनाची भूमिका:

ज्या देशात पाऊस पडण्याचे प्रमाण कमी असते व निश्चित अशा स्वरूपाचा पाऊस पडतो. त्या ठिकाणच्या शेती व्यवसायाचे यश अपयश हे पाणी पुरवठ्यावर अवलंबून असते. अनिश्चित व अनियमित पडणारा पाऊस पिकाच्या वाढीसाठी पोषक नसतो. परिणामी पिकाची उत्पादकता कमी होते. ज्या प्रमाणात लोकसंख्या वाढत आहे, त्याच प्रमाणात त्याची अन्नधान्याची गरज देखील वाढत आहे. ही वाढती अन्नधान्याची गरज पूर्ण करण्यासाठी शेतीला पाण्याची गरज आहे. पावसाचे वाया जात असलेली पाण्याची जतन करणे, संरक्षण करणे व त्याचे योग्य व्यवस्थापन करणे गरजेचे आहे. शेतीसाठी जो कृत्रिम रीतीने पाणीपुरवठा केला जातो त्याला जलसिंचन असे म्हणतात.

शेती व्यवसायामध्ये विविध पिकाची पाण्याची गरज लक्षात घेऊन शेतीला नियोजन...

3. चितळे मा.आ. 'भारतीय जल क्रांतीचे पदचिन्हे' साप्ताहिक विवेक हिंदुस्तान प्रकाशन संस्था
4. सावंत सुरेश "महाराष्ट्राचे शिल्पकार शंकरराव चव्हाण" महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळ मुंबई
5. शिंदे अण्णासाहेब इजराइल च्या पाणी प्रश्नाचे सु इन्नायलची तोंड ओळख शुगर एम्प्लॉईज को-ऑप सोसायटी लिमिटेड.

छत्रपती शिवाजी महाराजांचे जलव्यवस्थापन:एक अभ्यास

प्रा. शिंदे आत्माराम हानवतराव

ज्ञानोपासक कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय परभणी

प्रस्तावना:

मानवाच्या उत्पत्तीपासून मानव व पाणी याचा जवळचा संबंध आपल्याला दिसतो. किंबहुना मानवाच्या प्रारंभिक आयुष्याचा अभ्यास करता मानवाने आपल्या वस्त्या पाण्याच्या सानिध्यात स्थापन केलेल्या आढळून येतात. म्हणून सप्तसिंधूच्या प्रदेशात सिंधू कालीन समाज आपले घरेदारे बांधून सिंधू संस्कृती सारखी एका सधन नागरी संस्कृती उदयास अनु शकले.प्राचीन कालखंडा प्रमाणे मध्युगीण काळातही जलस्रोतांचे साठे तत्कालीन शासकांनी स्थापन केलेले दिसतात उदा.झिलोका शहर उदयपुर राजस्थान ,खजाना बाऊडी मराठवाडा बीड इत्यादी अशा जल साठ्यांचा उल्लेख करता येईल . तर महाराष्ट्राचा विचार करता महाराष्ट्रात वाहणाऱ्या नद्या ह्या हंगामी स्वरूपाच्या असल्यामुळे पावसाळ्यात पाण्याने तुडुंब भरून वाहतात .तर उन्हाळ्यात कोरड्या पडतात या नद्यांच्या पाण्याचे योग्य व्यवस्थापन नसल्यामुळे महाराष्ट्राला सतत पाणी टंचाईला तोंड द्यावे लागले आहे. छत्रपती शिवाजी महाराजांनी त्या काळात आपल्या स्वराज्यात ज्या जलव्यवस्थापनाच्या काही योजना आखल्या व त्यातून ३००० ते ४००० फुट उंच असणाऱ्या गडावर ज्या प्रमाणे त्यांनी जलव्यवस्थापनाची कामे केली व गाडकील्यांना पाणी टंचाई पासून मुक्त केले. त्याच्या या जलव्यवस्थापनातील काही गोष्टीचा अभ्यास केल्यास तो महाराष्ट्राला पाणी टंचाई पासून मुक्त कारणासाठी नक्कीच मार्गदर्शक ठरेल.

उद्दिष्टे :

- १) शिवपूर्व कालीन जलस्रोतांचा आढावा घेणे.
- २) शिवकालीन जलव्यवस्थापनाचा अभ्यास करणे.
- ३) शिवकालीन गडावरील जल साठ्यांचा अभ्यास करणे.

१) शिवपूर्व काळातील जलव्यवस्थापन :

जगाच्या पाठीवर जलव्यवस्थापना बद्दल प्राचीन काळापासून उल्लेख आढळतात.प्राचीन काळात पाणी व्यवस्थापनाची अनेक पुरावे ऋग्वेद व यदुर्वेदात सापडतात.जगाचा पाणी व्यवस्थापनाचा इतिहास पहिला तर जगात सर्वात प्रथम नाईल नदीवर कोशेश येथे इ.स.पू.२९०० च्या सुमारास धरण बांधण्यात आले होते.या धरणाची उंची १५ मी होती मिनिझ या राज्याने मेंफीस या राजधानीला पाणी पुरवण्यासाठी बांधले होते. इ.स.पू.३२२ मध्ये मौर्य सत्तेची स्थापना झाली.त्यावेळी महाराष्ट्र अश्मक या नावाने ओळखल्या जात असे. या काळात महाराष्ट्र व गुजरातचा काही प्रदेश मौर्य साम्राज्यात येत असल्याने मौर्य शासक सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य याने या प्रदेशात जल व्यवस्थापनाची अनेक कामे केलेली पाहायला मिळतात .त्याने गुजरात येथील गिरनार येथे सुदर्शन झील /सरोवर ची निर्मिती करून त्या काळातील पाणी प्रश्न सोडवण्याचा प्रयत्न केला होता.मौर्यां नंतर महाराष्ट्रावर सातवाहन सत्ता होती .सातवाहनानी आपली राजधानी प्रतिष्ठान आजचे पैठण या ठिकाणी स्थापन केली होती.त्याचे महत्वाचे कारन म्हणजे हे शहर गोदावरी नदी काठी

असल्यामुळे या भागातील सुपीक जमीन व मुबलक पाणी पुरवठा असावा. पुढे राष्ट्रकुट सत्ता स्थापन झाली त्या काळात काही प्रमाणात जलव्यवस्थापनाची कामे झाली पण ती तात्पुरत्या स्वरूपाची होती.पुढील काळात मुस्लीम सत्तेची स्थापना झाली. मोगल काळात शेरशहा व शहाजान याने भारतात मोठ्या प्रमाणात विहिरी खोडून जलव्यवस्थापनाची कामे केल्याची इतिहासात नोंद आढळते .पण त्याचे प्रमाण उत्तर भारतात जास्त होते.वरील प्रमाणे इतिहासाचा अभ्यास करता शिवपुर्काळातील जलव्यवस्थापन हे नैसर्गिक स्रोतावर अवलंबून असल्याचे पाहायला मिळते त्यामुळे मध्ययुगीन काळात पडत असलेल्या सततच्या दुष्काळाना व पाणीटंचाईला लोकांना सामोरे जावे लागत असल्याचे दिसून येते.

2) शिवरायांची जलव्यवस्थापनातील दूरदृष्टी:

छत्रपती शिवाजी महाराजांनी स्वराज्याची निर्मिती केली.या स्वराज्याला जमिनीचा तुकडा न मानता आपला परिवार मानला. लोकांच्या सुख दुःखात सहभागी होऊन त्यांच्या व्यथा समजून त्यांचे प्रश्न सोडवण्याचा सतत प्रयत्न केला.शिवकाळात बहुतांश लोक शेती करणारे कष्टकरी लोक होते,बहुतांश लोकांचे उपजीविकेचे साधन शेती होते, स्वराज्याची भौगोलिक रचना ,प्रजण्याचे अल्प प्रमाण व सतत पडत असलेला दुष्काळ यामुळे त्याकाळी पाणी टंचाईला तोंड द्यावे लागत असे.ज्याप्रमाणे शेतीला पाण्याची आवश्यकता असते त्याच प्रमाणे गडावरही माणसाना पाण्याची आवश्यकता होती. जे

किले बांधले किवा जिंकले होते त्या वर ही पाणी व्यवस्थापनाची आवश्यकता भासत होती.इ.स.१६७० मध्ये भरतगडच्या टेकडीवर छ. शिवाजी महाराजांनी किल्ला बांधण्याच्या दृष्टीने पाहणी केली परंतु या ठिकाणी पाण्याची कमतरता पाहतात तेथे किल्ला बांधण्याचे रद्द केले होते. छ.शिवाजी महाराजांनी गाड्कील्याच्या रक्षणासाठी पाणी अत्यंत महत्वाचे आहे हे जाणले होते.त्यामुळे किल्ल्यावर पाण्याची व्यवस्था करण्यावर त्यांनी भर दिला गडावर वर्षभर पुरेल व प्रसंगी गडावर हल्ला झाला तरी अशा आणीबाणी काळात ही शिबंदिला पुरून पाणीसाठा शिल्लक कसा राहिल याची महाराजांनी काळजी घेतली होती.यातून शिवरायांचा जलव्यवस्थापनातील दूरदृष्टीकोण पाहायला मिळतो. छ.शिवाजी महाराजांनी जलव्यवस्थापनाची नीती अखात असताना काही नियम ठरवले होते ते रामचंद्र अमात्य यांना लिहिलेल्या पात्रातून दिसून येतात.

३) गडावरील जलव्यवस्थापन:

छ.शिवाजी महाराजांनी स्वराज्यात गडांना अत्यंत महत्वाचे स्थान दिले आहे. त्यामुळे त्यांनी अनेक गड जिंकले तर अनेक गडांचे बंदकाम केले आहे.महाराजांनी गडांच्या रक्षणास पाणी किती महत्वाचे आहे हेरले होते .एखांदा गड बांधत असताना छ.शिवाजी महाराजांनी काही आदेश काढले होते ते म्हणतात गडा वरील आधी उदक पाहून किल्ला बांधावा ,पाणी नाही आणि ते स्थळ तर बांदने प्राप्त झाले तर आधी खडक फोडून तली-टाकी खंदून प्रज्यन्य काळापर्यंत संपूर्ण गडास पाणी पुरेल एवढी मजबूत बांधणी करावी .गडावर पाणी आहे म्हणून ते पुरते तितक्यावर अवलंबून न राहता उद्योग करावा.लढाईच्या प्रसंगी शत्रू सैनाच्या दारूगोळ्याच्या हल्यात किल्या वरील पाण्याचे झरे आटण्याची शक्यता असते. त्यामुळे गडावर मुबलक प्रमाणात पाणीसाठा असावा.त्याकडे महाराजांचे बारकाईने लक्ष होते.साठवलेल्या पाण्याला "जिकेरीयाचे " पाणी म्हटले जात असे . जिकेरीयाचे पाणी साठवून ठेवण्यासाठी गडावर दोन-चार तली-टाकी बांधून त्यात अतिरिक्त पाणी साठून ठेवून ते व्यवस्तीत जतन करावे.ते पाणी स्वच्छ राहिल याची काळजी घ्यावी असे आदेश महाराजांनी देले होते.गडावरील पाणी व्यवस्थापनाची उदाहरणे पाहून असताना रायगड,प्रतापगड,शिवनेरी अशा अनेक गडांचे दाखले देता येतील. वरील सर्व बाबींचा विचार करता छ.शिवाजी महाराजांना गडावरील जलव्यवस्थापनाची भूमिका भविष्याकडे पाहण्याची दूरदृष्टी लक्षात येतो.

४)शेतीच्या पाण्याचे व्यवस्थापन:

शिवकालातील बहुतांश प्रजा हि शेतीवर अवलंबून होती.त्यामुळे या जनतेला सुखी करायचे असेल तर त्यांच्या उत्पन्नात वाढ केल्या शिवाय पर्याय नाही असे महाराजांनी हेरले होते. शेती हि नैसर्गिक जल स्रोतांवर अवलंबून असल्यामुळे.पावसाळ्यात मुबलक असणारे पाणी उन्हाळ्यात पिण्यासाठी मिळत नव्हते त्यामुळे या पाण्याचा योग्य वापर होण्यासाठी योजना आखणे आवश्यक होते.त्यासाठी छ. शिवाजी महाराज यांनी योजना आखली ती म्हणजे बंधारे बांधने व कालवे खुदून हे पाणी पाणी शेतीस पुरवणे. छ. शिवाजी महाराज यांनी जलव्यवस्थापन व सरकारच्या सोयीसाठी शेतीचे बागायती व जिरायती असे दोन प्रकारे वर्गीकरण केले होते.स्वराज्यात शेती सिंचनाचे तीन प्रकार केले होते. पहिला प्रकार म्हणजे छोटे छोटे नाले खोदणे किवा बंधारे बांधने आणि पाठच्या सहायाने शेतीस पाणी पुरवणे त्याला पाटस्थळ असे म्हणत.दुसऱ्या प्रकारात शेतात विहिरी खोदून मोट्या सहायाने शेतीस पाणी देणे त्याला मोटस्थळ म्हणत तर तिसऱ्या प्रकारात छोत्या ओढ्यांना थोड्या उंचीच्या ठिकाणी बांध घालून जमिनीला पाणी पुरवणे त्याला फुग्याखालील जमीन असे म्हणत छ. शिवाजी महाराजांनी बंधारे बांधणे कालवे खोदणे आणि त्याची देखभाल करणे या कामात जनतेला सहभागी करून घेतले होते .ज्या शेतकऱ्यांनी कालवे खोदून जमिनीला पाणी देले त्यांना महाराजांनी जमिनी आणि इतर बक्षिसे देऊ केली होती.असी कालव्याची कामे नाशिक जिल्यातील दिंडोरी तर सातारा जिल्यातील वाई भागात मोठ्या प्रमाणात झालेली दिसतात महाराजांनी १५ फेब्रुवारी १६७० मध्ये एक पत्रक कडून पाटाचे पाणी आठवड्यातून एकदाच शेतीसाठी वापरावे असे आदेश दिले होते.यातून महाराजांना जलव्यवस्थापना बरोबरच पाण्याचे योग्य नियोजन कसे असावे ते दिसून येते.

निष्कर्ष :

- १) शिवपूर्व काळातील मानव हा नैसर्गिक जलस्रोतवर अवलंबून होता .
- २) मानवाच्या वाढत्या लोकसंख्येमुळे जलस्रोत तान येत असून जलव्यवस्थापनाची आवश्यकता भासत आहे.
- ३) छ. शिवाजी महाराज यांची जलनीती महत्वाची आहे .
- ४) छ. शिवाजी महाराज यांचे जलव्यवस्थापनाचे कामे मर्गदर्शक ठरतात.
- ५) जलव्यवस्थापन हे काळाची गरज आहे असे दिसते .

संदर्भ सूची

- १) डॉ.मदन माडीकर ,मराठ्यांचा इतिहास, विद्या बुक पब्लिकेशन औरंगाबाद.
- २) डॉ.राजेंद्र धाये,डॉ.रामभाऊ मुटकुळे,छत्रपती शिवाजी महाराज आणि शिवकाळ,अरुणा प्रकाशन लातूर, २०२१
- ३) वा.सी बेंद्रे,श्री छ.शिवाजी महाराजांचे चिकित्सक चरित्र,
- ४) डॉ.अनिल कठारे,मध्ययुगीन भारताचा इतिहास, प्रशांत पब्लिकेशन जळगाव, २०१३
- ५) प्रा.टी.के.बिरादार, मराठ्यांचा इतिहासम,विद्या भारती प्रकाशन लातूर, २०००.
- ६) श्रीमंत कोकाटे,विश्ववंद्य छत्रपती शिवाजी महाराज, जिजाई प्रकाशन,पुणे, २०१२.

संपोषणीय कृषि: उद्देश्य, लाभ एवं सुझाव (गोरखपुर जिले के विशेष संन्दर्भ में)

अमर नाथ सिंह¹ डॉ कमलिनी श्रीवास्तव²

¹शोधार्थी एम० एम० (भूगोल) जे० आर० एफ०

²निदेशक विभागाध्यक्ष- भूगोल विभाग शासकीय महाविद्यालय बरेला जबलपुर (मध्य प्रदेश)

शोध सारांश-

खाद्य सुरक्षा के नाम पर वैश्विक बाजार की ताकतों ने कृषि क्षेत्र को ही दुधारू गाय के रूप में देखा है। खाद, बीज, दवाइयों बेचने वाले इन दानवीय बहुराष्ट्रीय कम्पनीयों की अन्तहीन लाभ लालसा ने कृषि को एक ऐसे खतरनाक कार्य के रूप में परिणित कर दिया है। जैविक खेती कृषि तकनीक न केवल पर्यावरण सुरक्षा एवं मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है, बल्कि रसायन आधारित तुलना में, कम लागत से अधिक लाभ पहुँचाने वाली एवं कृषि के लम्बे समय तक के टिकाऊपन के लिए भी उपयोगी है।

प्रस्तावना-

संपोषणीय खेती इस नीले ग्रह के लिए वर्तमान में जितनी आवश्यक हो गयी है, उतनी पहले कभी भी नहीं थी। विगत कुछ वर्षों में रसायनिक खाद जहरीली दवाइयों अनुवांशिक जोड़-तोड़ से तैयार नई किस्मों के प्रयोग से इस अध्ययन क्षेत्र-

बुरी तरह से प्रभावित हुए है। इन दशाओं में हमारे पास अपनी परम्परागत कृषि पद्धति की ओर लौटना ही एकमात्र शेष रह गया है।

अध्ययन क्षेत्र-

प्रस्तुत रिवर्स का पेपर का अध्ययन क्षेत्र जनपद गोरखपुर का है जो उत्तर- प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र में स्थित है जनपद गोरखपुर का अक्षांशीय विस्तार २६° २७' से २७° २७' उत्तरी अक्षांश तथा देशांतर्रीय विस्तार ८३° ५६' से ८४° २४', पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस जनपद की पूर्व से पश्चिम की लम्बाई ५५ किमी० एवं उत्तर से दक्षिण की चौड़ाई ६५ किलो मीटर है। जनपद गोरखपुर का कुल भौगोलिक क्षेत्र ३३२१ वर्ग किलोमीटर है। इसकी उत्तरी सीमा महाराजगंज जनपद एवं दक्षिणी सीमा जनपद मऊ एवं आजमगढ जनपदों द्वारा निर्धारित है। जबकि पूर्वी सीमा जनपद कुशीनगर एवं पश्चिम में संतकबीर नगर जनपद का विस्तार है। कुल मिलाकर जनपद गोरखपुर की भौगोलिक स्थिति सन्तोषप्रद है। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद गोरखपुर में एक जनपद मुख्यालय (गोरखपुर) ७ तहसील मुख्यालय, २० विकासखण्ड मुख्यालय, १९१ न्यायपंचायत, १३५२ ग्राम पंचायत एवं ३३२१ राजस्व ग्राम है जिसमें २९३७ आबाद ग्राम एवं ३८४ गैर आबाद ग्राम हैं वर्ष २०११ की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या ४४४००८९५ व्यक्ति है। जिसमें २२७७७७७ पुरुष एवं २१६३११८ स्त्रियाँ सम्मिलित है जबकि जनघनत्व १३३७ प्रति वर्ग किमी० है।

ऑकडो का स्रोत-

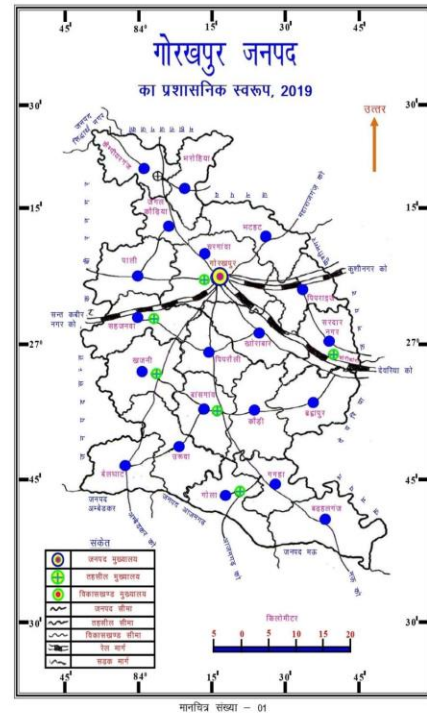
अध्ययन द्वितीयक ऑकडो पर आधारित है। जैसे- जिला सांख्यिकीय पत्रिका, अर्थ एवं सख्या प्रभाग जनपद गोरखपुर २०१९।

संपोषणीय कृषि के उद्देश्य-

१. कार्बनिक तथा पोषक तत्वों वाले हरसंभव तंत्र को सम्मिलित करना
२. उच्च गुणवत्ता वाले भोजन का पर्याप्त मात्रा में उत्पादन।
३. स्थानीय कृषि क्रियाओं में तथा ऊर्जा नवीनीकरण स्रोतों का खेती में उपयोग।
४. मृदा की भौतिक रसायनिक गुणों को विरस्थायी बनाये रखना।
५. मृदा की दीर्घकालीन उर्वरता एवं उत्पादकता में वृद्धि तथा रसायनिक उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।

संपोषणीय खेती के लाभ-

१. कार्बनिक पदार्थ से कार्बनिक अम्ल उत्पन्न होता है, जो भूमि की क्षारीयता को कम कर देता है।



२. नीम की पत्तियों का रस तथा नीम के तेल का प्रयोग कीट नियंत्रण हेतु अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ है।
३. जैविक खादे मृदा कटाव को रोकने में सहायक होती है।
४. जैविक खेती द्वारा मृदा में रसायनों की विषाकता कम होती है। इस प्रकार पर्यावरण संतुलन रहता है।

७. संपोषणीय खेती से उत्पन्न एवं फल- सब्जी, प्राकृतिक एवं उत्तम गुणवत्तायुक्त होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए उत्तम माने जाते हैं।

जैविक उर्वरक प्राप्ति केन्द्र-

१. कृषि विज्ञान केन्द्र
२. बाजार में कृषि सेवा केन्द्र
३. कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश

जैविक कीटनाशकों के उपयोग से लाभ-

१. जैविक कीटनाशी पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य व पशुओं के लिए हानिकारक नहीं होता है। इनके उपयोग से पर्यावरण व परिस्थितिकी तंत्र का संतुलन बना रहता है।
 २. जैविक उद्भव होने के कारण ये शीघ्र ही अपघटित हो जाते हैं। व अवशेष की समस्या नहीं रहती है।
 ३. ये कीटनाशी केवल पोषी कीट पर ही आक्रमण करते हैं तथा अन्य लाभ प्रद जीव इनसे सुरक्षित रहते हैं।
- निष्कर्ष- संपोषणीय खेती कृषि तकनीक न केवल पर्यावरण सुरक्षा एवं मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम है, बल्कि रासायन आधारित तुलना में, कम लागत से अधिक लाभ पहुँचाने वाली एवं कृषि के लम्बे समय तक के टिकाऊपन के लिए भी उपयोगी है। संपोषणीय खेती में प्रयोग होने वाले जैविक खाद किसान स्वयं बना सकते हैं। तथा जैविक कीटनाशकों के प्रयोग से पर्यावरण को सुरक्षित रखा जा सकता है एवं रासायनिक कीटनाशकों की खपत को ही काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सुझाव-

१. रासायनिक उर्वरकों के लगातार प्रयोग से मृदा एवं उत्पादकता की गुणवत्ता में कमी से किसानों को अवगत कराया जाये।
२. जैविक खाद एवं जैविक कीटनाशी हेतु कृषकों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
३. रासायनिक खेती से संपोषणीय खेती की ओर से प्रारम्भिक २-४ वर्षों में गिरावट आयेगी, इस हेतु किसानों को आर्थिक मदद की जानी चाहिए।
४. फसल के रोगों हेतु जैविक दवाईयों का उपयोग किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ-

१. कृषि भूगोल- डॉ अलका गौतम, शारदा पुस्तक भवन, प्रयागराज
२. वंसुधरा (१९९१): परिस्थितिकीय कृषि: एक परिचय, गोरखपुर इन्वॉयमेन्टल एक्शन ग्रुप, अंक १, संख्या २, पृ० १ .
३. कुमार, प्रमिला, एवं शर्मा, एसके० (१९९६): कृषि भूगोल, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पृ० २
४. सिंह, वीर एवं यैतेला, नरेन्द्र (१९८८): हरित क्रान्ति या हरित भ्रान्ति, साप्ताहिक, २४ जुलाई, पृ० १६
७. गाँधी शांति प्रतिष्ठान (१९८६): भारतीय खेती के पुनरुत्थान की दिशा, पर्यावरण कक्षा, नई दिल्ली, पृ० १

गोंदिया जिल्ह्यातील व्यावसायिक संरचना २००१ ते २०११

डॉ.मनिषा कृ. देशपांडे

साहाय्यक प्राध्यापक व भूगोल विभाग प्रमुख, जगत कला वाणिज्य व इ.ह.प.विज्ञान

महाविद्यालय, गोरेगाव. जिल्हा गोंदिया, महाराष्ट्र

प्रस्तावना

प्रस्तुत अभ्यास महाराष्ट्रातील गोंदिया जिल्ह्यातील २००१ ते २०११ या कालावधीतील लोकसंख्येच्या व्यावसायिक संरचनेविषयी तुलनात्मक अभ्यास आहे. या कालावधीत व्यावसायिक संरचनेमध्ये कसा बदल झाला याबद्दलचा अभ्यास आहे. जिल्ह्यातील बहुतेक लोक शेती ती व्यवसायात गुंतलेले आहेत. २०२१ च्या जनगणनेनुसार एकूण कामगारांची संख्या ६६५४१९ आहे. यामध्ये १३७१८३ शेतकरी आहेत. १४७३६६ शेतमजुर आहेत. गोंदिया जिल्ह्याची लोकसंख्या १३२२५०७ इतकी आहे. यामध्ये पुरुष लोकसंख्या ५४८३७ व स्त्री लोकसंख्या ४६१४०६ इतकी आहे. एकूण लोकसंख्येपैकी २२५९३० लोकसंख्या शहरी आहे. तर १०९६५७७ लोकसंख्या ग्रामीण आहे. ही लोकसंख्या ८३३ गावांमध्ये व २ नगरामध्ये विखुरलेली आहे.

महाराष्ट्राच्या ईशान्य सिमेला लागून असलेल्या गोंदिया जिल्हाची निर्माती १ मे १९९९ या दिवशी भंडारा जिल्ह्याचे विभाजन करून झाली. शासकीय दुष्टया या जिल्ह्याचे विभाजन एकूण आठतालुक्यात केलेले असून मुख्यालय गोंदिया येथे आहे. जिल्ह्याचा अक्षवृत्तीय व रेखावृत्तीय विस्तार २०० १५' उत्तर ते २१० ३०' उत्तर अक्षांशाच्या दरम्यान तर रेखावृत्तीय विस्तार ७९० १५' पूर्व ते ८०० ३०' पूर्व रेखांशाच्या दरम्यान आहे. जिल्ह्याचे एकूण क्षेत्रफळ ५२३४ चौ. कि.मी. इतके आहे. त्याने महाराष्ट्र राज्याचा फक्त १.८३ टक्के इतका भाग व्यापलेला आहे. गोंदिया जिल्ह्यात भूपृष्ठाची विविधता असून जिल्ह्याच्या वायव्य, इशान्य व दक्षिण मध्य भागात डोंगर रांगा असून या दरम्यान नद्यांची खोरी व मैदानी भाग आहेत. जिल्ह्याच्या वायव्य सिमेवरून वाहणारी वैनगंगा व मध्य भागातून वाहणारी चुलबंद या प्रमुख नद्या आहेत. या व्यतिरिक्त वाघ, पांगोली व गाढवी व अन्य महत्वाच्या नद्या आहेत. या व्यतिरिक्त

जिल्ह्यात अनेक कृत्रिम तलाव आहेत. इटियाडोह हा महत्वाचा प्रकल्प आहे.

गोंदिया जिल्ह्यात सरासरी पर्जन्य ११८६.७ मि.मी होतो. वार्षिक पर्जन्याच्या ९० टक्के पाऊस दक्षिण पश्चिम मान्सून हंगामात प्राप्त होतो. जुलै महिन्यात सर्वाधिक पाऊस होतो. पावसाचे विचलन अधिक आहे. हा भाग समुद्रसपाटीपासून दुर असल्यामुळ हवामान विषम आहे. जास्त जास्त तापमान मे महिन्यात ४५ अंश ते ४७ अंश शतांश इतके तर न्यूनतम तापमान डिसेंबर किंवा जानेवारी महिन्यात ७ अंश शतांश च्या जवळ आढळते. जिल्ह्यात जुने खडक असून यावर विकसीत घलेली गाळाची किंवा बारीक रेती मिश्रीत अपी माती आढळते. प्रामुख्याने काळी, कन्हार व मोरांड प्रकारची माती आढळते.

उद्दिष्ट

गोंदिया जिल्ह्यातील लोकसंख्येच्या व्यावसायिक रचनेमध्ये २००१ ते २०११ या कालावधीत कसा बदल झाला याचा तुलनात्मक अभ्यास करणे हे या

शोधनिबंधाचे उद्दिष्ट आहे.प्रत्येक प्रदेशात नैसर्गिक परिस्थिती अनेक वस्तू असतात परंतु तेथील लोक जोपर्यंत त्याचा उपयोग करत नाहीत तोपर्यंत त्या वस्तू संसाधन ठरत नाहीत. म्हणूनच संसाधन निर्मातीत मानवाची भूमिका महत्वाची ठरते. नैसर्गिक परिस्थितीनुसार लोकांची गुणवत्ता सर्वदूर सारखी नाही. त्यात जी भिन्नता आढळते त्यामुळे विकासातही भिन्नता आढळते.

प्रदेशाच्या एकूण लोकसंख्येत प्रत्यक्षात काम करणाऱ्या लोकांची संख्या किती हे प्रमाण महत्वाचे असते. कारण काम न करणाऱ्या व्यक्ती काम करणाऱ्यांवर अवलंबून असतात. अशा अवलंबित व्यक्तींची संख्या जास्त असेल तर जिवनमान खाली जाते. म्हणूनच एकूण लोकसंख्येत तसेच पुरुष गटात व स्त्रियांमध्ये काम करणाऱ्यांचे प्रमाण महत्वाचे असते.

परिकल्पना

गोंदिया जिल्ह्यात सामाजिक परिस्थितीमध्ये भिन्नता आढळून येते. शेतीखालील जमीन अकृषी करण्याकडे लोकांचा जास्त कल आहे. २००१ ते २०११ या कालावधीत व्यवसायीक संरचनेत बदल झाला ही परिकल्पना समोर ठेऊन अभ्यासात ती तपासून पाहिली आहे.

अभ्यास पध्दती

प्रस्तुत अभ्यास विद्वितीयक आकडेवारीवर आधारित आहे. जनगणना पुस्तिका,जिल्हा सामाजिक आर्थिक समालोचन, जिल्ह्याचे गॅझेटिअर अशा पुस्तकातून माहिती एकत्रित केली आहे. त्याचप्रमाणे शासकीय व निमशासकीय कार्यालयात उपलब्ध असलेल्या आकडेवारीचा उपयोग केला.सांख्यिकी

कार्यालय,जिल्हाधिकारी कार्यालय,तहसिल कार्यालय इ. कार्यालयातून माहिती घेऊन आकडेवारीचा उपयोग अभ्यासाकरिता केला.

लोकसंख्येची व्यावसायीक रचना

गोंदिया जिल्ह्याची २००१ ची लोकसंख्या १२००७०७ इतकी होती तर २०११ मध्ये लोकसंख्या १३२२५०७ इतकी झाली.म्हणजे दहा वर्षात १२१८०० इतकी वाढली.

एकूण लोकसंख्येत काम करणारे व काम न करणाऱ्या म्हणजे ० ते १५ वयोगटाची लोकसंख्या व ६५ वर्षावरील लोकसंख्येचा समावेश होतो. प्रदेशाच्या लोकसंख्येत काम करणाऱ्यांची संख्या किती आहे हे महत्वाचे असते. कारण काम न करणारी लोकसंख्या काम करणाऱ्या लोकसंख्येवर अवलंबून असते. म्हणूनच एकूण लोकसंख्येत किती पुरुष व किती स्त्रिया काम करणारे आहेत हे महत्वाचे असते.

२००१ या वर्षी एकूण लोकसंख्येत काम करणाऱ्या लोकांचे प्रमाण ४८.३० टक्के इतके होते. म्हणजेच जवळजवळ अर्ध्यापेक्षा अधिक लोक काम करणाऱ्या लोकांवर अवलंबून होते. जिल्ह्याच्या तालुक्यांमध्ये याबाबत भिन्नता आढळते. सडक अर्जुनी तालुक्यात काम करणाऱ्यांचे प्रमाण ५२.४ टक्के इतके तर गाोंदिया तालुक्यात ४९.०० टक्के इतके होते. अर्थात् सडक अर्जुनीच्या तुलनेने ते ३.४टक्क्यांने कमी होते. नागरी भागात हेच प्रमाण ३२.०० टक्के इतके होते.

२०११ साली एकूण लोकसंख्येत काम करणाऱ्या लोकांचे प्रमाण ५३.५१ टक्के इतके होते. म्हणजेच या दहा वर्षात गोंदिया जिल्ह्यात २००१ च्या तुलनेने काम करणाऱ्यांचे प्रमाण ५.२१ टक्क्यांने वाढले. या वर्षी गोंदिया जिल्ह्यात सालेकसा तालुक्यात ५७.०९

टक्के इतके होते. तर गोंदिया तालुक्यात ४९.६४ टक्के इतके होते. म्हणजेच सालेकसा तालुक्याच्या तुलनेने ७.४५ टक्क्यांनी कमी होते. नागरी भागात हे प्रमाण ३५.९१ टक्के इतके आहे. नागरी भागात काम करणाऱ्यांचे प्रमाण ३.९१ टक्क्यांनी वाढल्याचे आढळते.

२००१ च्या तुलनेत २०११ मध्ये सालेकसा तालुक्यात काम करणाऱ्यांचे प्रमाण ८.४९ टक्क्यांनी वाढले. काम करणाऱ्यांचे एकूण लोकसंख्येतील प्रमाण स्त्रि पुरुषात वेगवेगळे आहे. हे प्रमाण पुरुषांमध्ये जास्त तर स्त्रियांमध्ये कमी आढळते. २०११ मध्ये पुरुषांमध्ये ५४.१ टक्के व स्त्रियांमध्ये ४६.९ टक्के इतके होते. या दोन गटात फरक ७.२ टक्के इतका होता.

जिल्ह्यातील तालुक्यांमध्ये पुरुष व स्त्रि कामगारांच्या संख्येत खुप फरक आहे. सर्वात कमी फरक तिरोडा तालुक्यात ४.८ टक्के आहे. तर गोंदिया तालुक्यात ८.८ टक्के इतका आहे.

२००१ मध्ये पुरुषांमध्ये ५९.०३ टक्के व स्त्रियांमध्ये ४७.५१ टक्के इतके होते. व या दोन गटात हा फरक ११.५२ टक्के इतका होता. २०११ मध्येही जिल्ह्यातील तालुक्यांत पुरुष व स्त्रि कामगारांच्या संख्येत खुप फरक आहे. सर्वात कमी फरक सालेकसा तालुक्यात ५.९६ टक्के आहे तर गोंदिया तालुक्यात १६.०५ टक्के इतका आहे.

खालील सरण्यांमध्ये २००१ व २०११ या दहा वर्षातील एकूण लोकसंख्या ,काम करणारी लोकसंख्या यांची टक्केवारी दिली आहे

अनु क्र	तालुका २००१	एकूण लोकसंख्या	काम करणारी लोकसंख्या		प्राथमिक व्यावयायीक		बिदतीयक व्यावयायीक		तृतीयक व्यावयायीक	
१	तिरोडा	१४२९८७	७३०२६	५१.१	५३८४५	७३.७	८१४८	११.२	११०३	१५.
	पुरुष	७०८८२	३७८९२	५३.५	२६९९३	७१.२	२६४२	७.०	८२५७	२१.
	स्त्रि	७२१०५	३७१३४	४८.७	२६८५२	७२.३	५५०६	१५.७	२७७६	७.९
२	गोरेगाव	११६६८५	५९८९७	५१.३	४३८९४	७३.२	६६२०	११.१	९३८३	१५.
	पुरुष	५७५५१	३१२२९	५४.३	२१८६८	७०.०	१८९७	६.१	७४६४	२३.
	स्त्रि	५९१३४	२८६६८	४८.५	२२०२६	७६.८	४७२३	१६.५	१९१९	६.७
३	गोंदिया	२५०८४४	१२२८४१	४९.०	६७३०२	५४.७	२४०२४	१९.६	३१५१	२५.
	पुरुष	१२४५१३	६६५३८	५३.४	३५३९३	५३.१	५०३१	७.६	२६११	३९.
						९			४	२

	स्त्रि	१२६३३१	५६३०३	४४.६	३१९०९	५६.६ ७	१८९९३	३३.७	५४०१	९.६
४	आमगाव	१२२५०४	५९७३८	४८.८	४०८५४	६८.३ ८	६८१४	११.४	१२०७ ०	२०. २
	पुरुष	६०५०३	३२००९	५२.९	२०३०१	६३.४ २	१८२०	५.७	९८८८	३०. ९
	स्त्रि	६२००१	२७७२९	४४.७	२०५५३	७४.१ २	४९९४	१८.०	२१८२	७.९
५	सालेकसा	७७६९०	३७७७६	४८.६	३१७८५	८४.१ ४	१०८९	२.९	४९०२	१३. ०
	पुरुष	३८४६६	१९९०९	५१.८	१५४५९	७७.६ ४	५२४	२.६	३९२६	१९. ७
	स्त्रि	३९२२४	१७८६७	४५.६	१६३२६	९१.३ ७	५६५	३.२	९७६	५.५
६	स.अर्जुनी	१०७४९३	५६३०६	५२.४	४७६२३	८४.५ ७	२१७१	३.९	६५१२	११. ६
	पुरुष	५४०००	३०२०४	५५.९	२३६५१	७८.३ ०	११६८	३.९	५३८५	१७. ८
	स्त्रि	५३४९३	२६१०२	४८.८	२३९७२	९१.८ ३	१००३	३.८	११२७	४.३
७	मोरगाव अ.	१३६९८०	७१२३७	५२.०	६१६७८	८६.५ ८	१६७२	२.३	७८८७	११. १
	पुरुष	६९२८५	३८६३५	५५.८	३०८३९	७९.८ २	११६९	२.९	६६५७	१७. २
	स्त्रि	६७६९५	३२६०२	४८.२	३०८३९	९४.५ ९	५३३	१.६	१२३०	३.८
८	देवरी	१०२०९३	५२९४०	५१.९	४४५३५	८४.१ २	१०८६	२.१	७३१९	१३. ८
	पुरुष	५०८२२	२८०३५	५५.२	२१४८४	७६.६ ३	५९२	२.१	५९५९	२१. ३
	स्त्रि	५१२७१	२४९०५	४८.६	२३०५१	९२.५ ५	४९४	२.०	१३६०	५.५
	जिल्हा ग्रा. ६	१०५७२७ ६	५३३७६१	५०.६	३९१५१ ६	७३.३ ५	५१६२४	९.७	९०६२ १	१७. ०

	पुरुष	५२६०२२	२८४४५१	५४.१	१९५९८	६८.९	१४४८१	३३.०	७३६५	२५.
					८	०	३		०	९
	स्त्रि	५३१२५४	२४९३१०	४६.९	१९५५२	७८.४	३६८११	१४.८	१६९७	६.८
					८	२			१	
	जिल्हा ना.	१४३४३१	४५८३५	३२.०	२१४७	४.६८	५३४२	११.७	३८३४	८३.
									६	७
	पुरुष	७२८१२	३४५७०	४७.५	१२६७	३.६६	१५४८	४.५	३१७५	९१.
									५	९
	स्त्रि	७०६१९	११२६५	१६.०	८८०	७.८१	३७९४	३३.७	६५९१	५८.
										५

२००१ या वर्षात गोंदिया जिल्ह्यात काम करणारी लोकसंख्या व काम करणाऱ्यांची टक्केवारी

स्रोत :- जनगणना पुस्तिका गोंदिया जिल्हा २००१

अनु क्र	तालुका २०११	एकुण लोकसंख्या	काम करणारी लोकसंख्या		प्राथमिक व्यावयायीक		द्वितीयक व्यावयायीक		तृतीयक व्यावयायीक	
१	तिरोडा	१५१०७	७०१४५	५२.३	६२६१	७९.१	४२१०	५.३२	१२३	१५.५
		३		८	३	१			२२	७
	पुरुष	७६२१६	४४७५०	५८.७१	३४०६	७६.१	१७४७	३.९०	८९३	१९.९
					६	२			७	७
	स्त्रि	७४८५७	३४३९५	४५.९	२८५४	८२.९	२४६३	७.१६	३३८	९.८४
				४	७	९			५	
२	गोरेगाव	१२४८९	६४८२२	५१.९	४८९८	७५.५	३४७४	५.३६	१२३	१९.०
		०		०	८	७			६०	७
	पुरुष	६२०२२	३६४३७	५८.७	२६५१	७२	१२७८	३.५१	८६४	२३
				४	४	.७६			५	.७३
	स्त्रि	६२८६८	२८३८५	४५.१५	२२४७	७९.१	२१९६	७.७४	३७१	१३.०
					४	७			५	९
३	गोंदिया	२५८५७	१२८३७	४९.६	७९७४	६२.१	१२२७	९.५६	३६३	२८.३
		४	९	४	३	१	७		५९	२

	पुरुष	१२८५६ ८	७४२०६	५७.७ १	४४२६ ७	५९.६ ५	३५६४	४.८०	२६३ ७५	३५.५ ४
	स्त्रि	१३००० ६	५४१७३	४१.६ ६	३५४७ ६	६५.४ ८	८७१३	१६.० ८	९९८ ४	१८.४ ३
४	आमगाव	११२७६ ०	६११९२	५४.२ ६	४८११ ५	७८.६ २	३०८३	५.०४	९९९ ४	१६.३ ३
	पुरुष	५६१६९	३३६८०	५९.९ ६	२५४८ ९	७५.६ ७	१०३३	३.०७	७१६ १	२१.२ ६
	स्त्रि	५६५९१	२७५१२	४८.६ १	२२६२ ९	८२.२ ५	२०५०	७.४५	२८३ ३	१०.३ ०
५	सालेकसा	८५४८२	४८८०९	५७.० ९	४१५२ ८	८५.० ८	११३१	२.३२	६१५ ०	१२.६ ०
	पुरुष	४२५९८	२५५९७	६०.० ८	२१०० ०	८२.० ४	५५७	२.१८	४०४ ०	१५.७ ८
	स्त्रि	४२८८४	२३२१२	५४.१ २	२०५२ ८	८८.४ ३	५७४	२.४७	२११ ०	९.०९
६	स.अर्जुनी	११५५९ ४	६४५७६	५५.८ ६	५६६४ ७	८७.७ २	१२७५	१.९७	६६५ ४	१०.३ ०
	पुरुष	५८२०१	३५१२७	६०.३ ५	२९३२ २	८३.४ ७	७७०	२.१९	५०३ ५	१४.३ ३
	स्त्रि	५७३९३	२९४४९	५१.३ १	२७३२ ५	९२.७ ८	५०५	१.७१	१६१ ९	५.५०
७	मोरगाव अ.	१४८२६ ५	८१२२९	५४.७ ८	७०६० ७	८६.९ २	१३७९	१.७०	९२४ ३	११.३ ८
	पुरुष	७४७०३	४४२१५	५९.१ ८	३६८९ ४	८३.४ ४	८९६	२.०३	६४२ ५	१४.५ ३
	स्त्रि	७३५६२	३७०१४	५०.३ १	३३७१ ३	९१.० ८	४८३	१.३०	२८१ ८	७.६१
८	देवरी	९९९३९	५६११७	५६.१ ५	४९९३ २	८८.९ ७	७४७	१.३३	५४३ ८	९.६९

	पुरुष	४९४५७	२९५७५	५९.७	२५१६	८५.०	४१६	१.१४	३९९	१३.५
				९	७	९			२	०
	स्त्रि	५०४८२	२६५४२	५२.५	२४७६	९३.३	३३१	१.२५	१४४	५.४५
				७	५	०			६	
	जिल्हा	१०९६५	५८४२६	५३.२	४५८१	५३.२	२७५७	४.७२	९८५	१६.८
	ग्रा.	७७	९	८	७३	८	६		२०	६
	पुरुष	५४७९३	३२३५८	५९.०	२४२७	७५.०	१०२६	३.१७	७०६	२१.८
		४	७	३	१६	०	१		१०	२
	स्त्रि	५४८६४	२६०६८	४७.५	२१५४	८२.६	१७३१	६.६४	२७९	१०.७
		३	२	१	५७	५	५		१०	१
	जिल्हा	२२५९३	८११५०	३५.९	९७५०	१२.०	४९४९	६.०१	६६४	८१.८
	ना.	०		१		१			५१	९
	पुरुष	११३६२	५९५६४	५२.४	६०१८	१०.१	२२४१	३.७६	५१३	८६.१
		०		२		०			०५	३
	स्त्रि	११२३१	२१५८६	१९.२	३७३२	१७.२	२७०८	१२.५	१५१	७०.१
		०		२		८		५	४६	७

२०११ या वर्षात गोंदिया जिल्ह्यात काम करणारी लोकसंख्या व काम करणाऱ्यांची टक्केवारी

स्रोत :- जनगणना पुस्तिका गोंदिया जिल्हा २०११

२००१ च्या तुलनेत २०११ मध्ये काम करणाऱ्या पुरुषांच्या व स्त्रियांच्या प्रमाणात वाढ झालेली दिसून येते.

काम करणाऱ्या लोकसंख्येचे वर्गीकरण

कोणत्याही प्रदेशातील लोकांच्या व्यवसायात सतत बदल होत असतात. सुरवातीला बहुसंख्य लोक प्राथमिक व्यवसायात असतात. त्या प्रदेशाचा विकास जसा होत जातो तसतसा लोकांच्या व्यवसायात बदल होत जातात. लोकसंख्येची व्यावसायिक रचना त्या प्रदेशाचा विकास दर्शवित असते.

२००१ या वर्षी संपूर्ण जिल्ह्यात ७५.३५ टक्के लोक प्राथमिक व्यवसायात गुंतलेले होते. मोरगाव अर्जुनी या तालुक्यात ८६.५८ टक्के लोक प्राथमिक

व्यवसायात गुंतलेले होते. तर गोंदिया तालुक्यात ५४.७८ टक्के लोकसंख्या प्राथमिक व्यवसायात होती. पण गोंदिया तालुक्यातील नागरी व ग्रामीण कामगार वेगळे केले तर ग्रामीण भागात हे प्रमाण ५५ टक्के इतके तर नागरी भागात २.१६ टक्के इतके होते.

२०११ साली जिल्ह्यात प्राथमिक व्यवसायातील लोकांचे प्रमाण ७०.३२ टक्के होते. हे प्रमाण २००१ च्या तुलनेने थोडे कमी झालेले आढळून येते. गोंदिया जिल्ह्यातील ग्रामीण भागात सडक अर्जुनी तालुक्यात ८८.९७ टक्के इतके होते. व गोंदिया तालुक्यात ६२.११ टक्के एवढे होते. गोंदिया जिल्ह्यातील नागरी भागात हे प्रमाण १२.०१ टक्के इतके होते.

गोंदिया जिल्ह्यात व्दितीयक व्यवसाय फारसे नाहीत तरी काही प्रमाणात उदबत्त्या वळणे, विड्या वळणे तसेच काही कुटीर उद्योग चालतात. धान गिरण्या आहेत यामध्ये काही लोक गुंतलेले आहेत.

२००१ मध्ये फक्त गोंदिया व तिरोडा या दोन तालुक्यात नागरी लोकसंख्या राहात होती. पण २०११ मध्ये आमगाव व देवरी या दोन तालुक्यातही नागरी लोकसंख्या वाढली. जिल्ह्यात सडक अर्जुनी, गोरेगाव, आमगाव, देवरी या तालुक्यांमध्ये काही ग्राम पंचायतींचे रूपांतर नगर पंचायतीत झाले. याचाच अर्थ जिल्ह्यात नागरी लोकसंख्या वाढत आहे.

२००१ मध्ये व्दितीयक व्यवसायात ९.८ टक्के लोक गुंतलेले होते. गोंदिया तालुक्यात हे प्रमाण सर्वाधिक ११.१ टक्के इतके होते. नागरी लोकसंख्येत हे प्रमाण ११.६५ टक्के इतके होते. तिरोडा तालुक्यात नागरी लोकसंख्येत हे प्रमाण १८.७१ टक्के एवढे होते.

२०११ मध्ये व्दितीयक व्यवसायीकांचे प्रमाण ६.१० टक्के इतके होते. हे प्रमाण २००१ च्या तुलनेत ३.७ टक्क्यांने कमी झाल्याचे आढळते. व्दितीयक व्यवसायातील वेगवेगळ्या तालुक्यातील प्रमाणाचे अभिक्षेत्रीय स्वरूप कायम असलेले दिसते. तिरोडा, आमगाव या तालुक्यात हे प्रमाण ५ ते ६ टक्क्यांदरम्यान आढळते. गोंदिया मध्ये ८.३४ टक्के व इतर तालुक्यात कमी आढळते.

२००१ च्या तुलनेने हे प्रमाण कमी होण्याचे कारण या व्यवसायातील लोक इतर व्यवसायात गुंतले असावेत. जिल्ह्यातील बिडी उद्योगावर मोठ्या प्रमाणात परिणाम झाला आहे.

गोंदिया जिल्ह्यात तृतीयक व्यवसायात गुंतलेले लोक व्दितीयक व्यावसायिकांच्या तुलनेने अधिक आढळतात. अनेक कार्यालयात काम करणारे व वाहतुक व दळणवळण व्यवसायात लोक गुंतलेले आहेत. २००१ साली तृतीयक व्यवसायातील कामगारांचे प्रमाण २२.३ टक्के इतके होते. गोंदियाच्या नागरी विभागात हे प्रमाण ८३.६६ टक्के इतके होते. २०११ साली तृतीयक व्यावसायीकांचे प्रमाण २४.७९ टक्के होते. २००१ च्या तुलनेत हे प्रमाण वाढल्याचे आढळते. नागरी विभागात हेच प्रमाण ८१.८९ टक्के आढळते.

सारांश रूपाने असे म्हणता येईल की जिल्ह्यात व जिल्ह्यातील तालुक्यात प्राथमिक, व्दितीयक व तृतीयक उद्योगातील व्यावसायीकांच्या प्रमाणात फारसा बदल होत नाही. प्राथमिक व व्दितीयक उद्योगात जी अल्प प्रमाणात घट होते, ती तृतीयक उद्योगातील कामगारात वाढ होऊन भरून निघते. हा कल भविष्यात फारसा बदललेल असे दिसत नाही.

निष्कर्ष

गोंदिया जिल्ह्यात प्राथमिक व्यावसायिक मोठ्या प्रमाणात आहेत. बहुतेक लोक ग्रामीण भाग राहतात. त्यांचा प्रमुख व्यवसाय शेती हाच आहे. शेती व्यवसाय आजकाल बेभरवशाचा असल्यामुळे नवीन पिढीचा शेती करण्याकडे कल दिसून येत नाही. नोकरी करण्याकडे त्यांचा कल दिसून येतो. असलेली शेती विकून किंवा शेतीत प्लॉट पाडून जास्त पैसे मिळविण्याकडे लक्ष आहे. जिल्ह्यात भात शेती फक्त एकाच हंगामात केली जाते. इतर वेळी लागवडीखालील जमीन पडीत असते.

गोंदिया जिल्ह्यात इतर व्यवसाय कमीच आहेत. काही भागात धान गिरण्या आहेत. काही प्रमाणात

कुटीर उद्योग चालतात. महिला बचत गटाच्या माध्यमातून काही व्यवसाय चालविले जातात. त्या माध्यमातून महिलांना थोडे आर्थिक स्वातंत्र्य लाभले आहे. पण त्या व्यवसायांना स्थानिक बाजारपेठांचे उपलब्ध आहेत. एकंदरित गोंदिया जिल्ह्यातील आर्थिक परिस्थिती पाहिले त्या प्रमाणात समाधानकारक नाही.

उपाययोजना

1 गोंदिया जिल्ह्यातील शेतकऱ्यांना भात शेतीबरोबर इतर उत्पादनांचे प्रशिक्षण देणे आवश्यक आहे. जसे, पडीत जमीनीवर फळांची लागवड करून त्या जमीनीचा वापर करणे.

2 जिल्ह्यात उद्योगांचा विकास करण्यासाठी सरकारने प्रयत्न करावयास हवा.

3 शेतीवरील उत्पादनांवर प्रक्रिया करणाऱ्या उद्योगांना प्रोत्साहन दिले पाहिजे.

4 बचत गटांच्या माध्यमाने जे व्यवसाय चालविले जातात, त्यांच्या उत्पादनांना देशात बाजारपेठ मिळवून देण्यासाठी प्रयत्न करवे लागतील.

संदर्भ सुची

1 पंडा बी. पी. जनसंख्या भूगोल, मध्य प्रदेश ग्रंथ अकादमी 1966

2 गोंदिया जिल्हा जनगणना पुस्तिका 2001, 2011

3 सामाजिक आर्थिक समालोचन, गोंदिया जिल्हा.

छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का वितरण प्रतिरूप

डॉ. आर.एन. यादव^१ डॉ. साधना सोम^२

सहायक प्राध्यापक भूगोल डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र डी.पी.विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की जीवन प्रवृत्ति गैर आदिवासी जीवन से भिन्न है। सामान्यतः लोग जनजाति तथा आदिवासी शब्द का अर्थ पिछड़े हुए एवं असभ्य मानव समूह से समझते हैं। यह अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य की आदिवासी जनसमूह के विभिन्न जिलों की वितरण प्रतिरूप की असमानता का छायांकन विधि मानचित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है। जहाँ सुकमा जिले में सर्वाधिक ८३.४७ प्रतिशत एवं रायपुर जिले में ४.३ प्रतिशत सबसे कम जनजातियाँ पाई जाती है। अतः राज्य की भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकी कारको की असमानता को बेहतर करने की आवश्यकता है, और राज्य सरकार की विकास योजनाओं को लागू कर जनजातियों को मुख्य धारा में लाने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए। क्योंकि जनजातियाँ भारतीय समाज, संस्कृति और राष्ट्र की अभिन्न इकाईयाँ हैं।

प्रस्तावना

राज्य की जनजातियों की जीवन प्रवृत्ति गैर आदिवासी जीवन से भिन्न है। इनका जीवन जन जातीय परम्पराओं और भौतिक पर्यावरण से जुड़ा रहा है। वास्तव में जनजातिय क्षेत्रों में मानव प्रकृति तथा अंधविश्वास का संश्लिष्ट पाया जाता है। सामान्यतः लोग जनजाति तथा आदिवासी शब्द का अर्थ पिछड़े हुए और असभ्य मानव समूह से समझते हैं, जो कि एक सामान्य क्षेत्र में रहते हुए एक सामान्य भाषा बोलता है और सामान्य संस्कृति का प्रयोग में लाता है। उसे जनजाति कहते हैं। ऐसा माना जाता है कि जनजातियों के लोग की जनसंख्या के प्राचीनतम मानव समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एम्पीरियल गजेटियर में जनजाति की परिभाषा जनजाति परिवारों के एक ऐसे समूह का नाम है, जिसका एक नाम तथा एक बोली हो तथा एक भू-भाग में रहते हैं, या उस भाग को अपना मानते हो तथा अपनी जनजाति के भीतर ही विवाह इत्यादि करते हैं। प्रसिद्ध समाजशास्त्री **घुरये** ने इन्हें

तथा कथित आदिवासी अथवा पिछड़े हिन्दु कहा है। इन्होंने इसके लिए प्रस्तावित किया कि इन्हे अनुसूचित जनजाति के नाम से सम्बोधित किया जाए। स्वतंत्रता के पश्चात् लोकतंत्र में इन्हे शिक्षा और आर्थिक क्षेत्रों में प्राथमिकता दी जा रही है। जिससे इन समुदायों का सामाजिक सुधार हो सके, साथ ही विकास के लिये अनेक लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। अतः इन अनुसूचित जनजातियों का विस्तृत अध्ययन आवश्यक है। जहाँ छत्तीसगढ़ के समस्त जिलों में जनजातियों का निवास है किन्तु विभिन्न जिलों में उनकी संख्या में पर्याप्त विभिन्नता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में रहने वाले अनुसूचित जनजातियों की वितरण प्रतिरूप का अध्ययन किया गया है। यह भारत के नवोदित २६वें राज्य के रूप में स्थित है। इसकी भौगोलिक सीमाएँ १७°४६' से २४°६' उत्तरी अक्षांश एवं ८०°१५' से ८४°५१' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस प्रदेश का क्षेत्रफल १,३५,१३३ वर्ग कि.मी. है राज्य की

कुल जनजातियों में ९२.४३ प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में ७.५७ प्रतिशत नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। यह प्रदेश के उत्तर व दक्षिणतम बिन्दुओं के बीच दूरी ३६० कि.मी. एवं पूर्व से पश्चिम लगभग १४० कि.मी. है। राज्य का मध्य भाग मैदानी है जिसे छत्तीसगढ़ का मैदान कहते हैं जो उच्च भूमि द्वारा घिरा हुआ है, इसकी ऊँचाई अपेक्षाकृत अधिक विषम धरातल, वनाच्छादित जनजाति बहुल जनसंख्या की प्रधानता है इसके लिए भारत की जनगणना २०११ के अनुसार कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या ७८,२२,९०२ है जिसमें से

आकड़े एवं विधि तंत्र

यह अध्ययन द्वितीय आँकड़ों पर आधारित है, ये द्वितीयक आँकड़े भारत की जनगणना पुस्तिका २००१ एवं २०११ से प्राप्त किए गए हैं। इसके अलावा समाचार पत्रों एवं इंटरनेट आदि से प्राप्त आँकड़े भी उपयोगी है। छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों के अनुसूचित जनजातियों के वितरण एवं वृद्धि के कारको को स्पष्ट किया गया है। आवश्यकतानुसार ग्राफ एवं मानचित्र द्वारा विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

छत्तीसगढ़ के अनुसूचित जनजातियों का वितरण २००१ जव २०११:-

राज्य के सभी जिलों में जनजाति जनसंख्या समान रूप से वितरित

तालिका क्रमांक - १:१ छत्तीसगढ़ : अनुसूचित जनजातियों का जिलेवार वितरण-२०११

क्रं.	जिले का नाम	कुल जनसंख्या	अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या	कुल जनसंख्या में अनुसूचित ज.जा. का प्रतिशत
१.	कोरिया	६,५८,९१७	३,०४,२८०	४६.१८%
२.	सरगुजा	८,४०,३५२	४,८२,००७	५७.३६%
३.	जशपुर	८,५१,६६९	५,३०,३७८	६२.२८%
४.	रायगढ़	१४,९३९८४	५,०५,६०९	३३.८४%

७२,३१,०८२ ग्रामीण एवं ५,९१,८२० नगरीय जनसंख्या निवास करती है।

उद्देश्य अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है:-

- (१) छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जनजातिय जनसंख्या के वितरण प्रतिरूप का अध्ययन करना।
- (२) जनजातिय वितरण के कालिक विभिन्नताओं का आकलन करना।
- (३) क्षेत्रों के असमानताओं के कारणों को स्पष्ट करना भी एक उद्देश्य है।
- (४) ग्रामीण एवं नगरीय जनजातियों की असमानता को ज्ञात किया गया है।

नहीं है। प्रदेश के ऊँचे पहाड़ी दुर्गम भागों में इनका संकेन्द्रण अधिक मिलता है जबकि मैदानी क्षेत्रों की बढ़ते हैं तो इनका अनुपात कम मिलता है २०११ की जनगणनानुसार छत्तीसगढ़ प्रदेश के बस्तर संभाग, सरगुजा संभाग जनजातिय बहुल क्षेत्र के रूप में फैला है इसके अलावा कोरबा एवं रायगढ़ जिले में औसत से अधिक जनजातियों का निवास है। राज्य के अनुसूचित जनजातियों का वितरण प्रतिरूप सामान्य जनसंख्या के वितरण के विपरीत है अर्थात् सुकमा जिले में सर्वाधिक ८३.४७ प्रतिशत एवं रायपुर जिले में ४.३ प्रतिशत सबसे कम जनजातियाँ पाई जाती है जिसे छाया विधि मानचित्र से स्पष्ट किया गया है:-

५.	कोरबा	१२,०६,६४०	४,९३,५५९	४०.९०%
६.	जाँजगीर चाम्पा	१६,१९,७०७	१,८७,१९६	११.५६%
७.	बिलासपुर	१९,६१,९२२	४,२५,६८८	२१.७०%
८.	कबीरधाम	८,२२,५२६	१,६७,०४३	२०.३१%
९.	राजनांदगाँव	१५,३७,१३३	४,०५,१९४	२६.३६%
१०.	दुर्ग	१७,२१,९४८	१,०१,१८८	५.८८%
११.	रायपुर	२१,६०,८७६	९३,०१०	४.३०%
१२.	महासमुन्द	१०,३२,७५४	२,७९,८९६	२७.१०%
१३.	धमतरी	७,९९,७८१	२,०७,६३३	२५.९६%
१४.	काँकेर	७,४८,९४१	४,१४,७७०	५५.३८%
१५.	बस्तर	८,३४,३७५	५,२०,७७९	६२.४२%
१६.	नारायणपुर	१,३९,८२०	१,०८,१६१	७७.३६%
१७.	दन्तेवाड़ा	२,८३,४७९	२,०१,४५८	७१.०७%
१८.	बीजापुर	२,५५,२३०	२,०४,१८९	८०.००%
१९.	बलौदाबाजार	१३,०५,३४३	१,६७,४५०	१२.८३%
२०.	गरियाबन्द	५,९७,६५३	२,१५,९८६	३६.१४%
२१.	मुंगेली	७,०१,७०७	७,२८१	१०.३७%
२२.	बालोद	८,२६,१६५	२,५९,०४३	३१.३५%
२३.	बेमेतरा	७,९५,७५९	३७,१८५	४.६७%
२४.	कोण्डागाँव	५,७८,८२४	४,११,००१	७१.०१%
२५.	सुकमा	२,५०,१५९	२,०८,७९७	८३.४७%
२६.	बलरामपुर	७,३०,४९१	४,५८,९४९	६२.८३%
२७.	सूरजपुर	७,८९,०४३	३,५९,६७२	४५.५८%
	कुल:	२,५५,४५,१९८	७८,२२,९०२	३०.६२%

स्रोत: भारत की जनगणना २०११ के अनुसार.

(१)

अति उच्च अनुसूचित जनजाति के क्षेत्र (७५ प्रतिशत से अधिक) :-

इसके अन्तर्गत वे जिले आते हैं जिनमें अनुसूचित जनजातियों का स्तर ७५ प्रतिशत से अधिक है। जिसमें सुकमा ८३.४१ प्रतिशत, बीजापुर ८०.०० एवं नारायणपुर ७७.३६ प्रतिशत

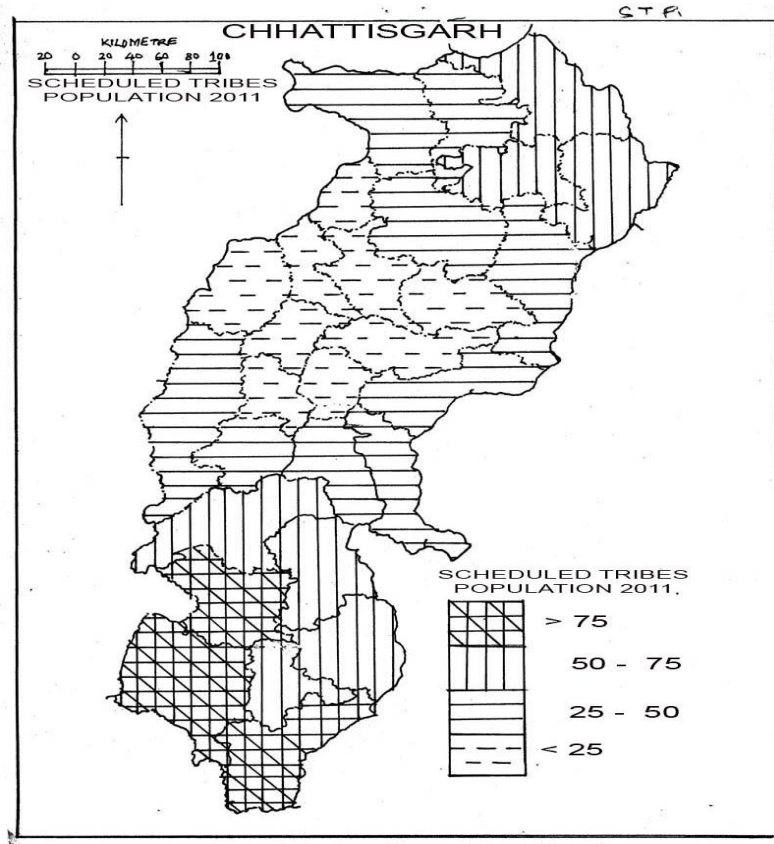
जिलों में अति उच्च अनुसूचित जनजाति के क्षेत्र में सम्मिलित है। जिसका मुख्य कारण विषम धरातल, विस्तृत वनांचल, अनुपजाऊ मिट्टी, परिवहन के साधनों का अभाव के साथ-साथ आदिवासियों बाहुल्य क्षेत्र महत्वपूर्ण तथ्य है। इनके अतिरिक्त

इन क्षेत्रों में औद्योगीकरण एवं
 (२) उच्च अनुसूचित जनजाति के क्षेत्र (५० से ७५ प्रतिशत के मध्य) :-

राज्य के उच्च अनुसूचित जनजाति के क्षेत्र में वे जिले आते हैं जहाँ जनजातियों का प्रतिशत ५० से ७५ प्रतिशत के मध्य है। इनमें दन्तेवाड़ा ७१.०७ प्रतिशत, कोण्डागाँव ७१.०१ प्रतिशत, बलराम पुर ६२.८३ प्रतिशत, बस्तर ६२.४२ प्रतिशत, जशपुर ६२.२८ प्रतिशत, सरगुजा ५७.३६ प्रतिशत एवं कांकेर ५५.३८ प्रतिशत, जिले में उच्च जनजाति क्षेत्र के अन्तर्गत है। ये जिले मुख्यतः राज्य के उत्तरी क्षेत्र एवं दक्षिणी

नगरीकरण की निम्न स्थिति है।

क्षेत्रों में संकेन्द्रित है, जो कि दुर्गम पठारी एवं पहाड़ी वनों के मध्य ये जनजातियाँ निवास करती है। आज भी ये जनजातियाँ स्थानांतरित कृषि, वन, उत्पादको पर आश्रित है यहाँ यातायात व संचार साधनों का विकास भी की पर्याप्त नहीं है। जिला मुख्यालय होने के कारण नगरों में विकास जैसे कारकों का प्रभाव साक्षरता, शिक्षा एवं स्वस्थ की सुलभता हो रहा है, फिर भी इन क्षेत्रों में विकासात्मक पहलुओं की आवश्यकता है।



(३) मध्यम जनजातीय जनसंख्या के क्षेत्र (२५ - ५० प्रतिशत) :-

राज्य की २५ से ५० प्रतिशत मध्यम जनजातीय जनसंख्या के क्षेत्र

के अंतर्गत प्रदेश के ९ जिले हैं जिसमें कोरिया ४६.१८ प्रतिशत, सूरजपुर ४५.५८ प्रतिशत, कोरबा ४०.९० प्रतिशत, गरियाबन्द ३६.१४ प्रतिशत,

रायगढ़ ३३.८४ प्रतिशत, बालोद ३१.३५ प्रतिशत, महासमुन्द २७.१० प्रतिशत, राजनांदगाँव २६.३६ प्रतिशत एवं धमतरी २५.९६ प्रतिशत में मध्यम अनुसूचित जनजातियों के क्षेत्र हैं। ये जिले सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ में यत्र-तत्र

(४)

निम्न जनजातीय जनसंख्या के क्षेत्र (२५ प्रतिशत से कम) :-

छत्तीसगढ़ प्रदेश में निम्न जनजातीय जनसंख्या क्षेत्र के अंतर्गत सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ का मैदान शामिल है, जहाँ २५ प्रतिशत से कम जनजातीय जनसंख्या निवास करती है। ये जिले- बिलासपुर २१.७० प्रतिशत, कबीरधाम २०.३१ प्रतिशत, बलौदा बाजार १२.८३ प्रतिशत, जाँजगीर-चाम्पा ११.५६ प्रतिशत, मुंगेली १०.३७ प्रतिशत, दुर्ग ५.८८

बिखरे हुए हैं। जिला मुख्यालय के कारण प्रशासनिक गतिविधियाँ नगरीयकरण, साक्षरता के साथ वनोपज एवं कृषि जैसे कार्य की प्रधानता देखने को मिलता है।

प्रतिशत, बेमेतरा ४.६७ प्रतिशत एवं रायपुर ४.३ प्रतिशत में निम्न जनजातीय जनसंख्या के क्षेत्र में सम्मिलित है। यहाँ के क्षेत्र समतल उपजाऊ मिट्टी की अधिकता है, रायपुर राज्य की राजधानी युक्त मुख्य नगर है, जहाँ सबसे कम आदिम जनजाति का प्रभाव है। इसके अतिरिक्त नगरीयकरण, औद्योगिकरण, परिवहन के विकसित साधन, संचार के साधनों, कृषि कार्यो की प्रमुखता में संलग्न जनसंख्या निवास करती है।

तालिका क्रमांक १:२

छत्तीसगढ़ : अनुसूचित जनजातियों का वितरण (प्रतिशत में) १९७१-२०११

वर्ष	कुल	ग्रामीण	नगरीय
१९७१	३५.५०%	३७.८०%	६.०%
१९८१	३६.६०%	३९.३०%	८.४%
१९९१	३५.४०%	३९.३०%	९.८%
२००१	३१.७६%	३८.२०%	९.१%
२०११	३०.६२%	३६.८०%	९.९%

स्रोत: भारत की जनगणना १९७१, १९८१, १९९१, २००१ एवं २०११.

उपरोक्त आँकड़े का प्रमुख स्रोत भारत की जनगणना है जिसके आधार पर छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियों का वितरण प्रतिशत के आधार पर स्पष्ट किया गया है। सन् १९१७१ तथा १९८१ में यह क्रमशः ३५.५० प्रतिशत तथा ३६.६० प्रतिशत है। राज्य में १९७१-१९९१ की अवधि में जनजातियों की विभिन्नता देखने को

मिलती है, इसी प्रकार २००१ एवं २०११ में घटकर ३१.४६ प्रतिशत व ३०.६२ प्रतिशत हो गया है। अर्थात् कुल वितरण का प्रतिशत क्रमशः घट रहा है जिसका मुख्य कारण जनजातियों का नगरों की ओर रोजगार के तलाश में प्रवास हो रहा है। यहाँ राज्य की ग्रामीण क्षेत्रों में १९७१ से १९९१ तक लगभग

वृद्धि की ओर अग्रेषित है लेकिन २००१ एवं २०११ में घटती प्रवृत्ति को स्पष्ट कर रहा है, जबकि नगरीय जनजातियों का वितरण १९७१ से २००१ तक क्रमशः बढ़ोतरी की प्रवृत्ति मिलती है

निष्कर्ष :-

छत्तीसगढ़ में अनुसूचित जनजातियों का वितरण प्रतिरूप में असमानता है, जिन्हे विभिन्न जिलों के आधार पर भारत की जनगणना २०११ के अनुसार स्पष्ट किया गया है जिसमें ०३ जिलों में अति उच्च, ०७ जिलों में उच्च, ०९ जिलों मध्यम एवं ०८ जिलों में निम्न जनजातीय का वितरण में भिन्नताएँ पाई जाती है। इसी प्रकार राज्य के ग्रामीण एवं नगरीय प्रतिशत वितरण की प्रवृत्ति लगभग असमान है जहाँ कुल जनसंख्या

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (तम्हम्त।छब्बै) :-

- | | |
|-------------------------------------|--|
| (१) तिवारी, व्ही.के. (२००१) | - छत्तीसगढ़ की जनजातियाँ हिमालया पब्लिशिंग हाऊस मुम्बई. |
| (२) पण्डा, बी.पी. (२००७) | - जनसंख्या भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी भोपाल. |
| (३) महाजन, संजीव(२०१२) | - भारत में जनजातीय समाज अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली. |
| (४) Mazumdar, K. (1973) | - Distribution of Tribal Population Eastern Gujrat Vol. XIV. No. 3 & 4 PP 177-192. |
| (५) बघेल अनुसुइया (२००२) | - छत्तीसगढ़ प्रदेश में जनजातीय जनसंख्या का वितरण, चर्मण्वती, भूगोल शोध पत्रिका Vol.:II अम्बाह मुरैला (म.प्र.) Page 33-41 |
| (६) मामोरिया, चतुर्भुज(२०१३) | - भारत का भूगोल, साहित्य भवन, आगरा पृष्ठ संख्या ४६-५७. |
| (७) त्रिपाठी, कौशलेन्द्र एवं (२००२) | |
| चन्द्राकर, पुरूषोत्तम | - छत्तीसगढ़ का भूगोल, शारदा प्रकाशन, बिलासपुर (छ.ग.) |

केवल २००१ में ०.७ प्रतिशत की कमी हुई है। अतः राज्य की अनुसूचित जनजातियों का वितरण प्रतिरूप में असमानता है।

में अनुसूचित जनजातियों का औसत प्रतिशत ३०.६२ प्रतिशत है जिसमें १६ जिलों में इससे अधिक एवं ११ जिलों में औसत से कम प्रतिशत मिलता है। जिसे वहाँ भौतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं जनांकिकी कारको की स्थिति को सुधार कर बेहतर बनाया जा सकता है। जिससे जनजातीय जनसंख्याओं को जागरूकता की आवश्यकता है एवं राज्य सरकार की विकास योजनाओं को सतत् रूप से लागू कर विकास की मुख्य धारा में लाने हेतु प्रयास किया जाना चाहिए।

दापोली तालुक्यातील आंबा प्रक्रिया उद्योगात काम करणा-या स्त्रीमजुरांचा टिकात्मक अभ्यास

डॉ. दिलीप शंकरराव पाटील¹ अजय रामचंद्र लोखंडे²

¹पीएच.डी. मार्गदर्शक मुंबई विद्यापीठ

²संशोधक विद्यार्थी मुंबई विद्यापीठ

गोषवारा:

विद्यमान संशोधन हा रत्नागिरी जिल्ह्यातील दापोली तालुक्यातील आंबा प्रक्रिया उद्योगात काम करणा-या स्त्रीमजुरांची कौटुंबिक, आरोग्यविषयक, आर्थिक व सामाजिक परिस्थिती जाणून घेण्यासाठी केला आहे. आवश्यक माहिती ही प्राथमिक आणि द्वितीय स्त्रोतांतर्गत संकलित केली आहे. या संशोधनात असे दिसून येते की, गरिबी, शिक्षणाचा अभाव, रोजगाराच्या संधी, संयुक्त कुटुंब, घरातील सदस्य संख्येत वाढ, महागाई, पतीला कमी मजुरी, पतीचे व्यसन, पतीचा मृत्यू, इत्यादी कारणांमुळे मोठ्या प्रमाणात ग्रामीण स्त्रीया आंबा प्रक्रिया उद्योगामध्ये मजुरी करीत आहेत. रत्नागिरी जिल्ह्यातील दापोली तालुक्यातील फळ प्रक्रिया उद्योगामध्ये खुप मोठ्या प्रमाणात स्त्रीमजुर काम करीत असून त्यांना मिळणा-या तुटपुंज्या मजुरीतून आपला चरितार्थ भागवित आहेत. तथापि, फळ प्रक्रिया उद्योगामध्ये स्त्री मजुर फार मोठ्या समस्यांना तोंड देत आहेत. याबाबतचे संशोधन प्रस्तुत संशोधन पेपरमध्ये मांडण्यात आले आहे.

मुख्य संकल्पना: ग्रामीण स्त्रीया, स्त्रीमजुर, आंबा, फळ प्रक्रिया उद्योग, स्त्रीमजुरांच्या समस्या, आर्थिक उत्पन्न.

प्रस्तावना:

दुस-याच्या मालकीच्या फळ प्रक्रिया उद्योगामध्ये अंगमेहनतीने काम करून ज्या स्त्रीया मजुरी कमवितात त्या स्त्रीमजुर अशी आपण स्त्रीमजुराची ढोबळ मानाने व्याख्या करू शकतो. ही मजुरी म्हणजेच मोबदला हा मोबदला रोख पैशात, वस्तुरुपात अथवा उत्पादनातील हिश्याच्या स्वरुपात असतो. आजही भारतामध्ये ग्रामीण भागातील स्त्रीया विकासापासून वंचित राहिलेल्या आहेत. कामातील सहभागाचा दर जरी कमी असला तरी स्त्रीया ह्या पुरुषांपेक्षा सक्षमतेने व मन लावून काम करतात. जनगणना, २०११ नुसार भारताच्या एकूण लोकसंख्येपैकी ४८.२ टक्के इतके प्रमाण स्त्रीयांचे आढळते.¹ मानव संसाधन आणि त्याच्या जडणघडणीत स्त्रीयांचा फार मोठा वाटा आहे. भारतातील विशेषतः ग्रामीण भागातील स्त्रीया मुख्यतः शेती व शेती पूरक उद्योगामध्ये जास्त सहभागी असतात. स्त्री मजुर ही कोणत्याही क्षेत्रात सहज काम करू शकते. त्या पुरुषांच्या तुलनेत अधिक सक्षमतेने व मन लावून काम करत असतात. परंतु, त्यांना पुरुषांपेक्षा मजुरी खुप कमी मिळते असे दिसून आले आहे.

साहित्याचा आढावा:

असंगठित क्षेत्रामध्ये काम करणा-या कामगारांवर अनेक संशोधने, पुस्तके, प्रकाशने आणि लेख अशी विविध साहित्याचे प्रकार उपलब्ध आहेत. काही संशोधकांनी विशेषतः स्त्रीमजुर आणि त्यांच्या समस्या यासंदर्भात संशोधन केले आहे.

टेसी कुरियन, अ स्टडी ऑफ वुमेन वर्कर्स इन द प्लांटेशन सेक्टर ऑफ केरला, पी.एच.डी. प्रबंध, महात्मा गांधी विद्यापीठ, केरळ, २०००.

यांनी केरळमधील लागवडी क्षेत्रातील स्त्री कामगारांच्या जीवनाची गुणवत्ता यावर संशोधन केले व त्यांनी असा अनुमान काढला की, या स्त्रीयांच्या जीवनाशी शारिरीक गुणवत्ता ही समाधानकारक नाही.

पाटील व्ही. ए., स्टडी ऑन द प्रॉब्लेम्स ऑफ सिझनल वर्कर्स वर्कींग इन सिलेक्टेड शुगर फॅक्टरीज इन कोल्हापूर, पी.एच.डी. प्रबंध, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर, २००२.

यांच्या कोल्हापूर जिल्ह्यातील साखर कारखान्यातील हंगामी कामगारांच्या संशोधन अध्ययनात रोजगार, वेतन, कामाची परिस्थिती, सामाजिक-आर्थिक जीवन या संज्ञेच्यासंबंधी विविध समस्या अधोरेखित केल्या आहेत

ईश्वर रागिनी, ग्लोबलायझेशन ऍंड सोशियो-इकॉनॉमिक स्टेअस ऑफ फिमेल वर्कर्स इन ट्रेडिशनल स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीज ऑफ जयपूर, एम. फिल. प्रबंध, आय.आय.एस. विद्यापीठ, जयपूर, २०१२

¹ Ratnagiri Census Handbook, 2011.

यांच्या संशोधन अध्ययनात जयपूर शहरातील पारंपारिक छोट्या उद्योगातील स्त्री कामगारांचा रोजगार, कामाची परिस्थिती आणि सामाजिक-आर्थिक दर्जा यासंबंधित समस्यांवर लक्ष वेधले आहे.

वाघेला एस.एस. अ स्टडी ऑफ वुमेन एम्प्लॉईज इन सिलेक्टेड स्मॉल स्केल इंडस्ट्रीयल युनिट्स विथ स्पेशल रेफरेंसेस टू कल्याण- डोंबिवली एमआयडीसी एरिया इन ठाणे डिस्ट्रीक्ट्स, पी.एचडी. प्रबंध, एस.एन.डी.टी. विद्यापीठ, मुंबई, महाराष्ट्र, २०१३.

यांच्या ठाणे जिल्ह्यातील कल्याण - डोंबिवली महाराष्ट्र औद्योगिक विकास महामंडळ येथील छोट्या उद्योगधंद्यातील स्त्री कामगार या संशोधन अध्ययनात स्त्री कामगारांना विविध समस्यांना तोंड द्यावे लागते याबाबतचे चित्र त्यांनी रेखाटले आहे.

अभिषेक तिवारी, पी. ए. मिश्रा, अ स्टडी ऑफ वुमेन लेबर इन अनऑर्गनाइज्ड सेक्टर- इन इंडियन पर्सस्पेक्टिव्ह, न्यु मॅन इंटरनॅशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिपलीनरी स्टडीज, Vol. 1, issue 12, ISSN: 2348-1390, 2014.

यांनी त्यांच्या संशोधन अध्ययनात असंगठित क्षेत्रातील स्त्री कामगारांच्या परिस्थितीसंदर्भात अभ्यास केला आहे.

स्त्रीमजूर होण्याची प्रमुख कारणे:

१. गरिबी
२. शिक्षणाचा अभाव
३. रोजगाराच्या समस्या
४. घरातील सदस्य संख्येत वाढ
५. आर्थिक अडचणी
६. पतीला कमी मजुरी
७. पतीचे व्यसन
८. पतीचा मृत्यू

मजूर स्त्रीयांच्या समस्या:

१. कौटुंबिक समस्या
२. आरोग्यविषयक समस्या

संशोधनाची व्याप्ती: प्रस्तुत संशोधनात रत्नागिरी जिल्ह्यातील दापोली तालुक्यातील ग्रामीण भागातील दहा गावांचा समावेश करण्यात आला आहे. त्यामध्ये केळशी, रोवले, विजयवाडी, आंबवली ब्रुदुक, मुडी, लाडघर, बुरोंडी, चंद्रनगर, पंचनदी आणि कोळथरे या

फळ प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीया:

मजूरांचे वर्गीकरण केले तर मजूर पुरुष व स्त्रीया असे विभाजन करता येते. यात पुरुष मजूर यापेक्षा स्त्री मजूरांना घरची व बाहेरची अशा दोन्हीही आघाड्यांवर काम करावे लागते. त्यांना कुटुंबाकडे अधिक लक्ष द्यावे लागते. घरात ब-याच वेळा अनेक समस्या असतात. त्या सर्व समस्यांना तोंड देवून त्यांना त्यांचा संसार सांभाळावा लागतो. काही वेळा या मजूर स्त्रीयांच्या पतीचे निधन झालेले असते. अशा वेळेस त्यांना सर्व कुटुंबाला सोबत घेवून जगावे लागते. घरात कुटुंबाच्या उदरनिर्वाहाच्या, आरोग्याच्या, शैक्षणिक अशा अनेक समस्या असतात. त्या सर्व समस्यांना एकट्या स्त्रीला सामोरे जावून सोडवाव्या लागतात. या मजूर स्त्रीया मजूर होण्यामागे अनेक कारणे असतात. त्यामुळे दुस-यांच्या फळ प्रक्रिया उद्योगात जावून मजुरी करावी लागते. केवळ पतीने कमावून आणलेले उत्पन्न पूर्ण कुटुंबासाठी पुरेसे नसते. त्यामुळे स्त्रीला मजुरीकडे वळावे लागते. ग्रामीण भागात स्त्रीया मजूर होण्याची कारणे आणि येणा-या समस्या मोठ्या प्रमाणात दिसून येतात.

३. आर्थिक समस्या
४. सामाजिक समस्या

संशोधन उद्दिष्टे:

१. ग्रामीण भागातील आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांचा आढावा घेणे.
२. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या कौटुंबिक परिस्थितीचे अध्ययन करणे.
३. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या आर्थिक परिस्थितीचे अध्ययन करणे.
४. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या सामाजिक परिस्थितीचे अध्ययन करणे.

गावांतील आंबा प्रक्रिया उद्योगात काम करणा-या मजूर स्त्रीयांचा समावेश करण्यात आला आहे.

संशोधन नमूना: दापोली तालुक्यातील दहा गावातील प्रत्येकी एका गावातून दहा याप्रमाणे एकूण १०० महिलांचा सहेतुक नमूना निवड पध्दतीने निवड करण्यात आली.

तक्ता 1 - नमुना निवड

अ.क्र.	गावांची नावे	नमुना
1	केळशी	10
2	रोवले	10
3	विजयवाडी	10
4	आंबवली बुद्रुक	10
5	मुर्डी	10
6	लाडघर	10
7	बुरोंडी	10
8	चंद्रनगर	10
9	पंचनदी	10
10	कोळथरे	10
एकूण		100

संशोधन पध्दती: प्रस्तुत संशोधनासाठी सर्वेक्षण संशोधन पध्दतीचा वापर करण्यात आला आहे. सर्वेक्षण पध्दतीच्या प्रत्यक्ष मुलाखतीच्या आधारे संशोधन करण्यात आले.

माहितीचे विश्लेषण:

प्रश्नावली तयार करून ती मजूर स्त्रीयांकडून माहिती घेऊन ती भरून घेण्यात आली त्याची माहिती खालीलप्रमाणे आहे.

१. **स्त्री मजुरांचे शिक्षण:** दहा गावांतील १०० स्त्रीयांपैकी एकूण ६४ स्त्रीया प्राथमिक, ३० स्त्रीया माध्यमिक, ६ स्त्रीया अशिक्षित तर पदवी वा पदव्युत्तर शिक्षण कोणीही घेतलेले नाही. यावरून आजही ग्रामीण भागात उच्च शिक्षण घेण्याबाबत स्त्रीया अजून मागेच आहेत असे आढळले

२. **कुटुंबाचा प्रकार:**

१०० स्त्रीया पैकी २२ स्त्रीयांची कुटुंब पध्दती ही संयुक्त प्रकारची तर ७८ स्त्रीयांची कुटुंब पध्दती ही स्वतंत्र स्वरूपाची दिसून आली. स्वतंत्र कुटुंब पध्दती होण्यामागे मुख्यतः जमीनीची वारसा हक्काने झालेली विभागणी कारणीभूत ठरलेली आढळली.

३. **स्वमालकीची शेती:**

१० गावांमध्ये १०० स्त्रीयांपैकी एकूण ६८ स्त्रीयांच्या कुटुंबाकडे त्यांच्या कुटुंबाच्या मालकीची जमीन आहे. तर ३२ स्त्रीया भूमिहीन आढळल्या.

४. **व्यवसाय:**

१०० स्त्रीयांपैकी ६८ स्त्रीया स्वतःच्या कुटुंबाची शेती असण्यासोबतच आंबा प्रक्रिया

उद्योगामध्ये मजुरी करतात. तर ३२ स्त्रीयांकडे शेतजमीन नसल्यामुळे फक्त मजुरीवर त्यांचा चरितार्थ अवलंबून आहे.

५. **जमीन असूनही मजुरी:** एकूण १०० स्त्रीयांपैकी ६८ स्त्रीयांकडे स्वमालकीची जमीन असून त्यापैकी ३५ स्त्रीया जमीन न कसता दुसरीकडे जावून मजुरी करतात. जमीन न कसण्याची अनेक कारणे आहेत त्यामध्ये मुख्यतः विभाजनामुळे त्यांच्या वाट्याला कमी जमीन आल्यामुळे ती कसूच शकत नाही.

६. **जमीन कसण्यासोबत मजुरी:** १०० पैकी ६८ स्त्रीयांकडे स्वमालकीची जमीन असून त्यापैकी ३३ स्त्रीया जमीनही कसतात व इतर वेळी मजुरीही करतात. जमीन कसून जास्त उत्पन्न मिळत नसल्यामुळे मजुरीही करतात.

७. **बचतगटाचे सभासद:** मजुरी करणा-या स्त्रीया बचत गटाच्या सभासद फार कमी प्रमाणात आहेत असे दिसून येते. दहा गावांमध्ये विविध बचत गटाचे प्रमाण अत्यल्प असून फक्त ६ स्त्रीया बचत गटाच्या सभासद असून ९४ स्त्रीया बचत गटाच्या सभासद नाहीत.

८. **आर्थिक व्यवहार:** १०० स्त्रीयांपैकी ६६ स्त्रीयांचे पती घरामध्ये आर्थिक व्यवहार पाहतात. तसेच ३४ स्त्रीया स्वतः आर्थिक व्यवहार पाहतात. यामध्ये ३४ स्त्रीयांचे पती हे गावाबाहेर कामाच्या निमित्ताने गेले

असल्यामुळे तसेच पतीला दारुचे व्यसन असल्यामुळे त्या स्वतः व्यवहार बघतात.

९. आरोग्यविषयक समस्या:

आंबा प्रक्रिया उद्योगामध्ये काम करताना फार अंगमेहनत करावी लागत असल्याने मजुरी करणा-या स्त्रीयांना मानेचे दुखणे, कंबरदुखी, पाठदुखी तसेच डोकदुखी यांसारख्या आरोग्यविषयक समस्या जाणवतात. १०० पैकी ७४ स्त्रीयांना या समस्या जाणवतात असे दिसून येते.

१०. आरोग्य निवारणासाठी पैशांची उपलब्धता:

१०० स्त्रीयांपैकी आरोग्य समस्या उद्भवल्यास ७१ स्त्रीयांकडे पैसे उपलब्ध तर २९

निष्कर्ष:

मिळालेल्या माहितीवरून संशोधनाचे निष्कर्ष काढण्यात आले आहेत ते पुढीलप्रमाणे आहेत.

१. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या घरातील कमावत्या लोकांची संख्या ही कमी दिसून आलेली आहे. त्यामुळे घरातील बराचसा अर्थाजनाचा भार हा एकट्या मजूर स्त्रीवर पडल्याचे दिसते. तिला घरातील सर्व बाबींकडे लक्ष द्यावे लागते. तसेच बाहेर जावून मजुरीसुद्धा करावी लागते.
२. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीयांना वर्षभरातील १२० दिवस हे आंबा प्रक्रिया उद्योगाच्या ठिकाणी जावून काम करावे लागते. तेव्हा थोड्या प्रमाणात का होईना त्यांच्या गरजा भागविल्या जातात. त्यामुळे या स्त्रीयांचा जास्त वेळ काम करण्यात जात असल्याने त्या स्वतःकडे जास्त लक्ष देवू शकत नाही.
३. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांना आंबा प्रक्रिया उद्योगाचे मालक ज्या दिवशी काम केले नाही त्या दिवशी मजुरी देत नाही. त्यामुळे या मजूर स्त्रीयांना रोजच्या आर्थिक गरजा पूर्ण करणे शक्य होत नाही. एखादी अचानक अडचण उभी राहिल्यास त्यांच्याकडे आवश्यक तेवढा पैसा शिल्लक राहत नाही. तेव्हा त्या अडचणीला सामोरे जाणे त्यांना कठीण जाते.
४. आर्थिक गरजा पूर्ण होत नसल्याने मजूर स्त्रीयांना जास्तीत जास्त आंबा प्रक्रिया उद्योगात मजुरी करावी लागते. त्यांचा अधिक वेळ (८ तास) मजुरी करण्यात गेल्यामुळे त्या त्यांच्या कुटुंबातील मुलांमुलींच्या शिक्षणाकडे अधिक लक्ष देवू शकत नाही. यामुळे या मजूर

स्त्रीयांकडे आरोग्य समस्या निवारणासाठी पैसे उपलब्ध नसतात.

११. निर्णय प्रक्रियेत सहभाग: ग्रामीण भागामध्ये आजही घरामध्ये काही महत्त्वाचे निर्णय घ्यावयाचे असतील तर स्त्रीयांना सहभागी करून घेत नाहीत. ६७ स्त्रीयांना घरातील निर्णय प्रक्रियेमध्ये सहभागी करून घेतले जाते तर ३३ स्त्रीयांना सहभागी करून घेतले जात नाहीत.

१२. महिला ग्रामसभेविषयी माहिती: महिला ग्रामसभेविषयी माहिती विचारली असता ५८ स्त्रीयांना ग्रामसभा व महिला ग्रामसभेविषयी माहिती आहे तर महिला ग्रामसभा असते हे ४२ स्त्रीयांना माहितच नाही.

स्त्रीयांच्या मुलांमुलींच्या शिक्षणात बरेच वेळा खंड पडतो.

५. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीयांचे शिक्षण हे प्राथमिक व माध्यमिक पर्यंतच झाल्याचे आढळून आले.
६. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या कुटुंबाचा मुख्य व अधिक अर्थाजनाचा भाग मजुरी करणे हा आहे. त्यामुळे त्यांना दुसरा पर्याय उपलब्ध नसल्याने शेतात किंवा फळ प्रक्रिया उद्योगात जावून मजुरी करावी लागते.
७. अधिकाधिक मजूर स्त्रीयांकडे जोड व्यवसाय नाही. त्यामुळे केवळ त्यांना आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजुरीच्या उत्पन्नावर अवलंबून राहावे लागते.
८. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या स्त्रीयांना दिल्या जाणा-या मजुरीचे प्रमाण हे महागाईच्या तुलनेत बरेच कमी आहे. त्यामुळे या शेतमजूर स्त्रीयांच्या आर्थिक गरजा पूर्ण होऊ शकत नाही.
९. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांना आर्थिक गरजा भासल्यास त्या बरेच वेळा सावकाराकडून व्याजाने किंवा आंबा प्रक्रिया उद्योगाच्या मालकाकडून पैसे घेतात. तसेच काही वेळा त्यांना शेजा-यांकडून उसनवार म्हणून पैसे घ्यावे लागतात. त्यामुळे ते पैसे परत करणे कठीण जाते.
१०. घरातील आर्थिक व्यवहार हा ६५ स्त्रीयांच्या कुटुंबात घरातील पती म्हणजेच पुरुषांकडे असल्याने सर्व आर्थिक अधिकार पर्यायाने सर्व बाबी त्यांच्या ताब्यात असल्याने या मजूर स्त्रीयांना घरातील पुरुषांच्या म्हणण्याप्रमाणे वागावे लागते.

११. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांच्या दहा गावात प्राथमिक आरोग्य केंद्र नाही. त्यामुळे आरोग्यविषयक समस्या निर्माण झाल्यास या मजूर स्त्रीयांना बाजारपेठेच्या वा तालुक्याच्या ठिकाणी जावे लागते पण तिथे जाण्यासाठी पैसे उपलब्ध नसतात. त्यामुळे ब-याच वेळा या स्त्रीयांना दुखणे अंगावर काढावे लागते.
१२. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांकडे व्यावसायिक प्रशिक्षण नसल्यामुळे त्यांना कमी मजुरीच्या उत्पन्नावर काम करावे लागते.
१३. घरातील निर्णय प्रक्रियेत आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीयांचा सहभाग फार कमी स्वरूपाचा असल्याचे दिसून येते. घरामध्ये पुरुषी वर्चस्व असल्याने या स्त्रीयांना आपले निर्णय मांडता येत नाही.
१४. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील ब-याच मजूर स्त्रीयांना ग्रामसभेविषयी माहिती नाही. त्यामुळे ग्रामीण विकासाची एकूणच परिस्थिती कशी आहे याविषयी शेतमजूर स्त्रीयांना कल्पना येत नाही.
१५. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीयांचे शिक्षण अधिक झाले नसल्याकारणाने त्यांना शासनाच्या मजुरांसाठी असणा-या विविध योजनांची माहिती फार कमी स्वरूपात दिसून आली.

शिफारशी

प्रस्तुत संशोधनाबाबत शिफारशी करण्यात आल्या आहेत त्या पुढीलप्रमाणे आहेत:

१. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांना शासनाच्या विविधा योजनांचा लाभ मिळावा.
२. ग्रामीण भागात स्त्रीयांसाठी विविध जोड व्यवसाय उपलब्ध होतील याकडे स्वयंसेवी संस्था, बँका आणि मोठे उद्योगधंदे यांना सामाजिक जबाबदारीच्या जाणिवेतून लक्ष देण्यात यावे.
३. आंबा प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीयांना विविध हस्तकौशल्यांचे प्रशिक्षण देण्यात यावे. जेणेकरून त्या स्वयंरोजगार मिळवण्यावर भर देतील. उदा. नारळ, सुपारी यांपासून बनणा-या अनेक वस्तू बनविण्याचे प्रशिक्षण.
४. ग्रामीण भागात आर्थिक साक्षरता वाढीस लागेल याकडे स्थानिक स्वराज्य संस्था उदा. ग्रामपंचायत, पंचायत समिती आणि जिल्हा परिषद या संस्थांनी पुढाकार घेणे. लक्ष देणे आवश्यक आहे.

५. शेती व फळ प्रक्रिया उद्योगातील मजूर यांच्यासाठी असणा-या शासकीय योजना कृषि विद्यापीठ व कृषि विज्ञान केंद्र यांच्या माध्यमातून ग्रामीण भागातील सर्व तळागाळापर्यंत पोहचतील यादृष्टीने प्रयत्न होणे आवश्यक आहे.
६. ग्रामीण भागात फळ प्रक्रिया उद्योगातील मजुरांकरिता कामगार कायदा लागू होणे आवश्यक आहे.
७. ग्रामीण भागात महिला बचत गट आणि स्वयंसेवी संस्था यांच्या माध्यमातून उपलब्ध स्थानिक साधनसामुग्रीवर आधारित गृहउद्योग सुरु करण्यात यावेत जेणेकरून या प्रक्रिया उद्योगातील मजूर स्त्रीयांचा आर्थिक दर्जा उंचावण्यास मदत होईल.
८. ग्रामसभा आणि महिला ग्रामसभेविषयी स्थानिक स्वराज्य संस्था यांच्या माध्यमातून या भागात जनजागृती होणे आवश्यक आहे. त्यामुळे या शेतमजूर स्त्रीयांना आपल्या हक्कांची जाणीव होऊन शायकीय माहिती मिळण्यास मदत होईल.
९. ग्रामीण भागात आरोग्याच्या सोयी असणे आवश्यक आहे. ग्रामीण भागात दहा गावांच्या समूहामध्ये एक दवाखाना आणि प्रत्येक एक आरोग्य सेविका नेमल्यास त्यांचा फायदा या स्त्रीमजुरांना होईल.
१०. बचतगट, महिला मंडळे, याबाबत ग्रामीण भागात जनजागृती निर्माण केल्यास स्त्रीयांना संघटीत होण्यास मदत होईल व त्या एकत्र येवून नवीन कौशल्य निर्माण करू शकतील.
११. ग्रामीण भागात फळ प्रक्रिया उद्योगातील या मजूर स्त्रीया सावकाराकडून कर्ज घेतात व परतफेडीच्या वेळेस सावकार जास्तीचे व्याज घेवून त्यांचा गैरफायदा घेतात. स्थानिक पतपेढी निर्माण करण्यास प्रोत्साहन देण्यात यावे.
१२. या भागातील शेतमजूर स्त्रीयांकडे पाहिल्यास असे दिसून येते की, या ठिकाणी औपचारिक आणि अनौपचारिक शिक्षणव्यवस्थेस बळकटी आणणे गरजेचे आहे.
१३. शासनाच्या कौशल्यविकास आणि उद्योजकता मंत्रालयामार्फत राबविण्यात येणा-या विविध योजनांचा लाभ या परिसरास मिळावा याकरिता स्थानिक नेतृत्वाने पुढाकार घेणे गरजेचे आहे.
१४. स्थानिक स्वराज्य संस्थेच्या अधिका-यांमार्फत महिलांचे हक्क व अधिकार याबाबत जनजागृती कार्यक्रमांचे आयोजन करणे गरजेचे आहे.

संदर्भ सूची:

1. प्रा. नीलम धुरी, संशोधन पद्धती, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, २००८.
2. प्रा. रा. ना. घाटोळे, समाजशास्त्रीय संशोधन,- तत्वे आणि पद्धती, श्री. मंगेश प्रकाशन, नागपूर, २००९.
3. श्री. सं. वि. सावंत, सावंतवाडी तालुक्यातील आंबा उतपादकांचा अभ्यास, अप्रकाशित
4. एम. फिल. प्रबंध, यृवंतराव चव्हाण विद्यापीठ, नाशिक, २००७.
5. Tessa, Kurian, A study of women workers in the plantation sector of Kerala. A thesis in partial fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy, Mahatma Gandhi University, Kerala, 2000.
6. V. A. Patil, Study on the problems of seasonal workers working in selected sugar factories in Kolhapur district, A thesis in partial fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy, Shivaji University, Kolhapur, Maharashtra, 2002
7. Eshwar Ragini, Globalisation and Socio-Economic status of female workers in traditional small scale industries of Jaipur City, , A thesis in partial fulfillment of the requirements for the Degree of Master of Philosophy, IIS University, Jaipur, 2012.
8. S.S. Waghela, A study of women employees in selected small scale industrial units with special references to Kalyan-Dombivali MIDC area in Thane districts. A thesis in partial fulfillment of the requirements for the Degree of Doctor of Philosophy, S.N.D.T. University, Mumbai, Maharashtra, 2013.
9. Abhishek Tiwari, Pankaj Mishra, Arvind, A study of women labour in unorganised sector- in Indian perspective, New man international journal of multidisciplinary studies, Vol. 1, issue 12, ISSN: 2348-1390, 2014.
10. Ratnagiri Census Handbook, 2011.
11. Website- www.ratnagiridistrict.co.in

उमरगा तालुक्यातील लोकसंख्या वाढ एक भौगोलीक अभ्यास

डॉ राठोड सुर्यकांत लालचंद

भूगोल विभाग श्री छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय, उमरगा. ता. उमरगा जि. उस्मानाबाद

प्रस्तावना :- जगाच्या लोकसंख्येत सातत्याने वाढ होत आहे. तथापी अविकसित देशांच्या लोकसंख्येत फार मोठ्या प्रमाणावर व जलद वाढ होत आहे.भारतासारख्या विकसनशील देशासमोर ही लोकसंख्या प्रस्फोटाचा गंभीर प्रश्न निर्माण झालेला आहे. लोकसमुहाची संख्या मर्यादित ठेवली तरच लोकसंख्येचा गुणात्मक दर्जा वाढतो, राहणीमान सुधारते व एकूणच आर्थिक विकासाचा चालना मिळते हा विचार अलीकडच्या काळात प्रबळ झालेला आहे. महाराष्ट्रातील मुंबई,ठाणे, पुणे, नाशिक अशा शहरामध्ये सर्वाधिक लोकसंख्या आढळते.याचे मुख्य कारण म्हणजे शहरामध्ये झालेले औद्योगिककरण, रोजगाराच्या संधी शैक्षणिक सुविधा व इतर सांस्कृतिक घटक ह्या सर्व घटकामुळे शहराकडे लोकसंख्याचा ओघ वाढताना दिसतो. भारताच्या लोकसंख्येविषयी इ.स. २००१ नंतर लोकसंख्येची खात्रीयक माहिती उपलब्ध होत गेली. भारतातील लोकसंख्या १९९१ पासून अव्याहत वाढत असल्याचे जाणवते. २००१ पासून लोकसंख्या दर झपाट्याने वाढत झाली आहे. २०११ च्या जनगणनेनुसार भारताची लोकसंख्या एकूण १०२७०१५२४७ इतकी आहे. या पैकी पुरुषाची संख्या ५३१२७७०७८ आहे. तर स्त्रीयाची संख्या ४९५७३८१६९ आहे. या आकडेवारी वरून असे दिसून येते की पुरुषा पेक्षा स्त्रीयाचे प्रमाण कमी दिसून येत आहे. परंतु एकुण आकडेवारी वरून असे दिसून येत कि भारताची लोकसंख्या झपाट्याने वाढ होत आहे.महाराष्ट्र राज्यची २०११च्या जनगणनेनुसार महाराष्ट्र राज्याची लोकसंख्या ९६७५२२४७ एकूण लोकसंख्या आहे. या पैकी पुरुषाचे लोकसंख्या प्रमाण ५०३३४७७० आहे. स्त्रीयाची लोकसंख्या प्रमाण ४६४१७९७७ एवढी आहे. शहरी भागातील लोकसंख्या ही ४२.४० टक्के आहे. या पैकी उस्मानाबाद जिल्हयाची लोकसंख्या २०११ च्या जनगणने प्रमाणे उस्मानाबाद जिल्हयाची लोकसंख्या १६५७५७६ आहे. त्यापैकी ८६१५३५ पुरुष व ७९६०४१ स्त्रीया आहेत. ग्रामीण भागातील लोकसंख्या १३७६५१९ आहे. तर नागरी भागातील लोकसंख्या २८१०५७ आहे. उमरगा हा महाराष्ट्रातील उस्मानाबाद जिल्हयातील ८ तालुक्यापैकी एक तालुका आहे. उमरगा तालुक्यात ९६ गावे आहेत. या तालुक्याची लोकसंख्या २६९५१९ असून त्यापैकी १३८२९०पुरुष आहेत. आणि १३१२२९ स्त्रीया आहेत. या पैकी ० ते ६ वयोगटातील मुलाची संख्या ३४६४३ आहे. एकुण लोकसंख्येच्या १२.८५टक्के आहे. उमरगा तालुक्याचे लिंग गुणोत्तर हे महाराष्ट्र राज्याच्या सरासरी ९२९ च्या तुलनेत ९४९ इतके आहे.उमरगा तालुक्यातचा साक्षरता दर ६७.७६ टक्के असून त्यापैकी ७४.३७ टक्के पुरुष साक्षर आहेत. तर ६०.८ टक्के महीला साक्षर आहेत. उमरगाचे एकूण क्षेत्रफळ ९८३.५९ चौ.की.मी. असून लोकसंख्येची घनता २७४ प्रति चौ. की.मी. आहे.एकूण लोकसंख्या पैकी ८०.०२ टक्के लोकसंख्या शहरी भागात राहते.

प्रामुखाख्याने लोकसंख्येच्या लोकसंख्यावाढ हि, वितरण,घनता, वयोरचना, ग्रामीण शहरी लोकसंख्या लिंगगुणोत्तर ,नागरीकरण,स्थलांतर साक्षरता या वैशिष्ट्यापैकी फक्त लोकसंख्या वाढ ही २००१ ते २०११ या दहा वर्षात कीती लोकसंख्या वाढ झालेली आहे या विषयी सविस्तर माहिती मिळविण्यात येते. उमरगा तालुक्यातील लोकसंख्या ही २००१ ते २०२१ या विसवर्षातील झालेली वाढ याचा अभ्यास करणे आवश्यक आहे.

उद्दिष्ट्ये :-

- १ उमरगा तालुक्यातील गेल्या विसवर्षातील लोकसंख्येत झालेली वाढीचा अभ्यास करणे.
- २ लोकसंख्या वाढीस प्रवृत्त करणारे घटकाचा अभ्यास करणे.
- ३ स्त्रीपुरुष यांच्यात झालेला बदल अभ्यासणे.
- ४ उमरगा तालुक्यातील लोकसंख्या मंडळा नूसार माहिती मिळविणे.

भौगोलीक अभ्यास क्षेत्र :-

महाराष्ट्र राज्यातील ३६ जिल्हया पैकी उस्मानाबाद एक जिल्हा आहे या जिल्हयात एकूण आठ तालूके आहेत. त्यात भूम,पंरडा, वाशी,

कळंब, उस्मानाबाद, तुळजापुर, लाहारा,उमरगा,या तालुक्या पैकी उमरगा हे एक तालूका आहे.उमरगा तालुक्याचे भौगोलीक अक्षवृत्तीय विस्तार १७४५' उत्तर ते १८ उत्तर अक्षवृत्त असून रेखावृत्ताच्या पूर्वेकडे७६'३०'पूर्व ते ७६४५' उत्तर रेखावृत्तीय विस्तार आहे उमरगा तालुक्याची सीमा उत्तरेष औशा,निलंगा, पूर्वेस करनाटक बसवकल्याण, दक्षिणेस आळंद, आक्कलकोट, पश्चिमेस लाहारा तालूका आहे. भौगोलीक क्षेत्रफळ ९७७.३३ चौ. की.मी. आहे

४)अभ्यास पध्दती :-

उमीगा तालुक्यातील लोकसंख्या वैशिष्ट्यांचा अभ्यास करण्यासाठी द्वितीय स्रोताचा प्रामुख्याने केला असून या मध्ये २००१ आणि २०११ च्या जनगणनेनुसार मंडळानुसार मिळालेल्या माहितीच्या अधारे घेतले आहे. उमरगा तालुक्यातील मुरुम, दाळिंब, मुळज, नारगवाडी, उमरगा, या जिल्हापरिषद सर्कल नुसार लोकसंख्या चा अभ्यास महत्वाचा आहे. या मंडळानुसार उमरगा तालुक्याचे प्राकृतिक प्रशासकीय घटकाचा अभ्यास व आकडेवारीद्वारे लोकसंख्या अभ्यासली आहे. या मध्ये प्रामुख्याने लोकसंख्येच्या लोकसंख्यावाढ हि, वितरण, घनता, वयोरचना, ग्रामीण शहरी लोकसंख्या लिंगगुणोत्तर, नागरीकरण, स्थलांतर साक्षरता या वैशिष्ट्यापैकी फक्त लोकसंख्या, लोकसंख्यावाढ या संख्यात्मक वैशिष्ट्याचा अभ्यास केला आहे. त्यासाठी संकलीत माहितीचे वर्गीकरण व त्याद्वारे पृथःकरण करत नकाशाशास्त्रीय तंत्राद्वारे आलेख काढून

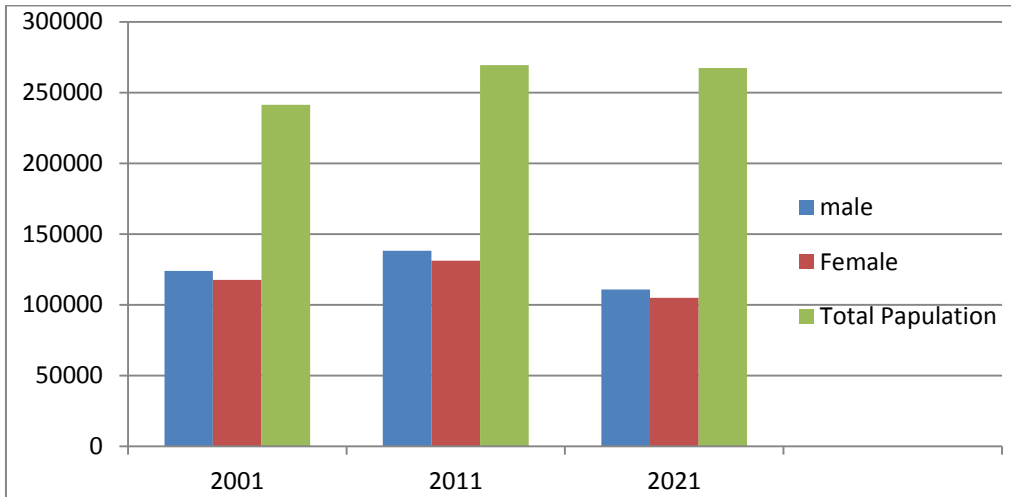
लोकसंख्येतील बदल अभ्यासत लोकसंख्यावाढीतील संभाव्य कारणे अभ्यासली आहेत.)

५)विषय विवेचन :-

उस्मानाबाद जिल्हयातील लोकसंख्या पाहिले आसता आज १७७३६८५ आहे. या पैकी २०२१ नुसार उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या २,६७,४३२ आहे. २०११ च्या जनगणनेनुसार उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या २,६९,५१९ आहे. या पैकी १३८२९० पुरुष आणि १३१२२९ स्त्री आहेत. २०२० मध्ये उमरगाची लोकसंख्या २५८८०५ आहे. या पैकी १४३४२० पुरुष आणि ११५३८५ महिला आहेत. एकूण कामगार ९१९४१ बहु कौशल्यावर अवलंबून आहेत. त्यापैकी ५९०९१ पुरुष आणि ३२८५० स्त्री आहेत. एकूण २८२८३ शेतकरी शेतदार अवलंबून आहेत. २१३९१ पैकी पुरुष आणि ६८९२ स्त्रिया आहेत. उमरगा येथे शेतजमीनीत ३९२८५ लोक मजुर म्हणून काम करतात. पुरुष २२६८२ आणि महिला १६६०३ आहेत.

उमरगा तालुक्यातील लोकसंख्या २००१ ते २०२१

अ. क	वर्ष	पुरुष	स्त्री	एकूण लोकसंख्या
१	२००१	१२३८५२	११७४८७	२४१३९९
२	२०११	१३८२९०	१३१२२९	२६९५१९
३	२०२१	११०७७३	१०४८९८	२१५६७२



उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या वाढ सतत झालेली दिसून येत. २००१ च्या जनगणनेनुसार उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या पाहिले आसता २४१३९९ एवढी आहे. आणि २०११ नुसार उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या २६९५१९ एवढी आहे. गेल्या दशकात उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या २८१२६ एवढी वाढलेली आहे. १०.४३

टक्के वाढली आहे. २०२१ नुसार सरासरी उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या २६७३२ एवढी वाढ झालेली आहे. या दशकात मात्र उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या ऋणत्मक झालेली दिसून येते ती ऋणत्मक २०८७ कमी झाली आहे. या दशार्धकादल शोधझयाचे प्रयत्न केला आहे. विशिष्ट हंगामात रोजगारानिमित्त बाहय शहरात

स्थलातरीत झाले होते.तसेच या तालुक्यात रोजगाराच्या संधी कमी आहे.त्यामुळे तालुक्याची लोकसंख्या कमी आढळते.तालुक्यात लोकसंख्येचे अभिक्षेत्रीय वितरण तुलनात्मक दृष्ट्या सर्वात जास्त आहे. कारण या तालुक्यांमध्ये विकासाचा वाव असून लोकामध्ये आरोग्य, शिक्षण व राजकारण याबाबत जानीव जागृती आढळते. उमरगा तालुक्याचे लिंग-गुणोत्तर हे महाराष्ट्र राज्याच्या सरासरी ९२९ च्या तुलनेत ९४९ इतके आहे. उमरगा तालुक्याचा याक्षरता दर ६७.७६ टक्के असून त्यापैकी ७४.३७ टक्के पुरुष साक्षर आणि ६०.८ टक्के महिला साक्षर आहेत. लोकसंख्येची घनता पाहता २७४ प्रति चौ.कि.मी आहे.एकूण लोकसंख्या पैकी ८०.०२ टक्के लोकसंख्या शहरी भागात आणि १९.९८ टक्के ग्रामीण भागात राहते. तालुक्यात लोकसंख्येचे तिरण असमान दिसून येते. तालुक्यातील लोकसंख्या हि साक्षर असून जन्मदराचे प्रमाण कमी आहे. त्याच प्रमाणे आरोग्य विषयक सेवासुविधांचे प्रमाण व दळणवळणाच्या सुविधा आसल्यामुळे लोकसंख्येचे प्रमाण घटलेले दिसून येते.उमरगा तालुक्यात आरोग्याच्या सुविधा पाहिले आसता मुरुम, येणेगुर, उमरगा, तलमोड, माडज येथे आरोग्याच्या सुविधा भरपुर आसल्याने लोकसंख्या वाढ घटलेली आहे.

निष्कर्ष :-

उमरगा तालुक्याची लोकसंख्या वाढ हि भविष्यकाळात सरासरीपेक्षा कमी दिसून येईल. कारण उमरगा तालुक्यात शिक्षणाचे प्रमाण वाढत चालले आहे.आनेक रोजगाराच्या संधी हि कमी होत आसल्याने व आरोग्याच्या सेवासुविधा वाढल्याने लोकसंख्येत घट दिसून येईल आसे आदाज व्यक्त करण्यात येत आहे.भविष्यात विचार केला आसता जमिनीच्या होणारी विभागनी उत्पादन क्षमतेत होणारी घट याचा ही परीणम लोकसंख्येवर दिसून येत आहे. वाढती बेकारी आपुच्या नोकरी या मुळे लोकसंख्येवर परिणाम होवून लोकसंख्यावाढ भरमसाठ होणार नाही

संदर्भग्रंथ :-

- १ जिल्हा सामाजिक व आर्थिक समालोचन जिल्हा उस्मानाबाद.
- २ लोकसंख्या भूगोल प्रा.शंकरराव शेटे प्रा. सुरेश फुले. प्रा ओमप्रकाश शहापूरकर
- ३ महाराष्ट्र भूगोलशास्त्र संशोधन पत्रिका
- ४ प्रा. विठट्टल घारापुरे लोकसंख्या भूगोल
- ५ वृत्तमानपत्रे
- ६ महाराष्ट्राचा भूगोल डॉ पांडुरंग केचे दृ कैलाश पब्लिकेशन औरंगपुरा औरंगाबाद
- 7 Garnier B. Geography of Population
- 8 Trewartha G.T. A Geography of Population

क्रिडा व्यवस्थापन व आयोजन

डॉ.शुभांगी सुधाकरराव रोकडे

Email.-shubhajeet3@gmail.com

प्रस्तावना —

शारिरिक शिक्षणात व्यवस्थापन व आयोजन या शब्दाचा अर्थ व्यवस्था किंवा आणखी करणे असा होतो. कामाचा आराखडा तयार केला गेला आहे व त्या आराखडयानुसार कार्यपूर्णपणे पारपाडणे व व्यवस्थित रित्या पार पाडणे म्हणजेच आयोजन, नियोजन या दोन्ही गोष्टी परस्पर संबंधीत असतात. नियोजनाशिवाय व्यवस्थापनाची कल्पना करता येत नाही. यात ऐक गोष्ट दुस-यावर अवलंबून असते. अनेकदा व्यवस्थापण हा शब्द व्यवस्था आणि नियोजन या दोन्ही अर्थी वापरला जातो. परंतू व्यवस्थापन म्हणजेच नियोजन नव्हे. तर नियोजित कार्य नियोजित रित्या पार पाडणे म्हणजेच व्यवस्थापण असते.

व्यवस्थापण किंवा प्रशासनाची तत्वे आदर्श व्यवस्थेचे डॉ.जे.बी.न्यॅश यांनी ४ तत्वे पुढील प्रमाणे सांगितली आहे.

हेतुची स्पष्टता आपणास कोणतेही कार्य करायचे असेल तर ते कशासाठी करायचे आहे व त्यातून आपणास काय साध्य करायचे आहे हे अगोदर स्पष्ट करावयास हवे. साध्यनिश्चित असेल तर ते साध्यपूर्ण करावयाचे मार्ग व दिशा निश्चित असावयास हवी. असा मार्गनिश्चित झालातरच व्यवस्थापणास येणा-या अडचणीचा विचार करून पुढील कार्य व्यवस्थितपार पाडता येतील.

उपलब्ध स्वरूप कोणतेही कार्य व्यवस्थित व कोटेकोरपणे पार पाडण्यासाठी आवश्यक अशा उपलब्ध सोयी असणे आवश्यक आहे. तरच आपण करीत असलेल्या कार्यास कारणे अडथळे निर्माण होत नाही. तसेच शक्ती, पैसा, वेळ यांचा योग्य वापर करता येतो. स्पर्धा व सामन्याच्या वेळी मैदान, साहित्य, पंच यांची व्यवस्था योग्य वेळी केली असेल तर व्यवस्थापणात गोंधळ उडणार नाही. जर ही व्यवस्था योग्य नसेल तर गोंधळ निर्माण होतो. अशा वेळी यातून मार्ग काढतांना बराच त्रास होतो. या साठी सामन्यापूर्वी त्यासाठी लागणारे आवश्यक साहित्य व मैदान उपलब्ध असणे गरजेचे आहे.

कार्यक्रमाचे संचलन कार्यक्रमाचे संचलन करणारी व्यक्ती कार्यकुशल व अनुभवी असावी लागते तरच व्यवस्थित संचलन होते. जर सुख सुविधा असल्यातर त्यांच्या योग्य वेळी योग्य उपयोग केला नाही तर कार्यक्रमात गोंधळ निर्माण होण्याची शक्ता

असते या सर्वावर संचालकास मात करावी लागते. त्यातच संचालकाची खरी कसोटी असते. कुशल संचालक शारिरिक शिक्षक असेल तर ती योग्य साधनाचा वापर करून परिस्थितीवर मात करतात पण काही वेळेस सोयी व साधने उपलब्ध असूनही संचालकाच्या हलगर्जी प्रमाणे कार्यक्रम याशस्वीरित्या पार पडत नाही.

कार्यक्रमाचे मुल्यमापन कोणताही कार्यक्रम पारपाडल्यानंतर त्याची योग्य मुल्यमापन केले पाहिजे. तरच आपण केलेल्या कार्यक्रमातून आपला हेतू साध्य झाला की नाही हे समजते व काम करतांना आलेल्या अडचणी घडलेल्या चुका यातून मार्ग काढून योग्य निर्णय घेता येऊ शकतो या सर्व गोष्टीचे आत्म परिक्षण करणे गरजेचे आहे व त्यापासून आपणास नविन मार्ग नव्या पध्दती व नवेजुने दृष्टीकोन अवलंबिता येतात. मागील अनुभवाचा पुढील कामात योग्य उपयोग करून घेता येतो.

व्यवस्थापनाचे महत्व

कार्यक्रमाच्या योजने करिता। शारिरिक शिक्षणाचा कार्यक्रम तसेच कोणत्याही योजना व कोणतेही कार्य पारपाडण्यासाठी व्यवस्थापनाची आवश्यकता असते. पदाधिका-यांच्या नियुक्तीसाठी शारिरिक शिक्षणामध्ये विविध कार्यक्रमाचे नियोजन करतांना व कार्यक्रम योग्य रितने पार पाडण्यासाठी योग्य अशा व्यक्तींची नियुक्ती व्यवस्थापनामुळे शक्य होते. बजेटची रूपरेषा तयार करण्यासाठी शारिरिक शिक्षणामध्ये ज्या वेळेस शारिरिक शिक्षण आपल्या शाळेमध्ये संपूर्ण वर्षाचे बजेच तयार करतात. शाळेत व

शाळेबाहेर वेगवेगळ्या कार्यक्रमाच्या आयोजनासाठी जे काही खर्च होतो त्याचे बजेच तयार करणे आवश्यक असते व त्यासाठी व्यवस्थापणाचा आधार घ्यावा लागतो.

खेळाचे साहित्य मागविण्यासाठी विविध खेळखेळण्यासाठी विविध प्रकारचे साहित्य आवश्यक असते ते साहित्य खरेदी करतांना व्यवस्थापनाची आवश्यकता असते. व्यवस्थापनामुळे कोणते साहित्य खरेदीकरावयाचे आहे याचा निर्णय देता येतो.

खेळाडू निवडी करीता— विविध प्रकारच्या खेळा करीता खेळाडूंची निवड करतांना योग्य खेळाडूंची आवश्यकता असते. संघटने पुढे खेळाडूच निवड करणे सोपे जाते.

वर्ग प्रबोधनाकरीता— शारिरीक शिक्षणामध्ये वेगवेगळ्या खेळाचा व वेगवेगळ्या नियमांसाठी व तसेच शोध व आभ्यास क्रमाचा समावेश करण्यासाठी व्यवस्थापनाची आवश्यकता असते.

विकास कार्यक्रमासाठी कोणत्याही कार्यक्रमाच्या व्यवस्थेसाठी व कोणत्याही विकास कार्यक्रमासाठी व्यवस्थापनाची आवश्यकता भासते. व्यवस्थापनामुळे खालील गोष्टी सुध्दा साध्य होऊ शकतात त्यामध्ये संघर्ष व विरोधाची भावना नष्ट होते. खर्चाची बचत होते. वेळेची बचत होते व कार्यक्रम व कार्य योग्य रितीने पार पाडता येते.

शारिरीक शिक्षणात नियोजन व व्यवस्थापन सुसज्जित तज्ञ असे व्यक्तीमत्वाची सतत गरज असते. कारण या वरही शारिरीक शिक्षणातील सर्व जबाबदा—यांचा भार असतो. या साठी शैक्षणिक पात्रता असलेल्या चांगल्या व्यक्तिमत्व क्रिडा मार्गदर्शकाची आवश्यकता प्रत्येक शैक्षणिक घटकाला असते म्हणून क्रिडा मार्गदर्शकाची भुमीका व्यवस्थापणासाठी गरजेची असते. क्रिडा मार्गदर्शक हा खेळाडूचे जिवन घडवत असतो व त्याला अनेक खेळाडूंचे जिवन घडवायचे असते त्यासाठी स्वतः मार्गदर्शकाकडे त्याच्या अंगी विविध प्रकारचे गुण असणे आवश्यक असते. मार्गदर्शक हा फक्त खेळाचे मार्ग दर्शन करित नसून तो खेळाचा सर्वांगीन विकास घडवून आणणारा असला पाहिजे. त्यासाठी त्याच्याकडे पुढील प्रकारची

कमीतकमी प्रकारची पात्रता असेणे आवश्यक असते.

चांगले व्यक्तीमत्व क्रिडा मार्गदर्शकाच्या अंगी सर्वात महत्वपूर्ण गुण म्हणजे त्याचे व्यक्तिमत्व कोचच्या अंगी एक वेळा सर्व साधारण गुण नसले तरी चालेल परंतु मार्गदर्शकाकडे पाहताच तो निश्चितपणे आपणास प्रगतीपथाकडे नेईन असा आत्मविश्वास खेळाडूंना वाटला पाहिजे. तो मनमिळावू असला पाहिजे, निर्व्यसणी असला पाहिजे व खेळाडूंना सकारात्मक दृष्टीकोन देणारा असावा.

शैक्षणिक पात्रता— क्रिडा मार्गदर्शकाला योग्यतीच शैक्षणिक पात्रता असणे आवश्यक आहे. जर त्याला एक यशस्वि मार्गदर्शक व्हायचे असेल तर त्याने बि.पी.एड., एम.पी.एड., पी.एच.डी. त्याचप्रमाणे भारतातील एनआयएस, पतियाळाचा 'क्रिडा मार्गदर्शक' हा कोर्स पास होणे आवश्यक आहे. त्याच बरोबर इतर खेळाचा ही त्यास अनुभव असला पाहिजे.

मार्गदर्शन शास्त्रिय पध्दतीने करणे— क्रिडा मार्गदर्शकाने जर खेळाडूंना जर शास्त्रीय पध्दतीचा अवलंब करून शिकविले तर त्याच्या कौशल्यामध्ये चांगल्या प्रकारे भर पडू शकते कारण सध्या प्रत्येक गोष्ट शास्त्रीय पध्दतीने केली जाते.

ज्ञान आणि कौशल्य— मार्गदर्शकास त्यांच्या खेळाची व नियमांची डावपेचाची आणि तंत्राची तसेच विविध पध्दतीची सराव शास्त्रीय आणि अद्यावत ज्ञान असले पाहिजे. खेळाच्या नियमात वेळोवेळी बदल होत असतात त्याची माहिती मार्गदर्शकास असणे अनिवार्य आहे. तरच त्याची मैदावरील उपस्थिती कळू शकते. तो खेळाडूच्या चुका चटकन दुरूस्त करू शकला पाहिजे.

खेळाडू वृत्ती— प्रशिक्षक हा खेळाडू असतो. तसेच त्याच्याकडे खरी खेळाडूवृत्ती असणे अत्यंत महत्वाचे आहे. खेळातील जयपराजयाकडे तो तेवढ्याच खेळेकर पणे पहाणारा असावा. पराभवाने खचून व विजयाने हरकून जाणारा नसावा.

त्वरीत निर्णय घेण्याची क्षमता— खेळामध्ये परिस्थिती वारंवार बदलत असते केंव्हा काय होईल हे सांगता येत नाही. सध्याच्या युगात विज्ञानाने जास्तच प्रगती केली आहे. अशा

बदलत्य परिस्थितीत जशी परिस्थिती असेल त्या वेळी चटकन निर्णय घेण्याची क्षमता त्यात असावी. प्रशिक्षकाचे चारित्र हे निर्मळ व स्वच्छ असले पाहिजे. चारि★यावरूनच मनुष्य वचनाला सच्चा व शब्दाला पक्का असतो जर स्वता:चे चारि★य स्वच्छ असेल तर तो निरोगी व अज्ञाधारक खेळाडू निर्माण करू शकतो.

व्यवहारिक ज्ञान व सहानुभुती— कोणतीही गोष्टी केंव्हा कुठेही व कशी करावी याचे ज्ञान मार्गदर्शकाला असले पाहिजे. खेळाडूशी केंव्हा कसे वागावे तसेच वेळेनुसार कधी प्रेम करावे कधी रागवावे याचे ज्ञानमार्गदर्शकाला असले पाहिजे. क्रिडामार्गदर्शकाला मानसशा★गा विषयी ज्ञान असणे आवश्यक आहे. कारण वर्गात असणारी मुले वयाने व बुद्धीने शारिरीक क्षमतेने निरनिराळे असतात. तसेच मुलांचा स्वभाव, वागणे, राहणे यात विषमता असते. या सर्व गोष्टी लक्षात ठेऊन कोचने मार्गदर्शन केले पाहिजे.

शरिरशास्त्रा विषयी ज्ञान— क्रिडा मार्गदर्शकाला शारिरीक शास्त्राविषयी ज्ञान असणे आवश्यक आहे. तसेच शरिरातील विविध संस्थांवर खेळ व व्यायामाचा काया परिणाम होतो या विषयी त्याला माहिती असेण आवश्यक आहे. तसेच क्रिडामार्गदर्शकाचे आचारविचार, राहणमाण, वर्तनुक, बोलणेही नेहमी चांगले व उत्तम प्रकारचे असावे जेंव्हा लहान खेळाडूला मार्गदर्शन करतो तेंव्हा त्याचे पूर्ण लक्ष मार्गदर्शकावर असते. ज्या प्रमाणे मार्गदर्शक कृती करतात त्याच प्रमाणे लहान मुले कृती करतात.

निष्कर्ष— उपरोक्त वर्णनात शारिरीक शिक्षणाचे व्यवस्थापनात वेगवेगळ्या घटकांवर चर्चा केलेली असून असा निष्कर्ष येईल की, या क्षेत्रातील व्यवस्थापन योग्यप्रमाणे करण्याकरीता तंत्रशुध्द ज्ञान असलेल्या प्रशिक्षित व मार्गदर्शकाची गरज भासते म्हणून मार्गदर्शकाला आजच्या जगात चाललेली स्पर्धापाहून स्वतःला त्यासाठी व्यवस्थित रितिने तयारी करावी लागेल.

संदर्भ ग्रंथ सूची—

१) क्रिडा प्रशिक्षण व मार्गदर्शन : डॉ.वर्मा एच.जी. निपुन प्रकाशन, नविदिल्ली २०१२.

२) शारिरीक शिक्षणाचा इतिहास : प्रा.जे.पी. शेळके.

३) क्रिडा मानसशास्त्र: प्रा.आलेगावकर.

शेतकरी आंदोलनाची व्याप्ती व विपर्यास

प्रा. डॉ. अस्मिता मिलीद प्रधान

सहयोगी प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभागप्रमुख कर्मवीर हिरे महाविद्यालय, गारगोटी ता. भुदरगड, जि. कोल्हापूर
chandrabhaga79@gmail.com

घोषवारा :

भारत हा कृषीप्रधान देश आहे. शेती हा भारताच्या अर्थव्यवस्था मूळ आधार आहे. एन. डी. ए. सरकारने बनवलेल्या शेतकरी विरोधी तीन काळ्या कायद्यांविरुद्धात सध्या देशभरात शेतकरी एकजूटीने विरोध करत आहेत. ही आनंददायक घटना आहे. सरकारच्या वतीने शेतकऱ्यांमध्ये भ्रम पसरविला जात आहे. शेतकऱ्यांचे उत्पन्न दुप्पट होईल, असे सांगितले जात आहे. सर्व शेतकरी या कायद्यांविरुद्धात रस्त्यावर उतरला आहे. ही खरेतर स्वागताई घटना आहे. कारण आजपर्यंत शेतकऱ्यांना त्यांच्या हक्क व अधिकाराची जाणीव नव्हती. ती जाणीव करून देण्याचे काम अलीकडच्या स्थापन झालेल्या संघटनांनी केले आहे. त्यामुळे कदाचित भारतीय शेतकरी म्हणजे शेतकऱ्यांमध्ये काम करणाऱ्या सर्व किसान संघटना एकत्रित येउन त्यांनी आखील भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिती स्थापन केली आहे. ;।ऽऽैऽऽऽ या समितीच्या माध्यमातून सर्व शेतकरी रस्त्यावर उतरला आहे. खासकरून पंजाब व हरियाणामधील शेतकऱ्यांची एकजूट आणि त्यांचा लढा अतुकरणीय आहे.

प्रस्तावना :

भारतातील ८० टक्के लोक प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्षरित्या शेती व्यवसायामध्ये काम करीत असतात. देशातील कारखान्यांना शेतीतून निर्माण होणाऱ्या वस्तू कच्चा माल म्हणून पुरविल्या जातात. निसर्गवादी अर्थशास्त्रज्ञ शेती हा एकच व्यवसाय उत्पादक स्वरूपाचा मानतात. इतर व्यवसायात मुळ वस्तूचा अकार, प्रकार बदलण्याची प्रक्रिया होते म्हणजेच अनेक व्यवसायाची सुरवात शेतीपासून होते हे मान्य करावे लागेल. ज्या देशातील बहुसंख्य लोक या व्यवसायात गुंतलेले असतात. अशा शेतीप्रधान सर्व राष्ट्रातील सर्व व्यावसायिक रचनेमध्ये शेती हा व्यवसाय बरोबर केंद्रस्थानी असतो. दुर्दैवाने हा मुलभूत व्यवसाय म्हणून

आपल्याकडे केला जात नाही. पेशा म्हणून केला जातो. (In India agriculture is a way of the life and not a bussiness) त्यामुळे शेतीकडे पाहण्याचा शासनाचा दुष्टीकोण बदलावा. शासनाने शेतीला उदयोगाचा दर्जा द्यावा. कि जेणेकरून शेतीचे अनेक प्रश्न मार्गी लागतील. संपुर्ण देश कोरोना व्हायरससारख्या महामारीच्या संकटाचा सामना करत असताना याचवेळी केंद्रसरकाच्यावतीने १४ सप्टेंबर २०२० संसदेच्या मान्सून सत्रापूर्वी पहिल्या तीन दिवसात अत्यंत वादग्रस्त आणि शेतकरी विरोधी कापेरिटधार्जीण बिल संसदेत सादर केले. तसेच ९ जून २०२० ला केंद्रसरकाच्यावतीने तीन अध्यादेश काढण्यात आले.

अ.न.	कायदा	प्रमुख हेतू
१	शेतकरी (अधिकार व संरक्षण) करार किंमत हमी व शेतीसेवा कायदा	वंपनीबरोबर करार करता यावा व किंमत हमीसाठी
२	शेतकरी, शेतमाल, व्यापार व विक्री (उत्तेजन व सुविधा) कायदा सन २०२०	शेत व्यापार व विक्री करता यावी यासाठी
३	आवशक वस्तू (दुरुस्ती) कायदा सन २०२०	शेतमाल साठवून ठेवणे सोपे व्हावे यासाठी

शेतकऱ्यांच्या जीवनमरणाचा विषय झालेल्या या कृषीविधेयकाने केंद्र सरकारला घेरले आहे. या आंदोलनाचे वैशिष्ट्य म्हणजे (गडू) उत्पादक शेतकरी (पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश) मोठ्या संख्येने या आंदोलनात सहभागी झाले आहेत. पक्षीय राजकारणापासून दूर असलेले हे देशातील सर्वात मोठे आंदोलन आहे. करो या मरो या तत्वाने सुरु

झालेले हे आंदोलन आता मोठ्या निकरावर आलेले आहे. यामागची सरकारची भूमिका आपल्याला विचारात घ्यावी लागेल.

०१. शेती लहान तुकड्या-तुकड्यात विभागली गेल्याने सलग होत नाही.
०२. शेतकऱ्याला शेती करताना प्रत्येक टप्प्यावर असणारा धोका कमी किंवा नाहीसा व्हावा.

०३. लहरी हवामानाला शेतकऱ्याला तोंड देता यावे.
०४. किती पिकेल व काय भावाने विकेल या चिंतेतून शेतकऱ्याला सोडवेल.
०५. किती खर्चाने आणि किती पिकणार या धोवयातून येणारी शेतकऱ्याची निराशा टाळण्यासाठी.
०६. माफक खर्चात जास्त उत्पन्न मिळावे.
०७. शेतीमध्ये मोठ्या उदयोजकांनी भांडवल गुंतवावे.
०८. दर्जेदार पीक तयार करून परदेशी विकता यावे.
०९. शेतकऱ्याला जादा आर्थिक कायदा मिळावा.
१०. शेतीचे उत्पन्न वाढावे.
११. कोरोनाच्या संकटाशी शेतकऱ्याला सामना करता यावा.
१२. शेतीमधून देशाची आर्थिक स्थिती वाढावी.
१३. शेतकऱ्यांना त्यांच्या पिकांची योग्य किंमत मिळावी
१४. थकविक्रीचा व्यवहार.

संशोधनाची उद्दीष्टे :

1. शेतकरी आंदोलन पाश्चिमात्य अर्थशास्त्राचा अभ्यास करणे.
2. शेतकऱ्यांविरुद्धी कायद्याचा अभ्यास करणे.
3. कायदा करण्यामागे सरकारच्या भूमिकेचा अभ्यास करणे.
4. शेतकरीविरुद्धी कायद्याचे दुष्परिणाम अभ्यासणे.
5. आंतरराष्ट्रीय बाजारात किंमतीच्या चढउतारामुळे होणा-या आयातीचा कमीत-कमी परिणाम देशातील शेतीवर होईल अशी सुव्यवस्थीत यंत्रणा राबवणे.

संशोधन पध्दती :

हा शोधनिबंध पूर्णपणे दुय्यम साधनसामग्रीवर आधारित असून या शोधनिबंधासाठी संदर्भग्रंथ, विविध वर्तमानपत्रातील बातम्या व लेख, नियतकालिकातील लेख, व माहिती तसेच इंटरनेटवरील उपलब्ध माहितीचा आधार घेण्यात आला आहे.

करार शेतीचा कायदा :

आपली शेती कराराने दुसऱ्याने करण्याचा, आपले येणारे पीक आधीच विकता येणारा, आपल्या येणाऱ्या पिकाची किंमत हंगामाआधीच ठरवण्याचा कायदा याला करार शेतीचा कायदा किंवा कंत्राटी शेती कायदा म्हणतात. यामध्ये शेतकरी/शेतमालक/मालधनी तर दुसरी पार्टी मोठी कंपनी/शेतमालाचा धंदा करणारे/ठोक व्यापारी/शेतमाल परदेशात विकणारे व्यापारी यांच्यात करार होईल. यात शेतमाल शेत विकता येईल. पीक येण्याआधी किंमत ठरवात येईल किंवा पीक येण्याआधीसुद्धा पीक विकता येईल. आपसात

करार मान्य झाल्यास आगाउ मोबदला मिळेल. यामध्ये

१. शेतकरी स्वतःचे शेत स्वतः कसेल मजूर लावले तर त्याचा तो लावेल.
२. पीक तयार होउन हाती येईपर्यंत त्याचा मालक शेतकरी असेल. माल देउन ठरलेली किंमत तो रोख अथवा चेकने घेईल. माल कुठून उचलायचा
३. दोघामध्ये करार करताना दा आधी लेखी ठरेल. दरात तफावत होत असेल तर किमान हमीभाव/गॅरंटी प्राईज आधी ठरवून लिहावी लागेल. त्यातून ज्यादा किती देणार हे पण आधी लिहावे लागेल. जास्त वांगला माल तयार झाला तर सर्वात जास्त किंमत किती देणार हे आधी लिहावे लागेल.
४. कराराने शेती करण्याचे बंधन किंवा सवती नाही.
५. विमा कंपनीला देखील करारात सामील करून घेता येईल.
६. करार मुदतीआधी संपल्यास बंद करता येतो.

माल साठविण्यावर मर्यादा :

युध्दजन्य परिस्थिती, पूर, दुष्काळ, खराब हवामान, साथीचे रोग, पिकावरील साथीचे रोग, कीड, औषधांचा दुष्परिणाम, शेतकरी किंवा कंपनी यांच्या आवाक्याबाहेरील बाबींनी करार मोडीत करता येतो. आमची शेती करणे आता आमच्यावर अवलंबून आहे. ७/१७ वर्षांचे करार वाढत जातील. मजूर कंपनीचे, बियाणे-खते कंपनीची व शेती तुमची यात तुम्ही शेतात जाण्याचा प्रश्नच येत नाही. सलग एकत्र शेतीत तुमचे वावर कोणते? हे कळणार नाही. ७/१२ तुमचा ठराविक उत्पन्न मिळत राहिल हळूहळू शेती विक्री होते असा आजवत्या अनुभव आहे. दर्जा, प्रत, गुणवत्ता या कारणावरून दर बदलेल, मालही घेतला जात नाही मग करार मोडीत काढला पाहीले. व्यापारी माल घेतात. पळून जातात. पैसे वसूल होत नाहीत. प्रांत कलेक्टरकडे दाद मिळत नाही, मग जबाबदार कोण?

शेती हा संपूर्णपणे राज्य सरकारच्या अखत्यारीतला विषय आहे. शेतीविषयक कायदे करण्याचा पहिला अधिकार राज्यांचा आहे. राज्यांच्या मागणीवरून केंद्रसरकार असा कायदा करू शकते. राज्यांनी अशी मागणी केलेली नाही. आपल्या देशात कॉन्ट्रॅक्ट (शेती करार शेती) काही नवी गोष्ट नाही. आदर्श एपीएमसी (मंडी) कायदा २००३ मध्ये कॉन्ट्रॅक्ट फॉर्मगला परवानगी दिली आहे. दलवाई समितीच्या रिपोर्टनुसार (खंड ४) करारशेती कशी करावी याबाबत १४ राज्यांनी

आपले नियम बनविले आहेत. पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक आणि छत्तीसगड मध्ये फक्त १७ कंपन्या ज्या सर्वत्या सर्व मोठमोठ्या कार्पोरेट कंपन्या-बहुराष्ट्रीय कंपन्या आहेत. हवामानाच्या बदलांनी, अतिवृष्टी, दुष्काळ किंवा अन्य प्रकारच्या नैसर्गिक संकटामुळे पीक आले नाही. गुणवत्ता खालावली किंवा उत्पादन कमी झाले अशा परिस्थितीत शेतकऱ्याला बरबाद व्हावे लागेल. यामुळे शेतकरी कर्जबाजारी होतो. छोट्या, मध्यम शेतकऱ्यांसमोर अनेकदा आपली जमीन विकण्याशिवाय पर्याय रहात नाही. अशावेळी कंपनी जमीन खरेदी करण्यासाठी शेतकऱ्यासमोर किंमतीचे लालच उभे करतो त्याला शेतकरी नाही म्हणू शकत नाही. अशी लालच मोठी आकर्षक असते. परंतु त्याचा परिणाम पुढे भूमिहीन शेतमजुरात त्याचे रूपांतर होते.

शेतकरी-शेतमालाचा व्यापार व विक्री कायदा २०२० :

या कायद्याअंतर्गत बाजार समितीच्या नियमात बदल करणे बाजार समितीबाहेरील शेतीमाल खरेदीविक्रीला प्रोत्साहन देणे व्यापारी बाजारसमितीच्या बाहेरही शेतीमाल खरेदी करतील. त्याचा व्यापार करतील. त्याच्यावर कोणत्याही प्रकारचा कर लावला जाणार नाही. यामुळे केवळ बाजारसमितीची व्यवस्था ढासळेल. कोणत्याही प्रकारची चर्चा मसलत न करता, राज्यांना न विचारता, भारताच्या घटनेतील संघ रचनेच्या व्यवस्थेच्या विरुद्ध जाणे योग्य होईल का ? कारण शेतकऱ्यांची खरी मागणी शेतमालाला स्वामीनाथन आयोगाच्या शिफारशीप्रमाणे सी २ अधिक ५० ३ किमान हमीभाव मिळावा. सरकारच्या वतीने आधारभूत किंमत जाहीर होते. ती आयोगाच्या शिफारशीप्रमाणे होत नाही. तरीही या किंमतीने शेतमाल खरेदी झाला तर त्यातुनही शेतकऱ्यांना दिलासा मिळू शकेल.पण सरकारला असे वाटते की, शेतकरी आपला शेतमाल आपल्या पसंतीनुसार कुठेही चांगल्या भावाने विकू शकतील. खरंतर ही शेतकऱ्यांची थट्टा आहे. असे वाटते कारण देशात कुठेही जाउन माल विकणे हे काम बडे व्यापारीच करणार. शेतकऱ्यांना स्वातंत्र्य दिले पण त्याची कुवत देशात कुठेही माल नेउन विकण्याची अथवा आपला माल परदेशात विकण्याची कुवत नाही. शेतमालाचा बाजार हा देशातील सर्वात मोठा बाजार आहे. या कायद्याद्वारे व्यापाऱ्यांना खुली सुट दिली आहे. व्यापाऱ्यांना स्वातंत्र्य दिले आहे. या बाजाराचे मनमानी शोषण करण्याचे स्वातंत्र्य व्यापाऱ्यांना आहे. मोठे मोठे व्यापारी दुसरे-तिसरे

कोणी नसून मोठमोठी कार्पोरेट घराणी आहेत. हा कायदा शेतकऱ्यांना किफायतशीर किंमत मिळवायची असेल. आपला माल बाजार समित्यांबाहेर विकवा लागेल. या कायद्याचा दुराव्यानेसुध्दा असे वाटत नाही याचा फायदा शेतकऱ्यांना, ग्राहकांना होईल. हा कायदा शेतकरीविरोधी आणि जनविरोधी आहे.

आवश्यक वस्तु (दुरुस्ती) कायदा २०२० :

आवश्यक वस्तु कायदा १९७७ चा त्यामध्ये २०२० ला दुरुस्ती केली आहे. स्पर्धात्मकता शेतीक्षेत्रात वाटेल त्या उद्देशाने या कायद्यात दुरुस्ती केली आहे. ग्राहकांच्या हिताला बाधा न पोहोचता नियंत्रण व्यवस्था उदार बनविली आहे. आवश्यक वस्तु कायदा १९७७ च्या सुचीन नउ वस्तु होत्या.

१. अन्नधान्य, डाळी, तेलबिया, खाद्यतेल, बटाटा, कांदे.
२. ऑर्गेनिक खते
३. सुती धागा
४. पेट्रोल व पेट्रोलियम उत्पादन
५. सूत
६. बियाणे, फळभाजी यांचे बियाणे, ज्यूस बियाणे, कापसाचे बियाणे
७. औषधे
८. फेसमास्क
९. सॅनिटायझर

२०२० मध्ये कोरोना काळात फेसमास्क आणि सॅनिटायझरचा समावेश केला आहे. ३०जून २०२० मध्ये या दोन्ही वस्तु आवश्यक वस्तुच्या यादीमधून वगळण्यात आल्या आहेत. या कायद्यातून अन्नधान्य, डाळी, कांदे, बटाटे, तेलबिया, खाद्यपदार्थ आवश्यक वस्तु कायद्यातून मुक्त केल्या. या वस्तुंची साठवणूक करण्याची मर्यादा काढून टाकण्यात आली. कुणालाही कितीही वस्तुंचा साठा करता येईल. या कायद्यामुळे खाद्यवस्तुसंबंधी आवश्यक वस्तु कायदा संपष्टात आला आहे याचे गंभीर परिणाम होतील.

व्यापाऱ्यांना मोकळे मैदान मिळाले आहे आतापर्यंत या कायद्यामार्फत आवश्यक वस्तु कायद्याअंतर्गत सुचीतील खाद्यवस्तु, अन्नधान्य, तेल, तेलबिया, डाळी, कांदे बटाटे या वस्तु आता आवश्यक वस्तु कायद्याने वगळल्याने याचा साठा आत व्यापारी करू शकतात. व कोणत्याही दराने विकू शकतात. सरकारचे त्यावर नियंत्रण आता राहिले नाही. या वस्तुंच्या किंमतीतील चढउतार आता व्यापाऱ्यांच्या मर्जीवर रहाणार आहेत.

राज्यात जमा होणाऱ्या कराला जागृद्ध मोठे नुकसान सोसावे लागेल. उदा. बाजार कर व ग्रामीण विकास फंडाच्या नावावर गहू, भात, बासमती आणि कापूस यांच्या बाजारातील विक्रीवर पंजाबला प्रत्येकवर्षी ३७००/३६०० करोड रुपयांचा कर मिळतो (३ टक्के बाजार कर आणि ३ टक्के ग्रामीण विकास फंड) खरीपाच्या व रब्बीच्या हंगामात हा कर शेतकऱ्यांवर नाहीतर खरेदी करणाऱ्यांवर लावला जातो. १९९७/२० च्या खरीप व रब्बी पिकांच्या विक्रीतून पंजाब सरकारला ३६४२ कोटी रुपये कर जमा झाला. हा पैसा पंजाब सरकारला जातो. ७०००० किलोमीटर ग्रामीण संपर्क रस्ते आणि गावातील रस्ते बांधणीसाठी हे पैसे खर्च होतात.

शेतकऱ्यांच्या आंदोलनाची कोंडी सरकारला फोडता येत नाही. ते घडपणे हाताळता येत नाही. नेहमीप्रमाणे आंदोलकांना देशाविरोधी ठरवून बदनामही करता येत नव्हतं आणि शेती कायदयातून माघार घेणंही कणखरपणाला बट्टा लावणारं. दिल्लीतील हिंसक घटनावादी कारवाई आणि शेतकऱ्यांच्या मागण्यांवर मार्ग काढण्यासाठीच्या वाटाघाटी या स्वतंत्रपणे हाताळायच्या बाबी आहेत. त्यात गल्लत शहानपणाची नाही.

शेतकऱ्यांच्या आंदोलनावर काही ना काही लेबल चिटकवून त्याची धार कमी करायचा उद्योग सुरुवातीपासून सुरु आहे. आंदोलनात प्रामुख्याने पंजाब व हरियाणातील शेतकरी आहेत. त्यातही पंजाबातील शीख शेतकऱ्यांचा सहभाग अधिक आहे. खरं तर ज्या शेतकऱ्यांच्या भल्यासाठी म्हणून सरकारनं तीन शेती विषयक कायदे आणले ते कायदेच नकोत. सरकार म्हणतो हे शांतपणे समजून घेण्याची गरज आहे. या शेतकऱ्यांची विरोधक दिशाभूल करत आहेत. सरकारने नेहमी प्रमाणे आंदोलन संपवण्याचा मार्ग अवलंबला जातो. तो पंजाबच्या शेतकऱ्यांच्या निर्धारपुढे कोलमडला. या आंदोलनात शेतकऱ्यांनी कोणत्याही राजकीय पक्षाला व्यासपीठ दिले नाही. हे महत्वाचे

सारांश :

हे तिन्ही कायदे शेतकऱ्यांवर अन्याय करणारे आहेत. याला देशभरातून मोठ्या प्रमाणावर विरोध केला जात आहे. आज पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, गुजरात मधला शेतकरी आज गेली ६ महिने रस्त्यावर उतरला आहे. त्याचे उग्र अशा स्वरूपाचे आंदोलन सुरु झाले आहे. याला देशभरातून पाठींबा मिळत आहे. त्यामुळे शासनाने हे कायदे शेतकरीविरोधी असल्याने परत घ्यावेत. अशी मागणी केली जात आहे.

उपाययोजना :

1. शेतकऱ्यांच्या प्रदीर्घ काळ चाललेले आंदोलन हे केंद्रसरकार पुढचं आव्हान बनलं आहे. त्यामुळे या सरकारने नरमाईची भूमिका घेउन शेतकऱ्यांच्या मागण्या मान्य कराव्या.
2. शेतकऱ्यांचा सन्मान ठेवण्यासाठी सरकारने शेतीविषयक तिन्ही कायदे रद्द केल्यामुळे समान शेतीबांधवांचा सन्मान होईल.
3. शेतकरी हिताला बाधा पोहचेल असे कायदे भविष्यात केले जावू नयेत.

संदर्भ सूची :

१. काकासाहेब कुराडे व प्रा. आप्पासाहेब पवार - शेतकरी कांतीच्या दिशा - नवसाहित्य प्रकाशन-अतिवरडकर प्रिंटींग प्रेस, बेळगाव, प्रथम आवृत्ती- १९८१ पृष्ठ १३, १६
२. मासीक-संपादक-रावसाहेब पुजारी-मासीक शेती प्रगती.
३. नामदेव गावडे-शेतकरी विरोधी तीन काळे कायदे-महाराष्ट्र राज्य किसान सभा, मुंबई, ३१४, राजभवन, एम.बी.पी.रोड, मुंबई-४००००४
४. दैनिक सकाळ-सप्तसंग-रविवार ३१ जानेवारी २०२१ पान नं. -१
५. अर्थसंवाद - मराठी अर्थशास्त्र परिषद - ऑक्टोबर -डिसेंबर २०१४ खंड - ३८ अंक ४ पृष्ठ २३८
६. दैनिक सकाळ : सप्तसंग रविवार २८ नोव्हेंबर २०२१ पान नं. १

कोव्हीड १९ महामारीचा उच्च शिक्षणांवर पडलेला प्रभाव

डॉ प्रशांत म. पुराणिक

साहायक प्राध्यापक वाणिज्य विभाग) गुरुकुल कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, नांदा
ई मेल आय डी — prashantpuranik1970@gmail.com

गोषवारा:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे विविध क्षेत्र मोठ्या प्रमाणात प्रभावित झाले आहे. जसे विपणन क्षेत्र, सेवा क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र इत्यादी. या क्षेत्रांप्रमाणेच कोव्हीड १९ महामारीमुळे शैक्षणिक क्षेत्रसुद्धा प्रभावित झाले आहे. येत्या काही दशकांमध्ये उच्च शिक्षण देणा—या महाविद्यालयांची वाढतच जाणारी संख्या बघता, येत्या काही वर्षात ही संख्या आणखी वाढू शकते, यात शंका नाही. परंतु केवळ आर्थिक पाठबळ असून चालणार नाही तर गुणवत्तापूर्ण शिक्षण, विद्यार्थिकेंद्री आधुनिक तंत्रज्ञान आणि रोजगाराभिमुख अभ्यासक्रम इत्यादी बाबींवर येत्या काही वर्षात सरकार लक्ष्य केंद्रीत करू शकते. नवीन शैक्षणिक धोरणाची सुरुवात आणि कोव्हीड १९ महामारीमुळे शैक्षणिक प्रणालीत आलेली पारदर्शकता भारतातील उच्च शिक्षणांत क्रांतीकारी बदल आणण्यास मदत करतील असा विश्वास वाटतो. ज्यांच्याकडे विपुल आणि मुबलग प्रमाणांत अद्ययावत शैक्षणिक तंत्रज्ञानाची सोय आहे त्यांचा प्रश्न नाही. परंतु प्रश्न हा आहे की ज्या शैक्षणिक संस्थांमध्ये विद्यार्थ्यांचा प्रवेश कमी असल्यामुळे अद्ययावत तंत्रप्रणालीचा अभाव आहे, आर्थिक सुबत्ता नसल्यामुळे आणि कायम विनाअनुदानित महाविद्यालये असल्यामुळे कायम प्राध्यापकवर्गाचा अभाव आहे आणि विविध रोजगाराभिमुख अभ्यासक्रमांचा अभाव आहे, अशा महाविद्यालयांना या शैक्षणिक स्पर्धेत टिकून राहण्यासाठी मोठी अग्निदिव्य पार करावे लागणार आहे, हे निश्चित आहे. परंतु अशा पारदर्शक शैक्षणिक प्रणालींमुळे आधुनिक तंत्रज्ञानाला चालना मिळून विविध क्षेत्रांतील नवनवीन अभ्यासक्रम उदयाला येणार आहेत यात शंका नाही. यु.जी.सी.देखील अशा प्रकारचे कमी कालावधीतील नवीन अभ्यासक्रम सुरू करण्यासाठी विविध विद्यापिठांना आदेश देऊ शकते. परीणामतः कालावधी कमी असल्यामुळे विद्यार्थ्यांना एकाच विषयांतर्गत विविध अभ्यासक्रम शिकता येतील. कोव्हीड १९ महामारीमुळे उच्च शिक्षण क्षेत्रांत नवीन क्रांती घडून येईल हे मात्र निष्चीत.

बीजशब्द: दिपस्तंभ, सुसंस्कृत, ब्रेनड्रेन, मितव्यय

प्रस्तावना:

भारतीय उच्च शिक्षणप्रणालीला ऐतिहासिक वारसा लाभलेला आहे. प्राचीन काळी वेदांचे शिक्षण चांगल्या विद्यापीठांतून किंवा आश्रमांतून प्राप्त व्हावे यासाठी विद्यार्थ्यांना लहानपणीच गुरूंकडे पाठवले जात असे. वेदांच्या अध्ययनासोबतच विद्यार्थी शारीरीकरीत्या आणि मानसिकरीत्या परीपक्व व्हावा या उद्देशाने गुरूदेखील सर्व विद्यार्थ्यांना शिकवीत असे. प्राचीन विद्यापीठांपैकी मुख्य विद्यापीठांमध्ये तक्षशिला, नालंदा, बनारस, विक्रमशीला, मीथीला, तेलहारा, वल्लभी इत्यादींचा समावेश करावा लागेल. बदलत्या काळानुसार आजदेखील वरीलपैकी काही विद्यापीठांमध्ये संस्कृत, पाली, प्राकृत या विविध भाषाव्यतीरीक्त अद्ययावत उच्च शिक्षणाचे अभ्यासक्रम शिकवले जातात. अनेक विद्यापीठांमध्ये

विविध प्रात्यक्षिके विद्यार्थ्यांना दिले जातात. ही प्रात्यक्षिके देण्यामागचा मुख्य उद्देश विद्यार्थ्यांना प्रायोगिक ज्ञान व विषयांत अंतर्भूत असलेले विविध पैलू आत्मसात होणे हा असतो. हजारो वर्षांपासून एखाद्या दीपस्तंभाप्रमाणे उभ्या असलेल्या या विद्यापिठांनी आपले अस्तीत्व व गुणवत्ता कायम राखली आहे. आपले अस्तीत्व व गुणवत्ता कायम राखण्यासाठी आज प्रत्येक विद्यापीठ प्रयत्नशील आहे. कोव्हीड १९ महामारीमुळे झालेल्या ऑनलाईन शिक्षणपद्धतीमुळे विद्यार्थी आणि शिक्षक यांची गुणवत्ता तपासणे शक्य होणार आहे. गुणवत्तेशिवाय पर्याय नाही या उक्तीप्रमाणे उच्च शिक्षणाचे अध्यापन करणा—या अध्यापकांना आता ते स्वतः शिकवत असलेल्या विषयांच्या सखोल ज्ञानाव्यतिरिक्त विविध विषयांचे ज्ञान असणे गरजेचे आहे.

याव्यतिरिक्त विद्यार्थ्यांशी सरळ संदेशवहन करणे, गतिमंद विद्यार्थ्यांना ओळखुन त्यांच्याकडून अधिक अध्ययन करून घेणे, विद्यार्थ्यांच्या शैक्षणिक समस्या सोडविणे, त्यांच्या अभ्यासक्रमाविषयक समस्या सोडविणे, विद्यार्थ्यांशी हितगुज करून त्यांच्या व्यक्तिमत्त्वाचा विकास करणे इत्यादी कारणांमुळे कोव्हीड १९ महामारी ही उच्च शिक्षणाला मिळालेले वरदानच आहे असे म्हणावे लागेल.

संशोधनाचा उद्देश:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षण प्रणालीवर पडलेल्या सकारात्मक प्रभावांचा अभ्यास करणे.

संशोधनाची मर्यादा:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षण प्रणालीला अनेक आव्हानांचा सामना करावा लागणार आहे. ही आव्हाने शाधण्यापर्यंत हा शोधनिबंध मर्यादित राहणार आहे.

गृहितकृत्य:

“कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षणांत क्रांतीकारी बदल झाले आहेत.”

संशोधन पद्धती:

संशोधन विषयक महत्वाची माहिती गोळा करण्यासाठी द्वितीय स्रोतांचा उपयोग केला गेला.

कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षणावर पडलेला परिणाम:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षणावर मोठा परिणाम पडला आहे. पुढील मुद्द्यांच्या आधारे हा परिणाम स्पष्ट करता येईल.

आधुनिक तंत्रज्ञानात वाढ:

कोव्हीड १९ मुळे ऑनलाईन शिक्षणप्रणालीत वाढ झाली आहे. आय. आय. एम., आय. आय. टी. सारख्या नावाजलेल्या शिक्षणसंस्थांमधून शिक्षण देणा—या संस्थांमध्ये फार पुर्वीपासूनच विविध संगणकीय साधनांद्वारे शिक्षण देणे सुरू आहे. परंतु अनेक शैक्षणिक संस्थांमध्ये अद्यापदेखील परंपरागत शिक्षणाच्या साधनांद्वारे शिक्षण देणे सुरू होते. कोव्हीड १९ मुळे विद्यार्थ्यांना शिकवण्यासाठी ऑनलाईन शिक्षण हा एकमेव मार्ग उपलब्ध

आहे. येत्या काही वर्षात येणा—या तिस—या संभाव्य लाटेमुळे अनेक उच्चशिक्षण देणा—या संस्थांनी संगणकीय साधनांद्वारे शिक्षण देणे सुरू केले आहे. सदर महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षणांत संगणकीय क्रांती घडुन आली आहे.

रितेश सिंह हे Eckovation या सोशल लर्निंग प्लॅटफॉर्मचे संस्थापक आहेत. त्यांनी शिक्षणासाठी उन्नयन हे ॲप तयार केल्यामुळे रितेश यांना Prime Ministers Innovation Award मिळाला आहे.

नविन अभ्यासक्रमात वाढ:

भारतातील शैक्षणिक क्षेत्रातील ६ वा आयोग म्हणजे कोठारी आयोग होय. या आयोगाने केलेल्या शिफारशीनुसार अद्यापदेखील भारतात नियमित शैक्षणिक धोरणांत १०+२+३ हा अभ्यासक्रम राबविला जात आहे. आज बदललेल्या गरजेनुसार कमी कालावधीसाठी अत्यंत महत्वाचे अभ्यासक्रम सुरू करण्यासाठी युजीसीने नविन निर्देश भारतातील सर्व विद्यापीठातील कुलगुरूंना दिले आहेत.

विद्यापीठ अनुदान आयोगाचे सचिव यांनी दिनांक १० डिसेंबर २०२१ रोजी भारतातील सर्वच विद्यापीठांना ‘the study webs of Active Learning for Young Aspiring Minds’ (SWAYAM) या प्लॅटफॉर्म अंतर्गत विविध संगणकीय अभ्यासक्रम राबविण्यासाठी ताबडतोब कृती करण्यास सांगितली आहे. परिणामतः भारतातील विविध क्षेत्रांतील परंपरागत अभ्यासक्रमांव्यतिरिक्त नवनविन अभ्यासक्रम आणण्यासाठी प्रत्येक विद्यापीठ तयारी करीत आहेत. या नविन अभ्यासक्रमांमुळे शैक्षणिक क्षेत्रांत मोठी क्रांती निर्माण व्हायला आता फारसा वेळ लागणार नाही हे मात्र निश्चित.

दर्जात्मक शिक्षणांत वाढ:

प्रत्येक देशांचा आर्थिक विकास हा ज्याप्रमाणे विविध क्षेत्रांवर आणि देशांतील आर्थिक, सामाजिक आणि राजकिय घडामोडींवर अवलंबून असतो, त्याचप्रमाणे हा आर्थिक विकास देशांतील दर्जात्मक शिक्षणप्रणालीवर अवलंबून असतो. ही शिक्षणप्रणाली जीतकी चांगली तीतकी त्या देशांतील लोकसंख्या ही शिक्षित व सुसंस्कृत असते. परीणामतः अशा देशांतील शिक्षित

लोकांची टक्केवारी एकुण लोकसंख्येच्या प्रमाणांत जेवढी जास्त तीतका देश अधिक प्रगती करतो. नवीन शैक्षणिक धोरणांमुळे शिक्षणाचा दर्जा निश्चितच वाढणार असून त्यामुळे नवीन बुद्धीवादी नवयुवकांची पीढी भारताला लाभणार आहे. नवीन तंत्रज्ञान, नवीन अभ्यासक्रम आणि नवीन शैक्षणिक धोरण यांमुळे दर्जात्मक शिक्षणांत वाढ होणार आहे. नवीन पीढीला भारतातच योग्य रोजगार प्राप्त करून दिल्यास भारतात नवयुगप्रवर्तक जन्माला येऊ शकतात. असे झाल्यास भारताच्या दोलायमान अर्थव्यवस्थेला लगाम घातला जाईल आणि भारतात विकासाचे वारे वाहायला निश्चितच सुरुवात होईल.

नवीन संस्थांसाठी आव्हाने:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे उच्च शिक्षणांत मोठा प्रभाव पडला आहे. येत्या काही दशकांतली वाढतच जाणारी महाविद्यालयांची अफाट संख्या बघता आर्थिकदृष्ट्या प्रबळ नसलेल्या, शैक्षणिक दर्जा नसलेल्या, संगणीकीकृत शिक्षण न देणा—या, विद्यार्थीसंख्या कमी असलेल्या, रोजगाराभिमुख अभ्यासक्रमांवर आणि विद्यार्थीकेंद्रीत शिक्षणाला महत्त्व न देणा—या संस्थांना यापुढे मोठ्या आव्हानांचा सामना करावा लागू शकतो. कारण ही आव्हाने सर्वच उच्च शैक्षणिक संस्था पेलू शकतीलच असे नाही.

प्रत्येक विद्यापीठाला आता त्यांच्या अभ्यासक्रमाद्वारे, अभ्यासक्रम शिकविण्याच्या स्रोतांद्वारे आणि सतत नाविण्याच्या शोध घेण्यासाठी विकसित केलेल्या व्युत्पन्नद्वारे नवीन आव्हानांना समर्थपणे सामोरे जाणे ही एक अपरिहार्य बाब म्हणून समोर आली आहे.

ब्रेनड्रेन समस्येला लगाम:

येत्या काही दशकांत भारतातील ब्रेनड्रेन समस्या दिवसेंदिवस वाढतच आहे. भारतातील तरुण वर्ग उच्च शिक्षण घेतल्यानंतर वीदेशांतील उच्चपदस्थ आणि लठ्ठ वेतनाची नोकरी करणे पसंत करतात. त्यांच्या शिक्षणांचा भारताच्या अर्थव्यवस्थेच्या विकासासाठी काहीही फायदा होत नाही. कोव्हीड १९ महामारीमुळे अनेक देशांनी विदेशांतून येणा—या नागरिकांना त्यांच्या

देशांत प्रवेश देणे बंद केल्यामुळे ब्रेनड्रेन समस्येला लगाम बसू शकतो. दुसरी अत्यंत महत्वाची बाब म्हणजे भारतातील बुद्धीजीवी तरुणांना भारतातच चांगल्या वेतनाची नोकरी मिळाल्यामुळे त्यांच्या कुशल आणि कुशाग्र बुद्धीमत्तेचा उपयोग भारतातील विविध क्षेत्रांच्या विकासासाठी होऊ शकतो. भारतीय अर्थव्यवस्थेसाठी कोव्हीड १९ ही केवळ महामारी ठरली नसून सकारात्मक बाबींचा हा एक स्रोत आहे.

मुक्त शिक्षणाकडे कल:

मागील सवा वर्षांपासून संपुर्ण जग कोव्हीड १९ महामारीच्या दृष्टचक्रातून जात असले तरी सदर महामारीमुळे अनेक सकारात्मक बाबी आणि आव्हाने समोर आली आहेत. यातीलच एक सकारात्मक बाब म्हणजे मुक्त शिक्षणाकडे विद्यार्थ्यांचा कल वाढला आहे. नियमित विद्यापीठांतील अभ्यासक्रमांव्यतिरीक्त मुक्त शिक्षण घेण्यास विद्यार्थी अधिक प्राथमिकता देत आहेत. भविष्यात मुक्त शिक्षण देणा—या संस्था आणि विद्यापीठांची संख्या वाढण्याचे संकेत कोव्हीड १९ मुळे प्राप्त झाले आहेत.

विद्यार्थीकेंद्रीत शिक्षण:

शिक्षक आणि विद्यार्थी हे दोन घटक भारतीय अर्थव्यवस्थेचे अत्यंत महत्वाचे आधारस्तंभ आहेत. नवीनतम शैक्षणिक धोरणांमुळे विद्यार्थ्यांचा मानसिक, बौद्धिक आणि शारीरिक विकास साधण्यावर या शैक्षणिक धोरणांनी अधिक भर दिला आहे. लेखी आणि तोंडी अध्ययन आणि अध्यापन करून शिक्षणप्रणालीत आमुलाग्र बदल करण्यासाठी राज्य सरकार आणि केंद्र सरकार प्रयत्नशील आहे. याव्यतिरीक्त उच्च शिक्षणांत आणखी नवनवीन प्रयोग करून भारतातील उच्च शिक्षणप्रणालीत पारदर्शकता आणली जावी हा यामागचा मुख्य हेतु आहे.

रोजगाराभिमुख शिक्षण:

नवीन विद्यापीठ अधिनियम (सुधारीत) २०१६ मध्ये लागू झाला. आधुनिक शैक्षणिक साधनांद्वारे शिक्षण, विद्यार्थीकेंद्रीत शिक्षण आणि आवडीप्रमाणे रोजगाराभिमुख अभ्यासक्रम निवडण्याची मुभा या नवीन अधिनियमाच्या काही सकारात्मक बाबी आहेत. कोव्हीड १९ मुळे यांत आणखी भर पडली आहे. रोजगार मिळण्याच्या संधीत

आता वाढ होणार आहे. कोणता अभ्यासक्रम निवडल्यास लवकर रोजगार प्राप्त होऊ शकतो याचा निट विचार करूनच विद्यार्थ्यांना अभ्यासक्रम निवडावा लागणार आहे. कोव्हीड १९ महामारीमुळे आधुनिक तंत्रज्ञानावर आधारीत विभिन्न रोजगारभिमुख अभ्यासक्रम येत्या काही वर्षात प्रत्येक विद्यापीठात येण्याची दाट शक्यता आहे.

दुतर्फी संदेशवहन:

शिक्षणप्रणाली तेव्हाच प्रगत मानल्या जाते जेव्हा विद्यार्थी आणि शिक्षक यांच्यात दुतर्फी संदेशवहन अस्तीत्वात असते. याउलट ज्या शिक्षणप्रणालीत विद्यार्थी आणि शिक्षक यांच्यात एकतर्फी संदेशवहन अस्तीत्वात असते अशा शिक्षणप्रणालीत संदेशवहनात अडथळे निर्माण झालेले असतात. या प्रकारच्या शिक्षणप्रणालीत संदेशवहनाचा प्रवाह केवळ शिक्षकाकडून विद्यार्थ्यांकडे होत असतो. दुस-या शब्दात सांगायचे झाल्यास यात बोलणारा फक्त एक असतो आणि ऐकणारे अनेक असतात. मात्र ऐकणा-यांना त्यांचे मत मांडण्याचा, बोलणा-यांना प्रश्न विचारण्याचा किंवा एखादा मुद्दा न समजल्यास तो पुन्हा समजण्यासाठी संदेशवहन करण्याचा अधिकार नसतो. यामुळे त्यांच्या संदेशवहनात मोठी तफावत निर्माण होते. मात्र कोव्हीड १९ महामारीमुळे सर्व शिक्षण संगणकीय प्रणालीद्वारे दिले जात असल्यामुळे शिक्षक आणि विद्यार्थी यांच्यात मुक्त संदेशवहन होत आहे. विद्यार्थी आणि शिक्षक यांच्यातील संदेशवहनाची दरी कमी होत आहे. याचा सकारात्मक परिणाम विद्यार्थ्यांच्या संदेशवहन कौशल्यावर होत असून त्यांना न समजलेला अभ्यासक्रमाचा भाग विद्यार्थ्यांना पुन्हा शिकवण्यात येत आहे. परीणामतः प्रत्येक विषयाचे सखोल ज्ञान प्राप्त करण्यासाठी विद्यार्थी तत्पर असतात.

जलद निकाल:

कोव्हीड १९ महामारीमुळे पुर्वीपासून चालत आलेली परंपरागत व दिर्घकाळ चालणा-या परीक्षेच्या प्रारूपात मोठे बदल झाले आहेत. अनेक विद्यापीठांनी परीक्षा या जुन्या प्रारूपामध्ये न घेता आधुनिक प्रारूपामध्ये घेत आहेत. गोंडवाना विद्यापीठ, गडचिरोली (महाराष्ट्र) सारख्या अती दुर्गम

भागातील विद्यापीठांनीदेखील येत्या काही वर्षात बहुपर्यायी परीक्षेचा पर्याय निवडला आहे. यासाठी सदर विद्यापीठाने आभासी स्रोताची मदत घेतली आहे. त्याचप्रमाणे या विद्यापीठांच्या परीक्षांचा निकालदेखील जलद लागला आहे.

मीतव्ययता:

मागील दोन वर्षांपासून बदललेल्या परीक्षेच्या बहुपर्यायी प्रारूपामुळे विद्यार्थ्यांच्या उत्तरपत्रिका तपासण्याच्या खर्चात बचत होत आहे. त्यामुळे स्टेशनरी, उत्तरपत्रिका बांधणी आणि लेखी परिक्षेसाठी लागणा-या एकुण सर्वच खर्चात मोठी बचत होत आहे. महाविद्यालयांना आणि विद्यापीठांना नविन अभ्यासक्रम, नविन शैक्षणिक धोरणे आणि वित्तीय धोरणे ठरविण्यासाठी ही बचत प्रेरक ठरणार आहे.

गृहितकृत्याची पडताळणी करणे हा या शोधनिबंधातील अंतीम टप्पा आहे.

गृहितकृत्याची पडताळणी:

सदर शोधनिबंधासाठी खालील गृहितकृत्य घेतले होते.

“कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील उच्च शिक्षणात क्रांतीकारी बदल झाले आहेत.”

कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतातील विभिन्न क्षेत्रांवर सकारात्मक व नकारात्मक असे मिश्र परीणाम पडले आहेत. या विभिन्न क्षेत्रांपैकीच एक अत्यंत महत्वाचे क्षेत्र म्हणजे भारतातील उच्च शिक्षणाचे क्षेत्र होय. सुरूवातीच्या काही दशकांपर्यंत भारतातील उच्च शिक्षण पद्धती ही परंपरागत होती. परंतु बदलत्या काळानुसार त्यात अनेक बदल करावे लागले. कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारताच्या उच्च शिक्षणाच्या क्षेत्रांत मोठे बदल झाले आहेत. यात प्रामुख्याने नवीन शैक्षणिक तंत्रज्ञानाचा उपयोग, नविन तंत्रज्ञानात वाढ, दर्जात्मक शिक्षणात वाढ, नविन संस्थांच्या आव्हानात वाढ, ब्रेनड्रेन समस्येवर योग्य नियंत्रण, मुक्त शिक्षणाकडे विद्यार्थ्यांचा वाढता कल, विद्यार्थीकेंद्रीत शिक्षण, रोजगाराभिमुख शिक्षणाचे वाढते महत्त्व, शिक्षक आणि विद्यार्थी यांच्यात होणारे मुक्त संदेशवहन, विद्यापीठांनी परीक्षेचा लावलेला जलद निकाल, आभासी परीक्षांमुळे विद्यापीठांनी जलद लावलेला निकाल हे

विविध मुद्दे कोव्हीड १९ महामारीमुळे भारतीय उच्च शिक्षण पद्धतीत झालेले सकारात्मक बदल दर्शवितात.

वरील माहितीवरून सदर शोधनिबंधासाठी घेतलेले गृहितकृत्य हे सत्य आहे हे सिद्ध होते.

निष्कर्ष:

भारतातील उच्च शिक्षणाला ऐतिहासिक परंपरा लाभली असून फार पुर्वीपासून भारतात उच्च शिक्षण देणा-या जागतिक दर्जाची अनेक विद्यापीठे अस्तित्वात होती. यात प्रामुख्याने नालंदा, तक्षशिला, वलभी, विक्रमशिला, सोमापुरा इत्यादी विद्यापीठांचा समावेश होतो. आधुनिक विद्यापीठांमध्ये आय. आय. एम., आय. आय. टी. यांसारखे उच्चशिक्षण देणारे विविध विद्यापीठे भारतात अस्तित्वात आहेत. आधुनिक तंत्रज्ञान, उत्कृष्ट अध्ययन व अध्यापन प्रणाली आणि अध्ययनात होत असलेले विविध प्रयोग यांमुळे भारतातील उच्च शिक्षणांचा दर्जा सर्वोत्कृष्ट झाला आहे. येत्या दोन वर्षांपुर्वी आलेल्या कोव्हीड १९ महामारीमुळे हा दर्जा अधिकच सुधारला आहे. त्यामुळे गरज आहे त्याला शाश्वत ठेवण्याची. थांबला तो संपला या उक्तीप्रमाणे भारतातील उच्च शिक्षणाचा दर्जा कायम ठेवतानाच तो सतत वाढत कसा जाईल यासाठी विविध स्तरांवरून नविन संशोधन होणे गरजेचे आहे. यासाठी विद्यापीठ अनुदान आयोगाने उच्च शिक्षण संशोधन समिती भारतातील प्रत्येक विद्यापीठात गठीत करावी. सदर समितीने एका विशिष्ट कालावधीत आपला अहवाल विद्यापीठ अनुदान आयोगाकडे द्यावा. या समितीने दिलेल्या शिफारशींवरून विद्यापीठ अनुदान आयोगाने योग्य वाटल्यास संभाव्य बदल करावेत. असे केल्यास प्रत्येक विद्यापीठाच्या उच्च शिक्षण प्रणालीमध्ये पारदर्शकता येईल आणि कोव्हीड १९ महामारीमुळे उच्च शिक्षणांची नवनवीन अभ्यासक्रमाची दालने उघडण्यास मदत होईल.

संदर्भ सुची

१. दुबे प्रि.(२०२०), कोरोना शिक्षण तुमच्या मुलांच्या शिक्षण पद्धतीत होणार हे मोठे बदल,बीबीसीन्युजमराठी.

www.bbcnewsmarathi.com Date of Last Accessed: 21st January, 2022

2. https://www.ugc.ac.in>ugc_notice

3. <https://www.ugc.ac.in>2567591-MOOCs-Letter.pdf-UGC>

4. www.smilefoundationindia.org>can-covid-19-have-a-positive-impact-on-education/ac

5. www.frontiersin.org>the-transformation-of-higher-education-after-the-covid-disruption-emerging-challenges-in-an-online-learning-scenario(Name of the authors: Victor J. Garcia-Morales, Aurora Garrido-Moreno and Rodrigo Martin-Rojas) (11 February 2021)

रेणु साहित्य और संस्कृति

असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ० इन्दु कुमारी

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग भू. ना. म. विश्वविद्यालय लालनगर मधेपुरा, बिहार पिन

E - Mail - sahityakardr.indukumari@gmail.com

वस्तुतः नगर - केंद्रित उपन्यासों में लोकसंपृक्ति का स्पर्श नाम मात्र का होता है इनमें लोक जीवन की रंगत, बिम्ब, प्रतीक और शब्दावली उसी रूप में आते हैं जिस रूप में किसी ड्राइंगरूम में कोई शो - पीस इसके अतिरिक्त अपनी सांस्कृतिक विरासत से गहरे जुड़े आँचलिक उपन्यासों में नए मूल्यों और मूल्यों के और फिर मूल्य संक्रमण के जो विस्तृत चित्र मिले हैं, वे नगरबोधी उपन्यासों में कम हैं क्योंकि औद्योगीकरण आदि के फलस्वरूप नगरजीवन इस तरह के द्वंद्व को बहुत पहले झेल चुका है। इसलिए आँचलिक उपन्यास उन्हीं उपन्यासों को माना जाना चाहिए जो मुख्यतः ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित हैं और जिनमें उस ग्रामीण अंचल या पिछड़े अंचल का वर्णन इतने विस्तार से हुआ हो कि वह "अंचल" ही नायक लगे। लेकिन किसी आँचलिक उपन्यास का केवल अंचल विशेष पर आधारित होना पर्याप्त नहीं है। जिस कथित अनुभव की प्रामाणिकता का शोर नई कहानी के दौरान मचा था वह नई कहानी के समानांतर चल रही आंचलिक उपन्यास धारा में अपने सीधे और स्पष्ट अर्थ में रचना - प्रक्रिया का अनिवार्य अंग बनी हुई थी। आँचलिक उपन्यास "सेकेण्ड हैण्ड" अनुभवों के सहारे नहीं लिखा जा सकता आँचलिक उपन्यास मात्र सूचनाओं और रपटों के आधार पर नहीं लिखा जा सकता। सम्भवतः इसीलिए डॉ० रामदरश मिश्र ने लिखा है - आँचलिक उपन्यासों से अनुभवहीन सामान्य या विराट के पीछे न दोड़कर अनुभव की सीमा में आने वाले अंचल विशेष को उपन्यास का क्षेत्र बताया है। लेकिन केवल अनुभवशीलता और यथार्थ का हबहू चित्रण ही किसी उपन्यास को आँचलिक बनाने में समर्थ नहीं है। मधुकर गंगाधर आँचलिक उपन्यासों की रचना में ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक धारणा की उपस्थिति आवश्यक मानते हैं आँचलिक उपन्यासों का आदर्श केवल किसी क्षेत्र की चित्रगत वास्तविकता प्रस्तुत करना नहीं बल्कि सम्पूर्ण जीवन प्रणाली की ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक धारणा प्रस्तुत करना है। ऐसी स्थिति में आंचलिक उपन्यासों का मूल्यबोध जहाँ एक ओर रचनाकारों द्वारा स्वतः अर्जित है, वहीं दूसरी ओर ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के तहत समझने से पुष्ट और प्रौढ़ हुआ है।

कुछ आलोचकों को "आँचलिकता" में विचारधारा का विरोध दिखायी दिया है और लगा है कि रोमांटिक सुधारवाद और अतीत मोह से आच्छादित रही है। वस्तुतः राही मासूम रजा आदि के उपन्यासों में अतीत के जिस सम्मोहन और रोमांटिक इल्यूजन को खोजा गया है, वह आग्रही दृष्टि का परिणाम है। रेणु - रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह आदि की कृतियाँ पढ़कर सामंतवाद के श्वेतश्याम दोनों पक्षों का परिचय तो मिलता है, लेकिन सामन्त वर्ग के साथ सहानुभूति जैसा भाव पैदा नहीं होता बल्कि प्रबुद्ध पाठक को यह अनुभव होता है कि शोषण और अन्याय पर टिके सामन्त वर्ग का नाश अवश्यम्भावी था। इस बात का अध्ययन बहुत दिलचस्प और विचारोत्तेजक होगा कि "अतीत" से आंचलिक कथाकारों का जुड़ाव नास्टेल्लिक दृष्टि है या अंचल को अतीत और वर्तमान की समग्रता में देखने का परिणाम "आधा गाँव के सन्दर्भ में डॉ० आदित्य प्रसाद त्रिपाठी ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि नास्टेल्लिजा में रचनात्मक शक्ति भी होती है।

नास्टेल्लिक मोह गाँव की मूल प्रेरणा और प्राण है देखना होगा कि यह मोह कहीं परम्परागत मूल्यों के प्रति मोह का दूसरा नाम तो नहीं है यहाँ एक तथ्य गौरतलब है कि अधिकतर आँचलिक उपन्यासकार प्रगतिशील विचारधारा से सम्बन्धित हैं। नागार्जुन, रांगेय राघव, राही मासूम रजा रामदरश मिश्र आदि निर्विवाद रूप से वावमंडी हैं। यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र रेणु, हिमांशु जोशी, शिवप्रसाद सिंह आदि भी समाजवादी या प्रगतिवादी विचारधारा के उपन्यासकार हैं विवेकीराय, श्रीलाल शुक्ल आदि की दृष्टि मानवतावादी है। ऐसी स्थिति में आँचलिक उपन्यासों को रोमानी दृष्टि से प्रेरित और संचालित मानना निश्चय ही त्रुटिपूर्ण है। होफमन के साक्ष्य से डॉ० आदर्श सक्सेना ने "आँचलिकता" को विश्वव्यापी स्वच्छतावादी आन्दोलन से जोड़ा है लेकिन डॉ० सक्सेना ने इस विधा को आंचलिक याथार्थवाद और समाजवादी यथार्थवाद - दो श्रेणियों में विभक्त कर "आँचलिकता के रोमानी होने का स्वयं

खण्डन कर दिया है डॉ० इंदुप्रकाश पाण्डेय का मंतव्य भी आँचलिक उपन्यासों के दृष्टिविहीन या रोमानी होने के विरोध में पड़ता है- " इन लेखकों का प्रमुख उद्देश्य पाठकों का मनोरंजन नहीं , बल्कि पीड़ित समाज के प्रति सहानुभूति प्रकट करना और उन्हें अपनी स्थितियों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उभारना है । कुछ अपवादों को छोड़ दें तो आंचलिकता अधिसंख्यक ग्रामीण जीवन को समग्रता में देखने - परखने और जड़ता , अज्ञान , यथास्थिति के विरुद्ध हस्तक्षेप की प्रेरणा देने वाली जनधर्मी प्रवृत्ति है । जिस दलित चेतना की आज चर्चा है , वह हिन्दी आँचलिक उपन्यासों में प्रखर रूप में मौजूद है । आंचलिकता वस्तुतः ' लघुता की ओर दृष्टिगत ' का ही बदला हुआ रूप है इसमें चुने हुए और सीमित देश काल को उपन्यासकार बहुत गहरी दृष्टि से देखता है । व्यापक सरोकारों से जोड़कर सर्जनात्मक अभिव्यक्ति करता है ।

हिन्दी में आंचलिक उपन्यासों के प्रवर्तन को लेकर पर्याप्त मतभेद है । कुछ लोगों ने मन्नन द्विवेदी गजपुरी को पहला आँचलिक उपन्यासकार माना है उनकी कृति " रामलाल " (1914) की पृष्ठ भूमि ग्रामीण है । केवल ग्रामीण पृष्ठभूमि ही " आँचलिकता " की पहचान नहीं हो सकती । नहीं तो प्रेमचन्द से बड़ा आंचलिक उपन्यासकार कोई नहीं है । प्रेमचन्द का गाँव सामान्य गाँव है और प्रेमचन्द की दृष्टि जिस व्यापक राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य पर थी , उसका वह गाँव एक अनिवार्य अंग है । ' आँचलिकता में ग्रामीण परिवेश को विशेष रूप से अध्ययन का विषय बनाया है । चिकित्सा जगत में जो फर्क " फिजीशियन " और " स्पेशलिस्ट " का है , वही अन्तर प्रेमचन्द और आँचलिक उपन्यासकारों में है । आँचलिक कृतियों में ग्रामीणों यथार्थ का चित्रण अपेक्षाकृत सघन और गम्भीर है । विशेषतः लोक संस्कृति के आत्मीय रंगों से • आँचलिक उपन्यास समृद्ध और आकर्षक बन गए हैं । प्रेमचन्द युग में प्रेमचन्द के अतिरिक्त अनेक उपन्यासकार भी ग्रामीण जीवन की धूल फाँकते नजर आते हैं । शायद यह महात्मा गाँधी का प्रभाव था कि उपन्यासकार हिन्दुस्तान की आत्मा को पहचानने में जुट गए थे । प्रसाद और निराला जैसे स्वच्छंदतावादी कवि भी तब " गाँव " पर लिखने लगे थे । प्रेमचन्द युग में ही शिवपूजन सहाय कृत ' देहाती दुनिया का प्रकाशन हुआ था और इसे भी पहले आँचलिक उपन्यास का दावेदार माना गया है ।

जिस तरह के उपन्यासों को बाद में आँचलिक करार दिया गया उसका एक प्रारम्भिक रूप " महाकाल " (श्रीकृष्ण मिश्र) में मिलता है , जिसका प्रकाशन सन् 1930 ई० में हुआ था । इसमें एक अंचल विशेष - दार्जिलिंग के आसपास के पार्वत्य प्रान्त के निवासियों के जीवन संघर्ष का ब्यान हुआ है । लेकिन " आँचलिकता " के उद्भव को स्वतंत्रता के पूर्व खींचना अतिवाद ही है । यह जनतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप पिछड़े अंचलों में सुधार , प्रगति और परिवर्तन की आकांक्षा से भी प्रेषित पोषित प्रवृत्ति हैं ।

हिन्दी कथालोचन में यह विसंगति देखने को मिलती है कि जो लोग नागार्जुन के " बलचनमा " (1952) को आँचलिक उपन्यास मानते हैं , वे ही ' मैला आँचल (1954) को हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास करार देते हैं । यदि बलचनमा आँचलिक उपन्यास है तो फिर आंचलिक उपन्यास के प्रवर्तन का श्रेय उसे ही मिलना चाहिए । आँचलिकता की प्रवृत्ति रेणु से पहले आकार ले चुकी थी । उसे कोई नाम दिया जाना शेष था रेणु ने उसके नामकरण का ऐतिहासिक दायित्व तो निभाया ही आँचलिक उपन्यास का एक नया आकर्षक प्रारूप भी प्रस्तुत किया । बाद के आँचलिक उपन्यासों पर रेणु के इस प्रारूप का अधिक गहरा प्रभाव दिखायी देता है ।

रेणु के आँचलिकता के जिस रूप को ग्रहण किया है उसमें परिवेश के रेशे रेशे के जानने , पहचानने और अपने ढंग से बयान करने का प्रमुखता दी गयी है । डॉ० बच्चन सिंह जैसे समीक्षकों का विचार है कि केवल रेणु के उपन्यास ही आंचलिक माने जा सकते हैं यह एक आत्यंतिक विचार है । नागार्जुन , भैरव प्रसाद गुप्त , हिमांशु श्रीवास्तव के उपन्यासों को प्रारूप " रेणु " के उपन्यासों से अलग है लेकिन उनमें भी अंचल विशेष का सामाजिक - आर्थिक - सांस्कृतिक जीवन विविधता के साथ उभरा है । " आँचलिकता " से आशय , अनुभव की सीमा में आने वाले अंचल विशेष के पात्रों , समस्याओं , संस्कृति , प्रगति आदि को अंकित करने की प्रवृत्ति है यह प्रवृत्ति जितनी रेणु के मैला आँचल ' और ' परती परिकथा में हैं लगभग उतनी ही " बलचनमा " और सती मैया का चौरा आदि उपन्यासों में विद्यमान है अन्तर इनमें सरचनामत हैं । रेणु राही मासूम रजा रामदरश मिश्र , विवेकीराय , चन्द्र और शिवप्रसाद सिंह के उपन्यासों में एक ऊपरी किस्म का बिखराव दिखाई देता है लेकिन इस बिखराव की आन्तरिक संश्लिष्टता को ठीक से न देख पाने के कारण कतिपय

समीक्षकों को यह लगता है कि वस्तु विन्यास और कथा - सौष्ठव की दृष्टि से ये कमजोर रचनाएँ हैं। डॉ० महेंद्र भटनागर ने 'मैला आँचल को सामूहिक प्रभाव में बहुत कमजोर माना है यदि ऐसी बात होगी तो रेणु की कृतियों की इतनी चर्चा न होती न " आधा गाँव " जल टूटता हुआ " अलग - अलग वैतणी " " राग दरबारी " सोनामाटी ' हजार घोड़ों का सवार आदि कृतियाँ प्रशंसित और चर्चित होती बल्कि वास्तविकता यह है कि स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास की अधिकतर उपलब्धियाँ आँचलिक कही जाने वाली कृतियों से जुड़ी हैं और उनमें से ज्यादातर कथित बिखराव वाले शिल्प में रचित हैं। आँचलिकता की अवधारणा को रेणु के " मैला आँचल " में सर्वाधिक सटीक अभिव्यक्ति मिली है। आँचलिक उपन्यास के लिए यह आवश्यक माना गया है कि इसमें अचल विशेष की स्थिति " नायक " की सी होती है। उस क्षेत्र का एक सम्पूर्ण चित्र उकेरने का प्रयास इस तरह के उपन्यासों में है। इस दृष्टि से देखें तो मैला आँचल में प्रशान्त कालीचरन और बावनदास आकर्षक चरित्र होते हुए भी नायक मेरीगंज नाम का पिछड़ा हुआ गाँव है। उपन्यास को पढ़ते समय इस पिछड़े अंचल के जीवन का बहुत यथार्थ रूप सामने आता है। अंचल अंधविश्वास प्रियता, पारस्परिक कलह, मानसिक पिछड़ापन और शोषक शक्तियों की जकड़न को इस उपन्यास में बहुत प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया गया है " यह निवासियों की निर्धनता प्रस्तुति कभी - कभी अति यथार्थवादी हदों को छूती है, लेकिन जैसा कि अज्ञेय ने मार्क किया है, रेणु के उपन्यासों में अखण्ड मानवीय विश्वास की चिनगारी " सुलगती रही है। उनकी मानवीय दृष्टि के संयोग से उनके वर्णन का बिखराव और अतिवाद संयमित हो गया है। ' मैला आँचल में उनकी प्रतिबद्धता किसी राजनीतिक मतवाद के प्रति नहीं है। कांग्रेस की भ्रष्टता के साथ - साथ वे वामपंथी शक्तियों को भी अवसरवादी और जनविरोधी रूप में अंकित करते हैं। उनके दलविहीन मानवतावाद को कुछ आलोचकों ने सन्देह की दृष्टि से देखा है और कटु भर्त्सना की है। कृष्ण प्रताप के शब्दों में ' दलविहीन मानवतावाद के इन आँचलिक दावेदारों ने पतनशील प्रवृत्तियों को नया भाववादी जामा ही नहीं पहनाया बल्कि मूर्खता और जहालत का आदर्शिकरण और उदात्तीकरण भी किया। " डॉ० विजय मोहन सिंह का विचार है " मैला आँचल में रेणु के पास कोई जीवन - दृष्टि नहीं है। यह सत्य है कि मैला आँचल में तहसीलदार का हृदय परिवर्तन बहुत

अस्वाभाविक है, कई जगह रोमानी दृष्टिकोण भी झलक जाता है, लेकिन रेणु की दृष्टिगत प्रगतिशीलता में सन्देह नहीं किया जा सकता। वे न तो यथास्थिति को समर्थन करते हैं और न सामन्तवाद के हिमायती हैं। वे उभरते पुँजीवाद की विकृतियों को भी बखबी पहचानते हैं। इसीलिए प्रायः हरेक छोटे - बड़े लीडर के साथ एक मारवाड़ी घूमता है। उपन्यास में बावनदास की हत्या वस्तुतः गाँधीवादी मूल्यों की मौत का प्रतीक बनकर सामने आयी है। इन मूल्यों की मृत्यु स्वयं कथित गाँधीवादियों द्वारा हुई है। अज्ञात कुलशील प्रशान्त और अभिजात वर्ग की कमली के विवाह में भी रेणु खासे प्रगतिशील दिखायी देते हैं। दरअसल उनकी जीवन दृष्टि में एक किस्म की आदर्शोन्मुखता है, जो कभी - कभी प्रगतिविरोधी लगती है।

" मैला आँचल " में रेणु ने प्रशान्त से कहलवाया है कि मैं प्यार की खेती करूँगा और उनका (चिन्तन परिकथा में) गुलाब की खेती के लिए कृतसंकल्प है। प्यार और गुलाब की खेती के प्रति रेणु के इस आकर्षण को रोमानी माना गया है जबकि ' मैला आँचल ' की भूमिका में रेणु ने पहले ही कह दिया है कि इसमें जीवन के दोनों पक्ष हैं - शूल भी फूल भी यह समझना मूल है कि प्यार या गुलाब की खेती का संकल्प जनविरोधी या प्रगतिविरोधी है, बल्कि यह भी समाजवादी कलासंस्कृति का ही एक जग है। यह शोषक - व्यवस्था द्वारा पैदा की गयी कुरूपताओं और सौन्दर्यविरोधी अवस्थाओं का प्रतिकार है। हेनीरख हाइने ने एक सर्वांगपूर्ण व्यवस्था की चर्चा करते हुए लिखा है कि इसमें हर मनुष्य को खूब सारी रोटी ही नहीं खूब सारे गुलाब भी उपलब्ध होंगे आनेर जीस ने इस कथन की व्याख्या करते हुए लिखा कि समाजवादी व्यवस्था में मनुष्य का सर्वांगीण विकास *atras* सारभुता S ww 3 अभीष्ट है। समाजवादी समाज में मनुष्य और उसके मूल्य समाजवादी विकास का सन्दर्भ में देखे तो ' मैला साधान नहीं, अपितु सर्वोच्च लक्ष्य होते हैं। इस कथन आँचल का बोध भी मनुष्य की सर्वांगीण प्रगति का विरोधी नहीं है और समाजवादी व्यवस्था के सर्वोच्च लक्ष्यों को आत्मसात् किये हुए है। तहसीलदार और चिन्तन को परिवर्तन के अभियान में महत्व देना रेणु के रचनाकर्म मूल्यबोध दोनों का एक बड़ा अन्तर्विरोध है, लेकिन केवल इसी चूक के चलते उनकी कृतियों को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता है। ' मैला आँचल में यह चेतना स्पष्ट है कि समाज में दो ही वर्ग हैं अमीर और गरीब

रेणु अपनी पक्षधरता गरीब भूमिहीनों और मजूरों के पक्ष में बराबर दर्ज कराते हैं। ' मैला आँचल के भावुक अन्त की अपेक्षा कर सकें तो बोध को लेकर " मैला आँचल में आश्वस्त करने की शक्ति है।

ग्रामीण जीवन के बिखराव और अस्त - व्यस्तता को रेणु ने मैला आँचल में अभिनव शिल्प के साथ प्रस्तुत किया है उन्होंने पहले से प्रचलित दृश्यात्मक परिदृश्यात्मक कथाप्रविधियों को और सूक्ष्म , ध्वन्यात्मक और नाटकीय बनाया है। इसमें रेणु का किस्सागो पात्रों की चेतना से संक्षिप्त है और इससे कथा में नया स्वाद आ गया है। पाठक कथाकार की चेतना से होता हुआ किसी पात्र की चेतना में प्रवेश करता है और कथा प्रसंग का बिल्कुल नया स्पेक्ट्रम या वर्ण विम्य आँखों के सामने उभर आता है चाहे भाषा की ताजगी के लिहाज से देखें या उसकी सर्जनात्मक शक्ति की दृष्टि से विचार कर या अवलोकन बिन्दु के निर्वाहन की दृष्टि से परीक्षा करें। ' मैला आँचल ' एक विशिष्ट उपन्यास है। भाषा का स्थानीय रूप कुछ पाठकों के लिए दुरुह साबित होता है लेकिन कृति के दूसरे पाठ में यह असुविधा बहुत कुछ कम हो जाती है रेणु ने अपने अंचल विशेष की बहुत गंजिन बुनावट की है और इस बुनावट में लोक संस्कृति के नैसर्गिक रंग बहुत चटख और आकर्षक हैं। बाद में स्वयं रेणु भी परवर्ती कृतियों में लोक संस्कृति की बुनावट के नयेपन को सुरक्षित नहीं रख पाये उनका वर्णन - शिल्प दीर्घतपा आदि में एक रूढ़ि बनकर रह गया है। लेकिन मैला आँचल अंचल विशेष के लोक जीवन की उसकी भाषा , लोकमानस , कलारूचि , रूदियों , लोकगीतों - लोक कथाओं और सभी सांस्कृतिक सुरों के साथ रागबोध के स्तर पर सोद्देश्य प्रस्तुति के विलक्षण गुण से सम्पन्न है , इसमें कोई सन्देह नहीं। राही मासूम रजा ने " आधा गाँव " को गंगौली में गुजरने वाले समय की कहानी कहा है। अधिकतर आँचलिक उपन्यास अपने अंचल विशेष में

गुजरते समय के साक्ष्य हैं। ' मैला आँचल में यह समय की प्रामाणिकता " बहुत सघन रूप में है। इसमें अपने युग के तीव्र गति से हो रहे मूल्य संक्रमण को उसकी सम्पूर्ण जटिलता में कलात्मक अभिव्यक्ति दी गयी है। प्रामाणिक युग बोध , जनधर्मी मूल्य - बोध , अपने समय से प्राप्त यातना को भुगतते चरित्र आंचलिक स्वरों से गूंथी गयी भाषा , नये ढंग का कथा विन्यास ये सब मिलकर ' मैला आँचल को स्थायी महत्व प्रदान करते हैं।

सन्दर्भ

1. सुबह होने पर पृ०-09
2. औपन्यासिक समीक्षा और समीक्षाएँ , पृ०- 74
3. हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों जीवन सत्य पृ ० 63
4. हिन्दी के आँचलिक उपन्यासों जीवन सत्य पृ०- 12
5. हिन्दी उपन्यास कोश , खण्ड 2. सं०- गोपाल राय , पृ ० 100
6. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास , पृ०- 387
7. हिन्दी कथा साहित्य विविध आयाम , पृ०-47
8. फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आँचल , डॉ ० गोपाल राय , पृ०-3
9. वर्तमान साहित्य , जनवरी 1990 पृ०-07
10. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम परिकल्पना पृ०-362
11. कला के वैचारिक और सौन्दर्यात्मक पहलू पृ०- 31
12. फणीश्वरनाथ रेणु और मैला आँचल , पृ०-32

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Email- rbhole1965@gmail.com

Visit-www.jrdrvb.com

Address

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102
